

कक्षा-11

हिन्दी

1-“सड़क सुरक्षा एवं यातायात के नियम” नामक पाठ को सम्मिलित किया गया:-

गद्य

सड़क सुरक्षा

विश्व स्वास्थ्य संगठन के वर्ष 2008 के आँकड़ों के अनुसार अस्पतालों में भर्ती होने वाले और उनसे होने वाली मृत्यु का प्रमुख कारण सड़क दुर्घटना है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार वर्ष 2011 में विश्व में सबसे अधिक 1,36,834 सड़क दुर्घटनाएँ भारत में हुईं, जिसमें दुपहिया वाहन 22 प्रतिशत, ट्रक 19 प्रतिशत, कार 10 प्रतिशत, टैम्पो/वैन 06 प्रतिशत, बस 09 प्रतिशत, पैदल चलने वाले 09 प्रतिशत तथा अन्य 10 प्रतिशत हैं।

सड़क दुर्घटनाओं को रोकने और सड़क सुरक्षा उपायों के प्रति आम नागरिक को और अधिक जागरूक किये जाने की आवश्यकता है। विकसित देश न केवल सड़क सुरक्षा के प्रति लोगों को जागरूक करते हैं वरन् वाहन सुरक्षा और सड़कों की आधारभूत संरचना पर भी ध्यान देते हैं।

वर्तमान में सड़क दुर्घटना से होने वाली चोट और मृत्यु बहुत सामान्य बात हो गई है। सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय के वर्ष 2001 के आँकड़ों के अनुसार सड़क दुर्घटना में 18 प्रतिशत की वृद्धि हुई, जो वर्ष 2011 में बढ़कर 24 प्रतिशत हो गई है। वर्ष 2001 में प्रति 100 व्यक्तियों पर मरने वालों की संख्या 19.6 थी, जो वर्ष 2011 में बढ़कर प्रति 100 व्यक्तियों पर 28.6 हो गई है।

सड़क दुर्घटनाओं में होने वाली वृद्धि का प्रमुख कारण सड़क सुरक्षा के नियमों की अनदेखी है। गलत दिशा में चलना, तीव्र गति से अथवा नशे का सेवन कर गाड़ी चलाने से होने वाली दुर्घटनाओं के समाचार प्रत्येक दिन सुने जा सकते हैं। सरकार द्वारा सड़क दुर्घटनाओं को कम करने के उद्देश्य से विभिन्न प्रकार के यातायात नियम बनाये गये हैं। यातायात के नियमों के पालन करने जैसे सही गति से वाहन चलाना, सुरक्षा उपायों यथा हेलमेट और सीट बेल्ट का प्रयोग करना एवं सड़कों पर बने यातायात संकेतों के पालन से दुर्घटनाओं में कमी आ सकती है।

वर्तमान में दो पहिया अथवा चार पहिया वाहन चलाते समय मोबाइल अथवा दूसरे इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों के प्रयोग करने पर चालक का ध्यान भंग से होने वाली घटनायें बढ़ी हैं। यातायात के नियमों के पालन करने से यातायात अर्थदण्ड एवं ड्राइविंग लाइसेन्स के निरस्तीकरण से बचा जा सकता है।

वाहन चालन के पूर्व प्रत्येक व्यक्ति को किसी मान्यता प्राप्त चालन स्कूल के प्रशिक्षित प्रशिक्षक से चालन कोर्स करना चाहिए। सार्वजनिक स्थलों पर बिना ड्राइविंग लाइसेन्स के वाहन चलाना अपराध की श्रेणी में आता है और मोटरयान अधिनियम-1988 की धारा 181 के तहत इसके लिए ₹0 500/- का अर्थदण्ड निर्धारित है। वाहन स्वामियों को अपने वाहनों की समय-समय पर जाँच कराते रहना चाहिए ताकि होने वाली दुर्घटना से बचा जा सके।

किसी भी यात्रा पर जाने के पूर्व वाहन स्वामी को प्राथमिक चिकित्सा बाक्स, टूल बाक्स एवं गैसोलीन आदि की जाँच करा लेनी चाहिए।

वाहन स्वामियों की सुरक्षा हेतु कुछ सुरक्षा नियम निम्नवत् दिये गये हैं:-

1. वाहन चालक सड़क पर अपने बांये से चलें और खासकर दूसरी तरफ से आ रहे वाहन को जाने दें।
2. वाहन चालक को गाड़ी मोड़ते समय वाहन गति धीमी रखनी चाहिये।

3. दो पहिया वाहन चालकों को अच्छी गुणवत्ता वाले हेलमेट पहनने चाहिए तथा चार पहिया वाहन चालकों एवं आगे तथा पीछे की सीट पर बैठने वाले व्यक्तियों को सीट बेल्ट अवश्य लगाना चाहिए।
4. वाहन की गति निर्धारित सीमा तक ही रखी जानी चाहिये, विशेष रूप से स्कूल, अस्पताल एवं कालोनी आदि क्षेत्रों में।
5. सभी वाहनों को दूसरे वाहनों से एक निश्चित दूरी बनाकर चलना चाहिए।
6. पैदल यात्रियों को भी सड़क पर चलने के नियम से परिचित होकर चाहिए जैसे क्रासवाक एवं जेब्रा क्रासिंग का उपयोग।
7. वाहन चालक द्वारा यातायात नियमों का उल्लंघन करने जैसे— क्रासिंग पर लाल/पीली बत्ती पार करना एवं बिना संकेत दिये गली बदलना अथवा तीन सवारी के साथ दो पहिया वाहन चलाना धारा 199 के साथ मोटर यान अधिनियम-1988 की धारा 177 के तहत दण्डनीय अपराध है। प्रथम बार अपराध करने पर रू0 100/- एवं दूसरी बार या अनुवर्ती अपराध करने पर दण्ड स्वरूप रू0 300/- की धनराशि निर्धारित है।
8. सार्वजनिक स्थान पर सड़क-सुरक्षा, ध्वनि नियंत्रण और वायु प्रदूषण के विहित मानकों का उल्लंघन करने पर मोटर यान अधिनियम-1988 की धारा 190(2) के तहत प्रथम बार अपराध करने पर रू0 1000/- तथा दूसरी बार या अनुवर्ती अपराध करने पर दण्ड स्वरूप रू0 2,000/- की धनराशि निर्धारित है।

अवयस्क व्यक्ति द्वारा दो पहिया अथवा चार पहिया वाहन चलाना अपराध की श्रेणी में आता है, साथ ही प्रत्येक व्यक्ति को अपने वाहन का बीमा निर्धारित अवधि के अन्तर्गत अवश्य करा लेना चाहिये। बिना बीमा के वाहन चलाना मोटर अधिनियम-1988 की धारा 146 के साथ-साथ धारा 196 के तहत दण्डनीय अपराध है, जिसके लिये दण्ड स्वरूप रू0 1000/- की जुर्माने की राशि निर्धारित है।

सड़क पर चलने वाले पैदल यात्रियों के साथ-साथ दो पहिया एवं चार पहिया वाहन चलाने वाले चालकों द्वारा यातायात के नियमों का सही ढंग से पालन करने एवं सुरक्षा उपायों को अपनाने पर वाहन से होने वाली दुर्घटनाओं पर काफी हद तक अंकुश लगाया जा सकता है।

नोट—इस पाठ में से विवेचनात्मक प्रश्न नहीं पूछे जायेंगे।

संस्कृत दिग्दर्शिका में से पाठ "शास्त्राण्यधीत्यापि-भवन्ति मूर्खाः" के स्थान पर "चरैवेति-चरैवेति" को सम्मिलित किया गया:-

वेदमनूच्याचार्योऽन्तेवासिनमनुशास्ति। सत्यं वद। धर्मं चर। स्वाध्यायान्मा प्रमदः। आचार्याय प्रियं धनमाहृत्य प्रजातन्तुं मा व्यवच्छेत्सीः। सत्यान्न प्रमदितव्यम्। धर्मान्न प्रमदितव्यम्। कुशलान्न प्रमदितव्यम्। भूत्यै न प्रमदितव्यम्। स्वाध्यायप्रवचनाभ्यां न प्रमदितव्यम्।। 1।।

देवपितृकार्याभ्यां न प्रमदितव्यम्। मातृदेवो भव। पितृदेवो भव। आचार्यदेवो भव। अतिथिदेवो भव। यान्यनवद्यानि कर्माणि। तानि सेवितव्यानि। नो इतराणि। यान्यस्माकँ सुचरितानि। तानि त्वयोपास्यानि।। 2।।

नो इतराणि। ये के चास्मच्छ्रेयाँसो ब्राह्मणाः। तेषां त्वयासनेन प्रश्वसितव्यम्। श्रद्धया देयम्। अश्रद्धयाऽदेयम्। श्रिया देयम्। ह्रिया देयम्। भिया देयम्। संविदा देयम्। अथ यदि ते कर्मविचिकित्सा वा वृत्तविचिकित्सा वा स्यात्।। 3।।

ये तत्र ब्राह्मणाः संमर्शिनः। युक्ता आयुक्ताः। अलूक्षा धर्मकामाः स्युः। यथा ते तत्र वर्तेरन्। तथा तत्र वर्तेथाः। अथाभ्याख्यातेषु। ये तत्र ब्राह्मणाः संमर्शिनः। युक्ता आयुक्ताः। अलूक्षा धर्मकामाः स्युः। यथा ते तेषु वर्तेरन्। तथा तेषु वर्तेथाः। एष आदेशः। एष उपदेशः। एषा वेदोपनिषत्। एतदनुशासनम्। एवमुपासितव्यम्। एवमु चैतदुपास्यम्।। 4।।

सामान्य हिन्दी कक्षा-11

गद्य

1-“सड़क सुरक्षा एवं यातायात के नियम” नामक पाठ को सम्मिलित किया गया:-

सड़क सुरक्षा

विश्व स्वास्थ्य संगठन के वर्ष 2008 के आँकड़ों के अनुसार अस्पतालों में भर्ती होने वाले और उनसे होने वाली मृत्यु का प्रमुख कारण सड़क दुर्घटना है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार वर्ष 2011 में विश्व में सबसे अधिक 1,36,834 सड़क दुर्घटनाएँ भारत में हुईं, जिसमें दुपहिया वाहन 22 प्रतिशत, ट्रक 19 प्रतिशत, कार 10 प्रतिशत, टैम्पो/वैन 06 प्रतिशत, बस 09 प्रतिशत, पैदल चलने वाले 09 प्रतिशत तथा अन्य 10 प्रतिशत हैं।

सड़क दुर्घटनाओं को रोकने और सड़क सुरक्षा उपायों के प्रति आम नागरिक को और अधिक जागरूक किये जाने की आवश्यकता है। विकसित देश न केवल सड़क सुरक्षा के प्रति लोगों को जागरूक करते हैं वरन् वाहन सुरक्षा और सड़कों की आधारभूत संरचना पर भी ध्यान देते हैं।

वर्तमान में सड़क दुर्घटना से होने वाली चोट और मृत्यु बहुत सामान्य बात हो गई है। सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय के वर्ष 2001 के आँकड़ों के अनुसार सड़क दुर्घटना में 18 प्रतिशत की वृद्धि हुई, जो वर्ष 2011 में बढ़कर 24 प्रतिशत हो गई है। वर्ष 2001 में प्रति 100 व्यक्तियों पर मरने वालों की संख्या 19.6 थी, जो वर्ष 2011 में बढ़कर प्रति 100 व्यक्तियों पर 28.6 हो गई है।

सड़क दुर्घटनाओं में होने वाली वृद्धि का प्रमुख कारण सड़क सुरक्षा के नियमों की अनदेखी है। गलत दिशा में चलना, तीव्र गति से अथवा नशे का सेवन कर गाड़ी चलाने से होने वाली दुर्घटनाओं के समाचार प्रत्येक दिन सुने जा सकते हैं। सरकार द्वारा सड़क दुर्घटनाओं को कम करने के उद्देश्य से विभिन्न प्रकार के यातायात नियम बनाये गये हैं। यातायात के नियमों के पालन करने जैसे सही गति से वाहन चलाना, सुरक्षा उपायों यथा हेलमेट और सीट बेल्ट का प्रयोग करना एवं सड़कों पर बने यातायात संकेतों के पालन से दुर्घटनाओं में कमी आ सकती है।

वर्तमान में दो पहिया अथवा चार पहिया वाहन चलाते समय मोबाइल अथवा दूसरे इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों के प्रयोग करने पर चालक का ध्यान भंग से होने वाली घटनायें बढ़ी हैं। यातायात के नियमों के पालन करने से यातायात अर्थदण्ड एवं ड्राइविंग लाइसेन्स के निरस्तीकरण से बचा जा सकता है।

वाहन चालन के पूर्व प्रत्येक व्यक्ति को किसी मान्यता प्राप्त चालन स्कूल के प्रशिक्षित प्रशिक्षक से चालन कोर्स करना चाहिए। सार्वजनिक स्थलों पर बिना ड्राइविंग लाइसेन्स के वाहन चलाना अपराध की श्रेणी में आता है और मोटरयान अधिनियम-1988 की धारा 181 के तहत इसके लिए रू0 500/- का अर्थदण्ड निर्धारित है। वाहन स्वामियों को अपने वाहनों की समय-समय पर जाँच कराते रहना चाहिए ताकि होने वाली दुर्घटना से बचा जा सके।

किसी भी यात्रा पर जाने के पूर्व वाहन स्वामी को प्राथमिक चिकित्सा बाक्स, टूल बाक्स एवं गैसोलीन आदि की जाँच करा लेनी चाहिए।

वाहन स्वामियों की सुरक्षा हेतु कुछ सुरक्षा नियम निम्नवत् दिये गये हैं:-

1. वाहन चालक सड़क पर अपने बांये से चलें और खासकर दूसरी तरफ से आ रहे वाहन को जाने दें।
2. वाहन चालक को गाड़ी मोड़ते समय वाहन गति धीमी रखनी चाहिये।
3. दो पहिया वाहन चालकों को अच्छी गुणवत्ता वाले हेलमेट पहनने चाहिए तथा चार पहिया वाहन चालकों एवं आगे तथा पीछे की सीट पर बैठने वाले व्यक्तियों को सीट बेल्ट अवश्य लगाना चाहिए।
4. वाहन की गति निर्धारित सीमा तक ही रखी जानी चाहिये, विशेष रूप से स्कूल, अस्पताल एवं कालोनी आदि क्षेत्रों में।
5. सभी वाहनों को दूसरे वाहनों से एक निश्चित दूरी बनाकर चलना चाहिए।
6. पैदल यात्रियों को भी सड़क पर चलने के नियम से परिचित होकर चाहिए जैसे क्रासवाक एवं जेब्रा क्रासिंग का उपयोग।

7. वाहन चालक द्वारा यातायात नियमों का उल्लंघन करने जैसे— क्रासिंग पर लाल/पीली बत्ती पार करना एवं बिना संकेत दिये गली बदलना अथवा तीन सवारी के साथ दो पहिया वाहन चलाना धारा 199 के साथ मोटर यान अधिनियम-1988 की धारा 177 के तहत दण्डनीय अपराध है। प्रथम बार अपराध करने पर रू० 100/- एवं दूसरी बार या अनुवर्ती अपराध करने पर दण्ड स्वरूप रू० 300/- की धनराशि निर्धारित है।
8. सार्वजनिक स्थान पर सड़क-सुरक्षा, ध्वनि नियंत्रण और वायु प्रदूषण के विहित मानकों का उल्लंघन करने पर मोटर यान अधिनियम-1988 की धारा 190(2) के तहत प्रथम बार अपराध करने पर रू० 1000/- तथा दूसरी बार या अनुवर्ती अपराध करने पर दण्ड स्वरूप रू० 2,000/- की धनराशि निर्धारित है।

अवयस्क व्यक्ति द्वारा दो पहिया अथवा चार पहिया वाहन चलाना अपराध की श्रेणी में आता है, साथ ही प्रत्येक व्यक्ति को अपने वाहन का बीमा निर्धारित अवधि के अन्तर्गत अवश्य करा लेना चाहिये। बिना बीमा के वाहन चलाना मोटर अधिनियम-1988 की धारा 146 के साथ-साथ धारा 196 के तहत दण्डनीय अपराध है, जिसके लिये दण्ड स्वरूप रू० 1000/- की जुर्माने की राशि निर्धारित है।

सड़क पर चलने वाले पैदल यात्रियों के साथ-साथ दो पहिया एवं चार पहिया वाहन चलाने वाले चालकों द्वारा यातायात के नियमों का सही ढंग से पालन करने एवं सुरक्षा उपायों को अपनाने पर वाहन से होने वाली दुर्घटनाओं पर काफी हद तक अंकुश लगाया जा सकता है।

नोट—इस पाठ में से विवेचनात्मक प्रश्न नहीं पूछे जायेंगे।

अंग्रेजी कक्षा-11

Prose

- 1- Road to safety नामक पाठ को Prose के अन्तर्गत सम्मिलित किया गया:-

ROAD TO SAFETY

The present age is the age of speed. Faster speed and quick results are the order of the day. It's good to have a generation that wants to move ahead. But as it is said, a great goal needs a greater self control, losing one's focus in order to reach one's destination quickly, may sometimes, land him in serious trouble. There are various walks of life where we need to train our youngsters to restrain their exuberant energy and lead a more disciplined life. Road safety is also such a concern. When one leaves home we expect him to return safe and sound. It is much disheartening and agonizing that one should suffer on account of a poor road infrastructure or lack of sincerity while on road. Infrastructural development may be the responsibility of the authorities but a common citizen can definitely ensure a safe outing not only for his own self but also for others only if he is aware of not only his rights but also his responsibilities. Let us here focus on certain issues related to Road Traffic Safety to make our roads safe for one and all.

According to World Health Organization (WHO), more than a million people are killed on the roads each year. Inappropriate and excess speed; non use of seat belts and helmets; drunk driving; poorly constructed and insufficiently maintained road infrastructure etc. are some of the reasons for fatalities on road. Road traffic safety refers to the methods and measures for reducing the risk of a person using the road network being killed or seriously injured.

There are mandatory traffic signs and driving regulations that serve to guide, warn and regulate the flow of traffic, including motor vehicles, bicycles, pedestrians and other road users. At times they give advance information about road conditions ahead. Every road user should know the marking and signs on the road and the meaning thereof.

Mandatory road signs indicate what one must do. These are generally with red border. Some of them are blue in colour. Violation of these signs attract heavy fines and punishment. Most importantly, violation of these could lead to major accidents also. (Picture of mandatory signs must be given in a box)

Apart from these, there are Cautionary and Informatory signs also. Cautionary signs are triangular in shape with red border. Though violation of these road signs do not attract any legal action but they are much important as violation of these signs can result in major accidents. (Picture of cautionary signs in a box below)

Informatory signs are meant to provide information on direction, destination, road side facilities etc. to the road user. Following these signs helps a driver in saving time and reaching destination without wandering around. (Picture of cautionary signs in a box)

There are certain traffic rules that we all must follow without fail. Some important rules are-

- One must obtain a valid driving license to drive a vehicle. The applicant for driving license should be 18 years old on the date of application. For vehicles up to 50 CC engine capacity applicant must be 16 years of age and must have the consent of his parents/guardians.
- Helmet must be worn compulsorily by the two wheeler drivers. Pillion riders are also required to wear a helmet.
- In a four wheeler not only the driver but the passenger beside must also wear the safety seat belt.
- Traffic lights and signals must be obeyed by everyone on the road.
- Triple riding on a two wheeler is neither allowed nor is it safe. It must always be avoided.
- Mobile phone is a great distracter. It must not be used while driving and if there is any inevitable call, one should park the vehicle by the side of the road to attend the call.
- Speed limits must be obeyed. In residential areas the ideal speed is 20 Kmph and the limit is 30Kmph.
- As for pedestrians, they must cross the roads on a zebra crossing.
- Cyclists and pedestrians must keep to the left of the road.
- No drug or alcohol must be consumed before or during driving a vehicle.
- One should never fail to make correct signals while taking turns on the road.
- Excessive use of horns, that too near hospitals and schools, is prohibited.

It is the duty of every citizen to follow these rules. By adhering to these we can ensure road traffic safety and help prevent accidents and casualties. Still it is observed that there are some defaulters who sometimes carelessly and sometimes defiantly ignore the safety rules. Such people cause much trouble not only for themselves but for others also. To check such people and avoid mishaps on the road, Motor Vehicle Act, 1988 (MV Act, 1988) is in effect. Following are the punishments for some frequent offences as per MV Act 1988-

- Driving without holding an effective driving license-3months term of imprisonment or Rs. 500 fine or both.
- Driving a vehicle at excessive speed-Rs. 400 for the first offence; Rs. 1000 for the second or subsequent offence.
- Driving by an under aged person-3 months term of imprisonment or Rs. 500 fine or both.
- Driver and pillion rider failing to wear protective head gear (helmet)- Rs. 100 for first offence; Rs. 300 for the second or subsequent offence.
- Driver of a two wheeler or a motor cycle carrying more than one person in addition to himself (triple riding) - Rs. 100 for the first offence; Rs. 300 for the second or subsequent offence.
- Using mobile phones while driving a vehicle - Rs. 100 for the first offence; Rs. 300 for the second or subsequent offence.

- Driver's failure to obey traffic signs - Rs. 100 for the first offence; Rs. 300 for the second or subsequent offence.
- Driver's failure to make prescribed signals on prescribed occasions- Rs. 100 for the first offence, Rs. 300 for second or subsequent offence.
- Driving by a drunken person under influence of drugs/its abetment-6 months term of imprisonment or Rs. 2000 fine for first offence or both. 2 years term of imprisonment or Rs. 3000 fine for second or subsequent offence within three months of previous commission or both.

In the upcoming proposed Motor Vehicle Bill the terms of imprisonment and fines are likely to be hiked.

People getting injured or losing their lives in road accidents is a dismal scene and we all must make our best efforts to avert this. The purpose of road traffic safety rules and regulations is also to create awareness among people as well as to control the defaulters. Still there is always a possibility of a mishap on roads. So in case there is an accident, without panicking, we must try our best to help the victims. In this regard a very important fact is that in many cases people do not come forward or hesitate to take the injured to hospital because they are afraid of the complicated legal formalities. A survey reveals that repeated questioning by the police, multiple summons from courts of law and even prosecution for unintentional accidental deaths, deter passersby from extending a helping hand to the people in need. Similarly many hospitals also deny to admit the injured people unless the police arrives or the FIR is lodged. Due to these hassles many lives meet untimely death. So the Ministry of Road Transport and Highways in consultation with the Ministry of Law and the Ministry of Home Affairs has issued guide lines that a bystander may take an injured person to the nearest hospital and the bystander should be allowed to leave immediately without questioning. An eyewitness of a road accident will also be allowed to leave after furnishing address. The bystander shall not be liable for any civil or criminal liability. Similarly all public and private hospitals must provide the immediate medical aid to a road accident victim and shall not wait for preparation of an FIR or other police formalities. There is no impediment for a medical practitioner when he is called upon or requested to attend to an injured person needing his medical assistance immediately. The first hour after the accident is called the 'golden hour' and it is very crucial period. Instant and proper first aid given to the road accident victims during this hour increases the chance of survival manifold and reduces the severity of injuries. Many deaths and disabilities due to impact of injuries can be prevented with timely first aid. Therefore without any hesitation we must be geared up to save precious lives.

It is our world and we all are responsible to make it liveable. If every individual on road is aware of his duty and he fulfils it also, things will automatically fall in place. As a responsible citizen we must not only follow the road safety rules but also create awareness about these rules. Every long journey starts with a single step. So let us take our first step towards the road to safety.

Information Courtesy - Ministry of Road Transport & Highways, Government of India.

Note-Explanatory Questions will not be set from this lesson

Poetry

1-To the pupils by Henry L Derozio के स्थान पर To India My Native Land by Henry L Derozio को सम्मिलित किया गया :-

"To India - My Native Land"

My country! In the day of glory past
 A beauteous halo circled round thy brow,
 And worshipped as a deity thou wast.
 Where is that glory, where that reverence now?
 Thy eagle pinion is chained down at last,
 And groveling in the lowly dust art thou:
 Thy minstrel hath no wreath to weave for thee
 Save the sad story of thy misery!
 Well let me dive into the depths of time,
 And bring from out the ages that have rolled
 A few small fragments of those wrecks sublime,
 Which human eyes may never more behold;
 And let the guerdon of my labour be
 My fallen country! One kind wish from thee!

कक्षा-11

व्यावसायिक वर्ग

ट्रेड आशुलिपि एवं टंकण चतुर्थ एवं पंचम प्रश्नपत्र तथा ट्रेड टंकण हिन्दी एवं अंग्रेजी के चतुर्थ एवं पंचम प्रश्नपत्र के पाठ्यक्रम में से केवल सैद्धान्तिक प्रश्न ही पूछे जायें। टाइप मशीन का प्रयोग केवल प्रयोगात्मक परीक्षा में ही किया जायेगा।

पाठ्यक्रम तथा पाठ्य-पुस्तकें

हिन्दी- कक्षा-11

इस विषय में 100 अंकों का एक प्रश्नपत्र तीन घण्टे का होगा। न्यूनतम उत्तीर्णांक-33

खण्ड-क

पूर्णांक-50

- | | |
|--|--------|
| 1-हिन्दी गद्य का विकास (गद्य की पाठ्य पुस्तक में दिये गये पाठों पर आधारित विभिन्न कालों में गद्य की भाषा-संरचना, विधाओं में परिवर्तन, युग-प्रवर्तक लेखकों का योगदान एवं प्रमुख रचनाएं (अतिलघु उत्तरीय प्रश्न)। | 05 |
| 2-काव्य साहित्य का विकास (विविध कालों की काव्य प्रवृत्तियाँ, उनमें परिवर्तन, प्रतिनिधि कवि एवं उनकी प्रमुख कृतियाँ), अतिलघु उत्तरीय प्रश्न। | 05 |
| 3-गद्यांशों एवं सूक्तियों की सन्दर्भ सहित व्याख्या। | 7+3=10 |
| 4-पद्यांशों तथा सूक्तिपरक पंक्तियों की सन्दर्भ सहित व्याख्या। | 7+3=10 |
| 5-संकलित गद्य के पाठों के लेखकों का साहित्यिक परिचय, जीवनी, कृतियाँ तथा भाषा शैली | 04 |
| 6-काव्य-सौष्ठव-कवि परिचय, जीवनी, कृतियाँ, साहित्यिक विशेषताएँ- | 04 |
| 7-(क) कहानी-चरित्र-चित्रण, कहानी के तत्व एवं तथ्यों पर आधारित (लघु उत्तरीय प्रश्न) | 04 |

- (ख) नाटक—निर्धारित नाटक की विशेषताएँ एवं पात्रों के चरित्र चित्रण पर आधारित लघु उत्तरीय प्रश्न-04
8—खण्ड काव्य—निम्नलिखित पर आधारित लघु उत्तरीय प्रश्न— 04
(क) खण्ड काव्य की विशेषताएं (ख) पात्रों का चरित्र—चित्रण (ग) प्रमुख घटनाओं पर आधारित प्रश्न।

खण्ड—ख

पूर्णांक—50

- 1—पठित पाठ्य पुस्तक के निर्धारित पाठों के संस्कृत गद्य एवं पद्य खण्डों का संदर्भ सहित हिन्दी में अनुवाद

10

- 2—पाठ्य पुस्तक से सूक्तिपरक पंक्तियों की ससन्दर्भ हिन्दी में व्याख्या। 04
3—पाठों पर आधारित अति लघु उत्तरीय प्रश्नों का संस्कृत में उत्तर (कोई दो प्रश्न करना है)। 04
4—काव्य सौन्दर्य के तत्व— 06

(क) सभी रस—(परिभाषा, उदाहरण एवं पहचान)

(ख) अलंकार (1) शब्दालंकार—अनुप्रास, यमक, श्लेष (परिभाषा एवं उदाहरण)

(2) अर्थालंकार—उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, सन्देह, भ्रान्तिमान, अन्वय, प्रतीप, दृष्टान्त तथा अतिशयोक्ति (परिभाषा एवं उदाहरण)

(ग) छन्द (1) मात्रिक—चौपाई, दोहा, सोरठा, रोला, कुण्डलिया, हरिगीतिका, वरवै (लक्षण एवं उदाहरण)

(2) वर्णवृत्त—इन्द्रवज्रा, उपेन्द्रवज्रा, सवैया, मत्तग्यंद, सुमुखी, सुन्दरी, बसन्ततिलका (लक्षण एवं उदाहरण)

(3) मुक्तक—मनहर (लक्षण एवं उदाहरण)

5—निबन्ध—हिन्दी में मौलिक अभिव्यक्ति। दिये हुए विषय पर निबन्ध, (जनसंख्या, पर्यावरण, स्वास्थ्य शिक्षा आदि की जानकारी हेतु इन विषयों पर भी निबन्ध पूछे जायेंगे)।

09

6—संस्कृत व्याकरण—

13

- क—सन्धि—(1) स्वर सन्धि—एचोऽयवायावः एङः पदान्तादति, एङपररूपम् 01
(2) व्यंजन—स्तोः श्चुनाश्चुः, ष्टुनाष्टुः, झलांजशझशि, खरिच, मोऽनुस्वारः तोर्लि, अनुस्वारस्यययि पर सवर्णः 01
(3) विसर्ग—विसर्जनीयस्य सः, सजुषोरुः, अतोरोरप्लुतादप्लुते, हशिच, रोरि 01
ख—शब्दरूप (1) संज्ञा—आत्मन्, नामन्, राजन्, जगत् सरित्। 01
(2) सर्वनाम—सर्व, इदम्, यद्। 01
ग—धातुरूप—लट्, लोट्, विधिलिङ्ग, लङ्, लृट् (परस्मैपदी) स्था, पा, नी, दा, कृ, चुर 02
घ—प्रत्यय (1) कृत—क्त, क्त्वा, तब्यत्, अनीयर् 01
(2) तद्धित—त्व, मतुप, वतुप 01
ङ—विभक्ति परिचय—अभितः परितः, समयानिकषाहाप्रतियोगेऽपि, यनाल विकारः, सहयुक्तेऽप्रधाने, नमः स्वस्तिस्वाहा स्वधालंबषट्योगाच्च, षष्ठीशेषे, यतश्चनिर्धारणम् 02
च—समास—अव्ययीभाव कर्मधारय, बहुव्रीहि। 02
7—हिन्दी वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद। 04

निर्धारित पाठ्य वस्तु (माध्यमिक शिक्षा परिषद् द्वारा निर्धारित अंश) का अध्ययन करना होगा।

खण्ड—क

पुस्तक का नाम	लेखक का नाम	पाठ का नाम
1	2	3

गद्य हेतु निर्धारित पाठ्य वस्तु	1-भारतेन्दु हरिश्चन्द्र 2-आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी 3-श्याम सुन्दर दास 4-सरदार पूर्ण सिंह 5-डा0 सम्पूर्णानन्द 6-राय कृष्ण दास 7-राहुल सांस्कृत्यायन 8-रामवृक्ष बेनीपुरी 9-सड़क सुरक्षा	भारत वर्षोन्नति कैसे हो सकती है? महाकवि माघ का प्रभात वर्णन भारतीय साहित्य की विशेषताएँ आचरण की सभ्यता शिक्षा का उद्देश्य आनन्द की खोज, पागल पथिक अथातो घुमक्कड़, जिज्ञासा गेहूँ बनाम गुलाब
काव्य हेतु निर्धारित पाठ्य वस्तु	1-कबीरदास 2-मलिक मुहम्मद जायसी 3-सूरदास 4-गोस्वामी तुलसीदास 5-केशवदास 6-कविवर बिहारी 7-महाकवि भूषण 8-विविधा	साखी, पदावली नागमती वियोग-वर्णन विनय, वात्सल्य, भ्रमरगीत भरत-महिमा, कवितावली, गीतावली, दोहावली, विनय पत्रिका स्वयंवर-कथा, विश्वामित्र और जनक की भेंट भक्ति एवं श्रृंगार शिवा-शौर्य, छत्रसाल प्रशस्ति सेनापति, देव, घनानन्द
कथा साहित्य हेतु निर्धारित पाठ्य वस्तु	1-प्रेमचन्द 2-जयशंकर 'प्रसाद' 3-भगवती चरण वर्मा 4-यशपाल 5-जैनेन्द्र कुमार	बलिदान आकाश दीप प्रायश्चित्त समय ध्रुव यात्रा

नाटक (सहायक पुस्तक)

क्र० सं०	पुस्तक तथा लेखक	प्रकाशक	अनुदानित जिले
1	कुहासा और विष्णु प्रभाकर लेखक-श्री किरण	भारतीय साहित्य प्रकाशन, 204-ए वेस्ट एण्ड रोड, सदर, मेरठ।	मेरठ, आजमगढ़, मुरादाबाद, बलिया, रायबरेली, झांसी, सुल्तानपुर, लखीमपुर खीरी, बदायूँ, पीलीभीत।
2	आन की मान प्रेमी लेखक-श्री हरिकृष्ण	कौशाम्बी प्रकाशन, दारागंज, इलाहाबाद	वाराणसी, लखनऊ, इटावा, बरेली, फर्रुखाबाद, एटा, शाहजहांपुर, उन्नाव, हमीरपुर।
3	गरुड़ ध्वज मिश्र लेखक-लक्ष्मी नारायण	साहित्य भवन, प्रा०लि०, 93, के०पी० कक्कड़ रोड, इलाहाबाद।	आगरा, गोरखपुर, जौनपुर, फैजाबाद, बिजनौर, फतेहपुर, गोण्डा, सीतापुर, प्रतापगढ़, बहराइच, ललितपुर।
4	सूत पुत्र "प्रेमी" लेखक-डा० गंगा सहाय	राम प्रसाद एण्ड सन्स, अस्पताल रोड, आगरा।	इलाहाबाद, सहारनपुर, अलीगढ़, मुजफ्फरनगर, गाजीपुर, मैनपुरी, जालौन, हरदोई, बाराबंकी।

- 5 राज मुकुट लेखक—श्री व्यथित सिम्बुल लैंग्वेज कारपोरेशन कानपुर, बुलन्दशहर, मथुरा, बस्ती, "हृदय" अस्पताल रोड़, आगरा मिर्जापुर, देवरिया, बांदा, रामपुर।

खण्ड काव्य (सहायक पुस्तक)
खण्ड काव्य

क्र०सं०	पुस्तक तथा लेखक	प्रकाशक	अनुदानित जिले
1	मुक्ति यज्ञ—लेखक—श्री सुमित्रा नन्दन पन्त	राधा कृष्ण प्रकाशन 2, अन्सारी रोड़, दरियागंज, नई दिल्ली	कानपुर, जौनपुर, मुरादाबाद, फैजाबाद, एटा, ललितपुर, लखनऊ, इटावा, बलिया, बिजनौर।
2	सत्य की जीत—लेखक—श्री प्रसाद माहेश्वरी	द्वारिका ज्वाला प्रसाद विद्या सागर, 129, के०पी० कक्कड़ रोड़, इलाहाबाद	झांसी, बदायूँ, प्रतापगढ़, रामपुर, पीलीभीत।
3	रश्मि रथी लेखक—रामधारी सिंह "दिनकर"	सिंह उदयांचल, पटना, वितरक—लोक भारती 15—ए, महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद	वाराणसी, बुलन्दशहर, मथुरा, मुजफ्फरनगर, फतेहपुर, उन्नाव, देवरिया।
4	आलोकवृत्त लेखक—श्री गुलाब खण्डेलवाल	कमल प्रकाशन, 105 मुकुन्दीगंज, प्रतापगढ़।	इलाहाबाद, अलीगढ़, सहारनपुर, फर्रुखाबाद, मैनपुरी, मिर्जापुर, सीतापुर।
5	त्याग पथी लेखक—श्री शुकल "अंचल"	रामेश्वर साहित्यकार संघ, दारागंज, इलाहाबाद	आगरा, गोरखपुर, गाजीपुर, बरेली, सुल्तानपुर, जालौन, लखीमपुर खीरी, गोण्डा, शाहजहांपुर, बाराबंकी।
6	श्रवण कुमार लेखक—श्री शिव बालक शुकल	गौतम बन्धु गोइन रोड़, लखनऊ	मेरठ, आजमगढ़, बस्ती, रायबरेली, हरदोई, बांदा, बहराइच, हमीरपुर।

नोट :-इसके अतिरिक्त अन्य जिलों/नवसृजित जिलों में नाटक और खण्ड काव्य पूर्व की भांति यथावत् पढ़ाये जायेंगे।

खण्ड—ख
संस्कृत दिग्दर्शिका
पाठ्य वस्तु

- 1—वन्दना
- 2—प्रयागः
- 3—सदाचारोपदेशः
- 4—हिमालयः
- 5—गीतामृतम्
- 6—चरैवेति—चरैवेति
- 7—लोभः पापस्य कारणम्।
- 8—विश्वबन्धाः कवयः
- 9—चतुरश्चौरः

10—सुभाषचन्द्र:

परिशिष्ट, व्याकरण, शब्दरूप, धातुरूप।

(दो) सामान्य हिन्दी विषय का पाठ्यक्रम निम्नवत् निर्धारित है:—

सामान्य हिन्दी— कक्षा—11

इस विषय में 100 अंकों का एक प्रश्न-पत्र तीन घण्टे का होगा।

खण्ड—क

पूर्णांक—50

1—हिन्दी गद्य साहित्य का इतिहास (गद्य की पाठ्य पुस्तक में दिये गये पाठों पर आधारित विभिन्न कालों के युग

प्रवर्तक लेखक एवं उनकी रचनाएं)। (अतिलघु उत्तरीय प्रश्न) 05

2—हिन्दी काव्य साहित्य का विकास (विभिन्न कालों के प्रमुख कवि और उनकी कृतियों पर आधारित अतिलघु उत्तरीय प्रश्न) 05

3—पाठ्यक्रम में निर्धारित गद्यांशों एवं सूक्तियों की संदर्भ सहित व्याख्या। 10

4—पाठ्यक्रम में निर्धारित पद्यांशों एवं सूक्तिपरक पंक्तियों की संदर्भ सहित व्याख्या। 10

5—पाठ्यक्रम में निर्धारित लेखकों का साहित्यिक परिचय एवं कृतियाँ। 04

6—पाठ्यक्रम में निर्धारित कवियों का साहित्यिक परिचय एवं कृतियाँ। 04

7—(क) पाठ्यक्रम में निर्धारित कहानियों का सारांश एवं उद्देश्य पर आधारित प्रश्न। 04

(ख) पाठ्यक्रम में निर्धारित नाटक की कथावस्तु एवं प्रमुख पात्रों का चरित्र चित्रण। 04

8—पाठ्यक्रम में निर्धारित खण्डकाव्य की कथावस्तु एवं प्रमुख पात्रों का चरित्र चित्रण। 04

खण्ड—ख

पूर्णांक—50

1—संस्कृत में निर्धारित पाठों के आधार पर एक गद्यांश तथा एक श्लोक का संदर्भ सहित हिन्दी में अनुवाद। 08

2—संस्कृत के निर्धारित पाठों में आयी किसी एक सूक्ति का संदर्भ सहित हिन्दी में व्याख्या। 04

3—लोकोक्तियों एवं मुहावरों के अर्थ एवं वाक्य प्रयोग। 04

4—क—सन्धि—(दीर्घ, गुण, यण, अयादि में से किन्हीं तीन सन्धियों से संबंधित शब्दों का सन्धि विच्छेद। 03

(ख) शब्दों में सूक्ष्म अन्तर। 02

(ग) अनेकार्थी शब्द। 02

(घ) अनेक शब्दों के लिए एक शब्द (केवल दो शब्द) 02

(ङ) संस्कृत शब्दों में विभक्ति की पहचान। 02

(च) वाक्यों में त्रुटिमार्जन (लिंग, वचन, कारक, काल एवं बर्तनी संबंधी त्रुटियाँ) 02

5—(क)रस—श्रृंगार, करुण, हास्य, बीर एवं शान्त रस के लक्षण एवं उदाहरण 02

(ख) अलंकार—(1) शब्दालंकार—अनुप्रास, यमक, श्लेष के लक्षण एवं उदाहरण। 02

(2) अर्थालंकार—उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, भ्रान्तिमान एवं सन्देह के लक्षण एवं उदाहरण।

(ग) छन्द—मात्रिक—चौपाई, दोहा, सोरठा, कुण्डलियां के लक्षण एवं उदाहरण। 02

6—पत्र लेखन (निम्नलिखित में से किसी एक पर)— 06

(1) नियुक्ति—आवेदन—पत्र

- (2) बैंक से किसी व्यवसाय के लिए ऋण प्राप्त करने का आवेदन-पत्र।
 (3) अपने नगर या गाँव की सफाई हेतु संबंधित अधिकारी को प्रार्थना-पत्र।
 7-निबन्ध (विज्ञान, वाणिज्य, शिक्षा, कृषि, सामाजिक एवं राजनैतिक चेतना पर आधारित जनसंख्या, 09
 स्वास्थ्य शिक्षा व पर्यावरण से सम्बन्धित)।

पाठ्य वस्तु-खण्ड-क

सामान्य हिन्दी विषय के लिए निम्नलिखित पाठ्य वस्तु का अध्ययन करना होगा:-

पुस्तक का नाम	लेखक का नाम	पाठ का नाम
1	2	3
गद्य हेतु निर्धारित पाठ्य वस्तु	1-भारतेन्दु हरिश्चन्द्र 2-आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी 3-सरदार पूर्ण सिंह 4-डा0 सम्पूर्णानन्द 5-राहुल सांकृत्यायन 6-रामवृक्ष बेनीपुरी 7-सड़क सुरक्षा	भारत वर्षोन्नति कैसे हो सकती है? महाकवि माघ की प्रभात वर्णन आचरण की सभ्यता शिक्षा का उद्देश्य अथातो घुमक्कड़, जिज्ञासा गेहूँ बनाम गुलाब
काव्य हेतु निर्धारित पाठ्य वस्तु	1-संत कबीरदास 2-सूरदास 3-गोस्वामी तुलसीदास 4-कविवर विहारी 5-महाकवि भूषण 6-भारतेन्दु हरिश्चन्द्र 7-जगन्नाथदास "रत्नाकर"	साखी, पदावली विनय, वात्सल्य, भ्रमरगीत भरत-महिमा, कवितावली, गीतावली, दोहावली, विनय पत्रिका भक्ति एवं श्रृंगार शिवा-शौर्य, छत्रसाल प्रशस्ति प्रेम माधुरी, यमुना-छवि उद्धव-प्रसंग, गंगावतरण
कथा साहित्य हेतु निर्धारित पाठ्य वस्तु	1-प्रेमचन्द 2-जयशंकर 'प्रसाद' 3-भगवती चरण वर्मा 4-यशपाल	बलिदान आकाश दीप प्रायश्चित समय

नाटक (सहायक पुस्तक)

प्रथम प्रश्न-पत्र

क्र0 सं0	पुस्तक तथा लेखक	प्रकाशक	अनुदानित जिले
1	कुहासा और किरण लेखक- श्री विष्णु प्रभाकर	भारतीय साहित्य प्रकाशन, 204-ए वेस्ट एण्ड रोड, सदर, मेरठ	मेरठ, आजमगढ़, मुरादाबाद, बलिया, रायबरेली, झांसी, सुल्तानपुर, लखीमपुर खीरी, बदायूँ, पीलीभीत।
2	आन की मान लेखक- श्री हरिकृष्ण प्रेमी	कौशाम्बी प्रकाशन, दारागंज, इलाहाबाद	वाराणसी, लखनऊ, इटावा, बरेली, फर्रुखाबाद, एटा, शाहजहांपुर, उन्नाव, हमीरपुर।
3	गरुड़ ध्वज लेखक- लक्ष्मी नारायण मिश्र	साहित्य भवन, प्रा0लि0, 93, के0पी0 कक्कड़ रोड, इलाहाबाद	आगरा, गोरखपुर, जौनपुर, फैजाबाद, बिजनौर, फतेहपुर, गोण्डा, सीतापुर, प्रतापगढ़, बहराइच, ललितपुर।
4	सूत पुत्र लेखक- डा0 गंगा सहाय "प्रेमी"	राम प्रसाद एण्ड सन्स, अस्पताल रोड, आगरा	इलाहाबाद, सहारनपुर, अलीगढ़, मुजफ्फरनगर, गाजीपुर, मैनपुरी, जालौन, हरदोई, बाराबंकी।

- 5 राज मुकुट लेखक— सिम्बुल लैंग्वेज कारपोरेशन कानपुर, बुलन्दशहर, मथुरा, बस्ती, मिर्जापुर, श्री व्यथित "हृदय" अस्पताल रोड, आगरा देवरिया, बांदा, रामपुर।

खण्ड काव्य (सहायक पुस्तक)

खण्ड काव्य

क्र०सं०	पुस्तक तथा लेखक	प्रकाशक	अनुदानित जिले
1	मुक्ति यज्ञ—लेखक— श्री सुमित्रा नन्दन पन्त	राधा कृष्ण प्रकाशन 2, अन्सारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली	कानपुर, जौनपुर, मुरादाबाद, फैजाबाद, एटा, ललितपुर।
2	सत्य की जीत—लेखक— श्री द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी	ज्वाला प्रसाद विद्या सागर, 129, के०पी० कक्कड़ रोड, इलाहाबाद	लखनऊ, इटावा, बलिया, विजनौर, झांसी, बदायूँ, प्रतापगढ़, रामपुर, पीलीभीत।
3	रश्मि रथी लेखक— रामधारी सिंह "दिनकर"	उदयांचल, पटना, वितरक—लोक भारती 15—ए, महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद	वाराणसी, बुलन्दशहर, मथुरा, मुजफ्फरनगर, फतेहपुर, उन्नाव, देवरिया।
4	आलोकवृत्त लेखक— श्री गुलाब खण्डेवाल	कमल प्रकाशन, 105 मुकुन्दीगंज, प्रतापगढ़।	इलाहाबाद, अलीगढ़, सहारनपुर, फर्रुखाबाद, मैनपुरी, मिर्जापुर, सीतापुर।
5	त्याग पथी लेखक— श्री रामेश्वर शुक्ल "अंचल"	साहित्यकार संघ, दारागंज, इलाहाबाद	आगरा, गोरखपुर, गाजीपुर, बरेली, सुल्तानपुर, जालौन, लखीमपुर खीरी, गोण्डा, शाहजहांपुर, बाराबंकी।
6	श्रवण कुमार लेखक— श्री शिव बालक शुक्ल	गौतम बन्धु गोइन रोड, लखनऊ	मेरठ, आजमगढ़, बस्ती, रायबरेली, हरदोई, बांदा, बहराइच, हमीरपुर।

नोट:—इसके अतिरिक्त अन्य जिलों/नवसृजित जिलों में नाटक और खण्ड काव्य पूर्व की भांति यथावत् पढ़ाये जायेंगे।

सामान्य हिन्दी—खण्ड—ख

संस्कृत दिग्दर्शिका

संस्कृत हेतु निर्धारित पाठ्य वस्तु—

- 1—वन्दना
- 2—प्रयागः
- 3—सदाचारोपदेशः
- 4—हिमालयः
- 5—गीतामृतम्
- 6—लोभः पापस्य कारणम्।
- 7—विश्वबन्धाः कवयः
परिशिष्ट, व्याकरण, शब्दरूप, धातुरूप।

अंग्रेजी— कक्षा—11

इस विषय में 100 अंकों का एक प्रश्न-पत्र तीन घण्टे का होगा। न्यूनतम उत्तीर्णांक—33

NOTE :

1. The whole question paper is divided into two sections- Section A and Section B.
2. Section A will contain of Prose, Poetry, Short Stories and One long Narrative Poem The Light of Asia.
3. Section B will contain General English.

Section A (50 Marks)

1. Explanation with reference to the context (One passage from Prose and one stanza from poetry) - **8+8=16 marks.**
2. One short answer type question from prose (not to exceed 30 words) - **1×4=4 marks.**
3. Vocabulary (based on Prose text) - **4 marks.**
4. Central Idea of any one poem. - **6 marks.**
5. One long answer type question from Long Narrative Poem "The Light of Asia" (Not to exceed 75 words) - **8 marks.**
6. Two short answer type questions from Short Stories (Not to exceed 30 words) - **4+4=8 marks.**
7. Figures of Speech.
 - (a) Define any one of the following figures of speech with examples. **2+2=4 marks**
(Simile, Metaphor, Personification, Apostrophe, Oxymoron, Onomatopoeia, Hyperbole)

Section B (50 Marks)

8. Grammar : **08 Marks**
 - (a) Direct and Indirect Narration - **2 marks.** (Out of two do any one)
 - (b) Synthesis - 2 marks. (Out of two do any one)
 - (c) Transformation - **2 marks.** (Out of two do any one)
 - (d) Syntax (Correction of sentences) - **1+1=2 marks.** (Out of four do any two)
9. Vocabulary : **14 Marks**
 - (a) Synonyms - **3×1=3 Marks.**
 - (b) Antonyms - **3×1=3 Marks.**
 - (c) Homophones - **1+1=2 Marks.**
 - (d) One-word substitution - **3×1=3 Marks.**
 - (e) Idioms and phrases **3×1=3 Marks.**
10. Translation : Hindi to English - **10 Marks.**
11. Essay Writing - **12 marks.**
12. Letter writing - **6 marks.**

पुस्तक का नाम	पाठ	लेखक का नाम
1	2	3
1. English prose	1. My Struggle for an Education	: Brooker T. Washington
	2. Forgetting	: Robert Lynd
	3. The Ant and the Grasshopper	: W.S. Maugham

	4. The Kite Maker	: Ruskin Bond
	5. The Variety and Unity of India	: Pt. J.L. Nehru
	6. A Dialogue on Civilization	: C.E.M. Joad
	7. An African River	: David Livingstone
	8. Road to safety	
2. English poetry	1. Mercy	: William Shakespeare
	2. The Scholar	: Robert Southey
	3. Education of Nature	: William Wordsworth
	4. To India my native land	: Henry L. Derazio
	5. O Captain ! My Captain	: Walt Whitman
	6. From "Dover Beach"	: Matthew Arnold
	7. Our Casuarina Tree	: Toru Dutt
	8. If	: Rudyard Kipling
	9. Nightingales	: Robert Bridges
	10. Palanquin Bearers	: Sarojini Naidu
Long Poem-	The Light of Asia (Book, the third)	: Sir Edwin Arnold
3. English Short Stories	1. Penpal	: G. Srinivas Rao
	2. After Twenty Years	: O Henry
	3. Drought	: S.C. Chatterjee
	4. The Selfish Giant	: Oscar Wilde

उर्दू- कक्षा-11

इसमें एक प्रश्न-पत्र 100 अंको का होगा। न्यूनतम उत्तीर्णांक-33 अंक

खण्ड- क (गद्य)

पूर्णांक 50

1-व्याख्या तशरीह (तीन इकतिबासात में दो की तशरीह)	15 अंक
2-तनकीदी सवालात	10 अंक
3-खुलासा (गैरदरसी इकतबास)	10 अंक

4-तारीख नसरी असनाफ अदब	5 अंक
5-निबन्ध (मजमून)	10 अंक

खण्ड- ख (पद्य)

पूर्णांक 50

1-तशरीहात (गजल और दूसरे असनाफ-ए-शेर)	15 अंक
2-शायरों पर तनकीदी सवालात	10 अंक
3-असनाफ शायरी	5 अंक
4-(अ) तशवीह इस्तीयराह, सनअतें	5 अंक

(तलमीह, इस्तेयारा, मरातुन नजीर, हुस्नए-तालील, तजाहुल आरफाना, सनावत मुबालगा सनाअततज़ाद मजाजमुरसल, तशबीह, कनाया)

(ब) मुहावरे और कहावतें	5 अंक
5-उर्दू जुबान व अदब का इरतिका	10 अंक

निर्धारित पुस्तकें-

खण्ड-क (गद्य)

1-अदब पारे नस्र, लेखक-एहतशाम हुसैन (अदारा-फरोगे उर्दू, लखनऊ), (पाठ संख्या 18 गोखले के बुत को छोड़कर)।

अथवा

2-अदबी सिपारे नस्र, लेखक-खलील उररब (श्री राम मेहरा ऐण्ड कम्पनी, आगरा)।

संस्तुत सहायक पुस्तकें-

1-मुबादयाते तनकीद लेखक-अब्दुररब (इण्डियन प्रेस पब्लिकेशन, प्रा0लि0, इलाहाबाद)।

2-तनकीदी इशारे, लेखक आले अहमद सरूर (अदारा फरोगे उर्दू, लखनऊ)।

3-तनबीरे अदब, लेखक-जान सगीर अहमद (नेशनल प्रेस, इलाहाबाद), पृष्ठ 316 पर इन्सान के अन्तर्गत, सोनेट, लेखक-एन0एम0 रशीद को छोड़कर।

खण्ड-ख (पद्य)

निर्धारित पुस्तकें-

1-अदब पारे नज्म, लेखक-एहतशाम हुसैन (अदारा-फरोगे उर्दू, लखनऊ)।

अथवा

2-अदबी सिपारे नज्म, लेखक-खलील उररब (श्री राम मेहरा ऐण्ड कम्पनी, आगरा)।

व्याकरण-

1-हिदायतुल बलागत, लेखक-प्रो0 मुहम्मद मुबीन (आर0एस0 राम दयाल अग्रवाल, इलाहाबाद)।

खण्ड-क

पाठ्यवस्तु

अदब पारे (नस्र)-

1-इन्तेखाब बाग व बहार	: मीर अम्मन देहलवी।
2-इन्तेखाब खतूत गालिब	: (मीर मेहदी मजरूह के नाम।)
3-रस्म व रिवाज की पाबन्दी के नुकसानात	: सर सैय्यद अहमद खां।
4-मिया आजाद की कारस्तानी और शाहनी की परेशानी	: पं0 रतन नाथ सरशार।
5-सर सैयद मरहम और उर्दू लिटरेचर	: मौलाना शिबली नोमानी।
6-बड़े घर की बेटी	: मुंशी प्रेमचन्द।
7-लफज क्यो कर बनते हैं	: पं0 बृजमोहन दप्ता कैफी।

- 8-वकील साहब : प्रो0 रशीद अहमद सिद्दीकी।
9-रतन नाथ सरशार : प्रो0 आले अहमद सरूर।

अदबी सिपारे (नस्र)**1-मिर्जा गालिब के खतूत-**

- (1) मुंशी दाद खां सैयाह के नाम।
(2) मुंशी हरगोपाल तफता के नाम।

2-सर सैयद अहमद खां-

- (1) तहजीबुल एखलाक की अदबी खिदमात।

3-अल्लामा नजीर अहमद-

- (1) एक अंग्रेज हाकिम से मुलाकात।

4-मौलाना अब्दुल हलीम शरर-

- (1) लखनऊ में फुनून अदबिइया की तरक्की।

5-पं0 रतन नाथ सरशार-

- (1) मुसाहिबों की नोक झोंक।

6-मुंशी प्रेमचन्द-

- (1) रोशनी

7-मौलाना अब्दुल माजिद दरियाबादी-

- (1) अकबर की शायरी का मआशरती व इखलाकी पसमनजर।

8-मिर्जा फरहत उल्ला बेग-

- (1) जौक, गालिब व मोमिन से मिलिये।

9-काजी अब्दुल गफफार-

- (1) उरूसुल बलाद।

10-प्रो0 रशीद अहमद सिद्दीकी-

- (1) जिगर साहब।

11-पतरस बुखारी-

- (1) सिनेमा का इश्क

12-कन्हैया लाल कपूर-

- (1) बेतक्लुफी

खण्ड-ख (पाठ्यवस्तु)**अदब पारे (नज्म)**

- 1-इन्तेखाब गजलियात सौदा।
2-ख्वाजामीर दर्द की गजलों का इन्तेखाब।
3-शेख इमाम बख्शा नासिख लखनबी की गजलों का इन्तेखाब।
4-शेख मोहम्मद इब्राहीम जौक की गजलों का इन्तेखाब।
5-अमीर मीनाई की गजलों का इन्तेखाब।
6-शाद अजीमाबादी की गजलों का इन्तेखाब।

- 7-मौलाना हसरत मूहानी की गजलों का इन्तेखाब ।
8-सैयद अनवार हुसैन आरजू लखनवी की गजलों का इन्तेखाब ।

इन्तेखाव कसायद

- 1-दर मदहनवाब सआदत अली खां: इन्शा यल्लाह खा इन्शा

नातगोई

- 1- मौलाना अहमद रजा खां बरेलवी
2- मोहसिन काकोरवी
3- रऊफ अमरोहवी
4- कैफ़ टोंकी

इन्तेखाब कसायद

- 1-दर मदह नवाब सआदत अली खां : इन्शा अल्लाह खां इन्शा

इन्तेखाब मरासी

- 1-मीर अनीस : इन्तेखाब मरासी (शुरु के 5 बन्द)
2-बरबादिए खानमा : अल्लामा शिबली नोमानी ।

इन्तेखाब मसनवीयात

- 1-मीरतकी मीर : बारिश और मीर का मकान ।
2-मसनवी नकदे खां : जगत मोहन लाल मूथां (गौतम बुद्ध की वलादत)

कताआत व रुबाइयात

- 1-हाली : इन्तेखाब कताआत (शेर की तरफ खिताब, सुखन साजी, अक्ल और नफस की गुप्तगू ।
2-अकबर "फर्जी लतीफा" जदीद मआशरत तजदुद व कदामत की कश्मकश ।
3-शब्बीर हसन खां जोश मलीहाबादी : ।

रुबाइयात

- 1-अनीस की रुबाइयात का इनतेखाब
2-अमजद हुसैन अमजद हैदराबादी की रुबाइयात का इनतेखाब
3-मिर्जा सलामत अली दबीर लखनवी की इन्तेखाब रुबाइयात ।

इन्तेखाब नज़्म जदीद

- 1-नजीर अकबराबादी का आदमीनामा, तलाशे जर, फसले बहार ।
2-मौलाना मोहम्मद हुसैन आजाद : (जिसे चाहो समझ लो)
3-दुर्गा सहाय सरुर जहानाबादी (बीर बहूटी)
4-किशन कन्हैया : चकबस्त ।
5-"दिन और रात" और शायर" : अल्लामा इकबाल ।
6-"ताज महल" : सैय्यद अली नकी सफीर लखनवी
7-"आज की दुनिय" : फिराक गोरखपुरी ।
8-तशबीह, इस्तेआरा, कनाया बिल कनाया, मजाज.ए.मुरसल, हुस्ने तलील, अरकान.ए.तशबीह (मिसालों के साथ), प्रचलित मुहावरात और ज़रबुल इमसाल (कहावतें) ।

अदबी सिपारे (नज़्म)

- 1-गजलियात सौदा, "गालिब"- जौक, मोमिन आरजू, रियाज खैराबादी, हसरत मुहानी, जिगर मुरादाबादी, फिराक गोरखपुरी, नशूर वाहिदी (शुरु की 3 गजलों)

2- मसनवीयात

मसनवी मीर हसन

(1) दास्तान हालात तबाह करने, मां-बाप की शहजादे के गायब होने पर।

शौक किदवई

(1) तोता उड़ जाने पर अफसोस।

हफीज जालंधरी

(1) सेहरा की दुआ

कसायद

(1) कसीदह गालिब दर मदद बहादुरशाह।

अमीर मीनाई

(1) दर मदह नवाब कल्ब अली खां बहादुर वालिए रामपुर।

मुनीर शिकोहाबादी

(1) दर तहनियत गुस्ल सेहत नवाब तज्मुल हुसैन खान फरूखाबाद।

मरासी

मीर अनीस

(1) हजरत इमाम हुसैन का हजरत अब्बास को अलम सौपता (शुरू के 15 बन्द)

मिर्जा सलामत अली दवीर

(1) तलवार की काट।

(2) शहादत हजरत इमाम हुसैन अलैहस्सलाम

बृज नारायन चकबस्त

(1) मर्सिया गोखले

जोश मलीहाबादी

नज्म आवाज-ए-हक से एक एक्तेबास कताआत व रुबाईयात

हाली : असराफ़ और बुख्ल

शिबली नोमानी

गुरबा नवाज़ी

अल्लामा इकबाल

(1) मस्तिये किरदार

(2) नसीहत

अख्तर

(1) फ़ितरत

रुबाईयात

(1) हाली, अकबर, जोश, फ़िराक गोरखपुरी।

मनजूमात जदीद

(1) नजीर अकबराबादी : मेले की सैर

- (2) अकबर इलाहाबाद : रंग जमाना
- (3) इकबाल : सैर फ़लक
- (4) सफ़ी लखनवी : बहार
- (5) सीमाब अकबराबादी : ताजशबे तारीक में
- (6) जोश मलीहाबादी : अलबेली सुबह
- (7) एहसानबिन दानिश : वादि-ए-कश्मीर की एक सुबह

तशबीह, इस्तेआरा, कनाया, बिल कनाया, मजाज ए मुरसल, अराकान-ए-तशबीह (सभी मिसालों के साथ), प्रचलित मुहावरात और जरबुल इमसाल (कहावतों)

रंजन कला- कक्षा-11

इसमें एक प्रश्न-पत्र 100 अंकों का होगा। न्यूनतम उत्तीर्णांक-33

खण्ड- क

70 अंक

मानव सिर का (Statue) प्रतिमा द्वारा रंगों में चित्रण मानव सिर की प्रतिमा बालक, वृद्ध जो प्लास्टर ऑफ़ पेरिस या मिट्टी की बनी हो। सम्मुख रखकर पेस्टिल, ऑयल पेस्टिल या क्रेयान इंक से चित्रण करना होगा। प्रकाश, छाया, प्रतिछाया प्रदर्शित करनी होगी।

अथवा

भारतीय चित्रकारी भारत के विशेष प्राचीन कलाकारों के चित्रों की सुगम सपाट प्रतिकृति तैयार करना।

सरल अनुवृत्ति एक मानव व एक पशु-पक्षी से संयोजित रंग व रेखाओं में चित्रित करना। नाप : 20 सेमी0 x 30 सेमी0। प्रश्न-पत्र में चित्र कम से कम 15 सेमी0 लम्बाई में दिया जाय।

खण्ड- ख

30 अंक

रंगों में काल्पनिक चित्र संयोजन दैनिक व विद्यार्थी जीवन, सामाजिक, खेल, धार्मिक, दहेज, परिवार कल्याण व परिवार नियोजन, देशभक्ति। इसमें मानव चित्र उन्नत दृश्य में जिसमें नदी, वृक्ष, झोपड़ी, मकान इत्यादि भी सम्मिलित किये जायें। चित्र दो या अधिक रंगों में स्वतन्त्र शैली में सपाट रंग व रेखाओं द्वारा प्रकाशित किये जायें।

अथवा

भारतीय चित्रकला का इतिहास भारतीय कला का प्रागैतिहासिक काल से लेकर आधुनिक काल तक जो निम्नांकित उप शीर्षकों में विभाजित हो, विभिन्न कला केन्द्रों का इतिहास, आलोचनात्मक और तुलनात्मक/अध्ययन के साथ पढ़ाया जाय।

प्रागैतिहासिक काल, बौद्ध काल, मध्यकाल।

पुस्तकें कोई भी पुस्तक निर्धारित या संस्तुत नहीं है। विद्यालयों के प्रधान विषय अध्यापक से परामर्श करके पाठ्यक्रम के अनुरूप उपयुक्त पुस्तक का चयन कर लें।

चित्रकला (आलेखन)- कक्षा-11

इसकी परीक्षा 100 अंको के एक प्रश्न-पत्र में होगी। न्यूनतम उत्तीर्णांक-33

खण्ड (क) इसमें 10 अंकों के वस्तुनिष्ठ प्रश्न अनिवार्य पूछे जायेंगे।

खण्ड (ख) 60 अंक अनिवार्य

आलेखन-प्राकृतिक, अलंकारिक, आकृतियों पर आधारित विभिन्न प्रकार के दो या दो से अधिक आवृत्ति के मौलिक-रचनात्मक आलेखन। पुष्प जैसे गुलाब, कमल, सूरजमुखी, डहलिया, गुडहल, पेन्जी आदि फूल, कलियां, पत्तियों आदि वस्तुयें जैसे मानव शंख, तितलियां, हंस, हिरन, हाथी आदि का आधार लेकर आलेखन बनाना। कम से

कम तीन रंग भरने हैं। उत्तम संगति के साथ। आलेखन वस्त्रों की छपाई, बुनाई, कढ़ाई, चर्म शिल्प, बर्तन, अल्पना व अन्य ज्यामिति आकार में बनाने होंगे। ग्राफ बना कर भी आलेखन बनाये जा सकते हैं।

खण्ड (ग) 30 अंक कोई एक खण्ड करना है।

वस्तु चित्रण अथवा स्मृति चित्रण अथवा प्राकृतिक चित्रण अथवा प्राकृतिक दृश्य चित्रण (संदकैबंचम)–

वस्तु चित्रण–30 अंक

विभिन्न प्रकार के खेल से संबंधित उपकरण– बैट, बाल, हाकी, गेंद, फुटबाल, कृषि उपकरण–फावड़ा, हल, हंसिया, हथौड़ी आदि का चित्र बनाना–यह चित्रण इंक में प्रकाश, छाया तथा प्रतिछाया, पेन्सिल, पेस्टल, आयल पेंट, पोस्टर रंग, जल रंग अग्र भूमि तथा पृष्ठ भूमि दर्शाते हुए करना है।

टिप्पणी–चित्र संयोजन 20 सेंमी0 से कम न हो। वस्तु समूह एक आयताकार व अन्य बेलनाकार या गोलाकार वस्तुओं का होना चाहिए। जिनका आपस में समन्वय भी होना चाहिए। वस्तुओं को कम से कम 40 सेंमी0 ऊंचाई पर रखा होना चाहिए।

अथवा

प्राकृतिक चित्रण–30 अंक

पुष्प जैसे–कमल, जीनिया, कैली, पेन्जी आदि की कलियां, डठलों, पत्तियों तथा सम्पूर्ण पौधे के चित्र, प्राकृतिक रंगों में छाया, प्रकाश तथा प्रति छाया दर्शाते हुए बनाना। जल रंग या पोस्टर रंग का प्रयोग कर सकते हैं। पौधे व पुष्प, पत्तियों के प्रत्येक अंग व जोड़ बनाने में विशेष ध्यान रखना चाहिए।

अथवा

स्मृति चित्रण–30 अंक

वस्तु चित्रण या प्राकृतिक चित्रण के साथ–साथ स्मृति चित्रण सफेद कागज पर प्रकाश, छाया तथा प्रति छाया सहित निम्न वस्तुओं में से किसी एक का चित्र बनाना होगा। जैसे खेल का सामान, मिट्टी की वस्तुयें तथा कृषि की साधारण उपयोगी वस्तुयें। नाप 15 सेंमी0 से अधिक नहीं।

(माध्यम पेन्सिल क्रेयान)

अथवा

प्राकृतिक दृश्य (Land Scape)–30 अंक

ग्रामीण जीवन साधारण झांकी, सामाजिक दृश्य, थोड़े प्राकृतिक पृष्ठ भूमि में बनाना है। माध्यम–जल रंग, पोस्टर रंग, ऑयल, आयल पेस्टल व कार्बन चारकोल पेन्सिल, नाप 25 सेंमी0 x 30 सेंमी0।

पुस्तकें–

कोई भी पुस्तक निर्धारित या संस्तुत नहीं की गयी है। विद्यालयों के प्रधान विषय अध्यापक के परामर्श से पाठ्यक्रम के अनुरूप उपयुक्त पुस्तक का चयन कर लें।

चित्रकला (प्रावैधिक)– कक्षा–11

इसकी परीक्षा 100 अंको के एक प्रश्नपत्र में होगी। न्यूनतम उत्तीर्णांक–33

खण्ड–क

10 अंको के अनिवार्य वस्तुनिष्ठ प्रश्न पूछे जायेंगे।

कर्णवत पैमाना क्षेत्रफल सम्बन्धी निर्मेय दीर्घवृत्त। 60 अंक का अनिवार्य

खण्ड (ख)– 9 अंक खण्ड– (ग) 9 अंक खण्ड– (घ) 9 अंक खण्ड– (च) 18 अंक खण्ड–(छ:) 15 अंक

टिप्पणी–प्रत्येक खण्ड में से एक प्रश्न अनिवार्य है तथा कुल पांच प्रश्न करने होंगे।

खण्ड (ज) 30 अंक कोई एक खण्ड करना है।

वस्तु चित्रण अथवा स्मृति चित्रण अथवा प्राकृतिक चित्रण अथवा प्राकृतिक दृश्य चित्रण (संदकैबंचम)–

वस्तु चित्रण-30 अंक

विभिन्न प्रकार के खेल से संबंधित उपकरण— बेट, बाल, हाकी, गेंद, फुटबाल, कृषि उपकरण—फावड़ा, हल, हंसिया, हथौड़ी आदि का चित्र बनाना—यह चित्रण इंक में प्रकाश, छाया तथा प्रतिछाया, पेन्सिल, पेस्टल, आयल पेंट, पोस्टर रंग, जल रंग अग्र भूमि तथा पृष्ठ भूमि दर्शाते हुए करना है।

टिप्पणी—चित्र संयोजन से 20 सेंमी0 से कम न हो। वस्तु समूह एक आयताकार व अन्य बेलनाकार या गोलाकार वस्तुओं का होना चाहिए। जिनका आपस में समन्वय भी होना चाहिए। वस्तुओं को कम से कम 40 सेंमी0 ऊंचाई पर रखा होना चाहिए।

अथवा**प्रकृति चित्रण-30 अंक**

पुष्प जैसे—कमल, जीनिया, कैली, पेन्जी आदि की कलियां, डंठलों, पत्तियों तथा सम्पूर्ण पौधे के चित्र, प्राकृतिक रंगों में छाया, प्रकाश तथा प्रति छाया दर्शाते हुए बनाना। जल रंग या पोस्टर रंग का प्रयोग कर सकते हैं। पौधे व पुष्प, पत्तियों के प्रत्येक अंग व जोड़ बनाने में विशेष ध्यान रखना चाहिए।

अथवा**स्मृति चित्रण-30 अंक**

वस्तु चित्रण या प्राकृतिक चित्रण के साथ-साथ स्मृति चित्रण सफेद कागज पर प्रकाश, छाया तथा प्रति छाया सहित निम्न वस्तुओं में से किसी एक का चित्र बनाना होगा। जैसे खेल का सामान, मिट्टी की वस्तुयें तथा कृषि की साधारण उपयोगी वस्तुयें। नाप 15 सेंमी0 से अधिक नहीं।

(माध्यम पेन्सिल क्रेयान)

अथवा**प्राकृतिक दृश्य (Land Scape)-30 अंक**

ग्रामीण जीवन साधारण झांकी, सामाजिक दृश्य, थोड़े प्राकृतिक पृष्ठ भूमि में बनाना है। माध्यम—जल रंग, पोस्टर रंग, ऑयल, आयल पेस्टल व कार्बन चारकोल पेन्सिल, नाप 25 सेंमी0 x 30 सेंमी0।

पुस्तकें—

कोई भी पुस्तक निर्धारित या संस्तुत नहीं की गयी है। विद्यालयों के प्रधान विषय अध्यापक के परामर्श से पाठ्यक्रम के अनुरूप उपयुक्त पुस्तक का चयन कर लें।

कम्प्यूटर— कक्षा-11**पाठ्यक्रम— मानविकी, वैज्ञानिक तथा वाणिज्य वर्ग के छात्रों के लिये,**

इस विषय की लिखित परीक्षा में एक प्रश्न-पत्र तीन घंटों की समयावधि का होगा। लिखित परीक्षा 60 अंकों की होगी। इसके अतिरिक्त 40 अंकों की प्रयोगात्मक परीक्षा भी होगी। प्रयोगात्मक परीक्षा हेतु तीन घंटे की समयावधि निर्धारित होगी। उत्तीर्ण होने के लिये परीक्षार्थी को लिखित, प्रयोगात्मक तथा योग में न्यूनतम क्रमशः 20, 13 तथा 33 अंक प्राप्त करने होंगे।

1-कम्प्यूटर परिदृश्य**4 अंक**

- कम्प्यूटर क्या है
- कम्प्यूटर के कार्य

- कम्प्यूटर का क्रमिक विकास
- कम्प्यूटर की पीढ़ियां
- कम्प्यूटर के प्रकार
- साफ्टवेयर एवं हार्डवेयर अवधारणा

2—डाटा निरूपण

9 अं

6 अंक

- संख्या प्रणाली
- बाइनरी नम्बर सिस्टम
- ओक्टल नम्बर सिस्टम
- हैक्सा एवं डेसिमल नम्बर सिस्टम
- प्लेटिंग प्वाइंट नम्बर्स
- विभिन्न अंक प्रणालियों के अंकों का एक दूसरे में परिवर्तन
- वन एवं टू कौम्पलीमेन्ट और इनके अनुप्रयोग

3—बूलियन बीजगणित एवं लौजिक गेट्स

6 अंक

- बूलियन बीजगणित स्वीकृत तथ्य
- AND, OR तथा NOT क्रियायें
- ट्रुथ टेबिल (Truth Table)
- बूलियन बीजगणित के प्राथमिक सिद्धान्त
- लौजिक गेट्स और इनके अनुप्रयोग

4—इनपुट आउटपुट यूनिट्स

10 अंक

- इनपुट यूनिट्स (की बोर्ड, स्कैनर, ओ0एम0आर0, एम0आई0सी0आर0ए, माउस, लाइटपेन, जॉयस्टिक, वेब कैमरा, माइक आदि)
- आउटपुट यूनिट्स (वी0डी0यू0, टर्मिनल, प्रिन्टर्स, प्लौटर्स आदि)
- मास स्टोरेज मीडिया एवं डिवाइसेज
- फ्लॉपी एवं फ्लॉपी ड्राइव
- हार्ड डिस्क ड्राइव्स
- सी0डी0 एवं सी0डी0 ड्राइव, डी0वी0डी0
- मैग्नेटिक टेप एवं टेप ड्राइव
- पेन ड्राइव

5—मेमोरी

4 अंक

- प्राइमरी एवं सेकेण्ड्री मेमोरी
- RAM, ROM, PROM and EPROM
- कैश मेमोरी

6-माइक्रोप्रोसेसर**4 अंक**

- प्राथमिक अवधारणा
- ऐक्युमलेटर्स, रजिस्टर्स, प्रोग्राम काउन्टर, स्टैक प्वाइंटर, ए0एल0यू0, कन्ट्रोल आदि
- माइक्रोप्रोसेसर का क्रमिक विकास

7-कम्प्यूटर की आन्तरिक संरचना**6 अंक**

- मदर बोर्ड
- पावर सप्लाय
- कम्प्यूटर कैबिनेट
- पैरलेल और सीरियल पाटर्स
- की बोर्ड कनेक्टर
- पंखा, रिसेट स्विच आदि
- अन्य कार्ड एवं बसेज

8-सूचना प्रौद्योगिक के मौलिक घटक**10 अंक**

- कम्प्यूटर एवं संचारण
- कम्प्यूटर नेटवर्क
- LAN, MAN, and WAN
- इण्टरनेट
 - इण्टरनेट क्या है
 - इण्टरनेट का स्वरूप
 - इण्टरनेट की सेवाएं (ई-मेल, न्यूज, चैट आदि)

9-वैज्ञानिक एवं व्यापारिक अनुप्रयोग**6 अंक**

- आफिस ऑटोमेशन
 - वर्ड प्रोसेसर
 - इलेक्ट्रानिक स्प्रेडशीट
 - DBMS
- ई-कामर्स
- रोबोटिक्स
- आर्टिफीशियल इन्टेलीजेन्स
- जनसंख्या एवं पर्यावरण

10-कम्प्यूटर वाइरस की जानकारी एवं उसको दूर करना

4 अंक

कम्प्यूटर प्रयोगात्मक

कम्प्यूटर अध्यापक, विद्यार्थियों को कम्प्यूटर मशीन में भिन्न-भिन्न घटकों, चतुर्भुज को पहचानने और इनकी कार्यप्रणाली को चित्रों एवं लेखन द्वारा जानकारी विद्यालय स्तर पर आंतरिक टेस्ट लेकर अपने स्तर पर विद्यार्थियों को अंक प्रदान करेंगे।

अधिकतम अंक-40
घण्टे

न्यूनतम उत्तीर्णांक-13

समय-3

1-दो प्रयोग (एक C तथा एक C++)	2×8= 16 अंक
2-प्रयोग आधारित मौखिकी-	04 अंक
1-मिनी प्रोजेक्ट (वर्ड स्प्रेडशीट, डी0बी0एम0एस0, Access में से किसी एक के आधार पर)---	08 अंक
2-प्रोजेक्ट आधारित मौखिकी-	04 अंक
3-सत्रीय कार्य-	08 अंक

पाठ्य-पुस्तक---

कोई पुस्तक निर्धारित या संस्तुत नहीं की गयी है। विद्यालयों के प्रधान विषय अध्यापक के परामर्श से पाठ्यक्रम के अनुरूप उपयुक्त पुस्तक का चयन कर लें।

गृह विज्ञान- कक्षा-11

केवल प्रश्नपत्र

इसमें 70 अंकों की लिखित एवं 30 अंकों की प्रयोगात्मक परीक्षा होगी । न्यूनतम उत्तीर्णांक 23 एवं 10 कुल 33 अंक
(केवल बालिकाओं के लिये) 100 अंक

इकाईवार पाठ्यक्रम निम्नवत् है:-

खण्ड-क (शरीर क्रिया विज्ञान तथा स्वास्थ्य रक्षा)

35 अंक

शरीर क्रिया विज्ञान

इकाई-1	जीवित ऊतकों की कोशकीय बनावट।	02 अंक
इकाई-2	अस्थि पंजर व पेशीतन्त्र का समरेखीय अध्ययन तथा उनकी सामान्य विकास की अवस्थायें।	05 अंक
इकाई-3	पाचन तथा अवशोषण (1) भोजन प्रणाली का वितरण तथा कार्य युक्त तिल्ली तथा आमाशय (2) भोजन के विभिन्न तत्व (3) विभिन्न परिस्थितियों जैसे व्यवसाय, आयु तथा जलवायु के अनुसार शरीर की भोजन संबंधी आवश्यकतायें (4) पोषण में दुग्ध का विशेष स्थान।	07 अंक
इकाई-4	उत्सर्जन तंत्र - त्वचा, वृक्क तथा आंत और उनके सामान्य कार्य।	03 अंक

स्वास्थ्य रक्षा

इकाई-1	स्वास्थ्य रक्षा (1) व्यक्तिगत स्वास्थ्य रक्षा जैसे त्वचा, दन्त, चक्षु आदि (2) घर की हाईजीन जैसे संवाहन तथा स्वच्छता (3) कूड़ा करकट तथा व्यर्थ जल के निकास की व्यवस्था, जल निकास, शौचालय (4) जल सम्भरण, खाद्य सम्भरण।	10 अंक
इकाई-2	व्यक्ति का उत्तरदायित्व।	03 अंक
इकाई-3	उद्यान, खेल के मैदान, खुले स्थान।	02 अंक

इकाई-4 विकास तथा क्रियात्मक क्षमता पर व्यायाम का प्रभाव। 03 अंक

खण्ड-ख (समाजशास्त्र तथा बाल कल्याण)

35 अंक

समाजशास्त्र

इकाई-1 मानव आवश्यकतायें तथा परिस्थितियाँ, जिससे भग्नाशा उत्पन्न होती है। 04 अंक

इकाई-2 मानव आवश्यकताओं की संतुष्टि के रूप में परिवार। 04 अंक

इकाई-3 भारतीय परिवार तथा परिवार के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य। 04 अंक

इकाई-4 बालक/बालिका संबंध। 03 अंक

इकाई-5 गृहस्थ परिवार का आय-व्यय लेखा, नित्य, क्रय-विक्रय में मितव्ययता के सिद्धान्त, परिवार सम्भरण के क्रय तथा गृह-खर्च। 03 अंक

बाल कल्याण

इकाई-1 प्रत्याशित माता की देखरेख। 03 अंक

इकाई-2 प्रसव की तैयारी। 04 अंक

इकाई-3 नवजात शिशु की देखभाल 0-3 माह, 3-6 माह, 6-9 माह, 9-12 माह, 01-02 वर्ष सामान्य व्याधिया। 07 अंक

इकाई-4 प्रारम्भिक बाल्य अवस्था की देखभाल(3-6 वर्ष) चारित्रिक गुण। 03 अंक

प्रयोगात्मक

30 अंक

पाककला सूखी सब्जी, रसेदार सब्जी, तरकारी का सूप, तली तथा घोटी हुई (Mesh) सब्जी।

अचार आम का अचार, प्याज, जमीरी, नीबू तथा मिश्रित तरकारी।

मुख्य आम, आंवला, पेठा तथा गाजर।

सिलाई

1. सिलाई की मशीन तथा उसकी यांत्रिकी की जानकारी जिसमें मशीन में धागा लगाना, तनाव तथा टाके के नियम तथा मशीन की साधारण खराबियों को दूर करने का व्यावहारिक ज्ञान।

2. सिलाई, काज आदि के व्यावहारिक प्रयोग के मानक बनाकर सिले वस्त्रों की सूक्ष्मताओं तथा परिष्कार का ज्ञान देना।

3. नीचे दिये गये प्रत्येक वर्ग से एक वस्त्र

(1) लेडीज कुर्ता या बुशर्ट।

(2) सलवार या मर्दानी कमीज़।

(3) फ्राक या पेटिकोट।

(4) सनसूट या ब्लाउज

प्रत्येक छात्रा को फैन्सी टॉकों की कढ़ाई का एक सेट तैयार करना चाहिये जैसे लंचसेट पर अथवा बेड शीट (सिंगल या डबल सुविधानुसार) डचेस सेट टी सेट।

पुस्तकें : कोई पुस्तक निर्धारित या संस्तुत नहीं है। विद्यालय के प्रधान संबंधित विषय अध्यापक के परामर्श से पाठ्यक्रम के अनुसार उपयुक्त पुस्तक का चयन कर लें।

तर्कशास्त्र- कक्षा-11

उद्देश्य एवं लक्ष्य-

माध्यमिक स्तर पर छात्रों को तर्कशास्त्र के तत्वों के शिक्षण का उद्देश्य, उनके मस्तिष्क की स्पष्ट, यथार्थ एवं क्रमबद्ध चिन्तन के लिए प्रस्तुत करना है। समग्ररूप से तर्कशास्त्र में पाठ्यक्रम निम्नांकित उद्देश्यों की पूर्ति हेतु निर्धारित किया गया है—

- (क) छात्रों को ऐसे मौलिक नियमों एवं सिद्धान्तों से परिचित कराना जो विचारों को नियन्त्रित करते हैं।
- (ख) उनको वैज्ञानिक शोधों में प्रयुक्त तार्किक प्रक्रियाओं से परिचित कराना।
- (ग) छात्रों को विचार प्रक्रिया में आये हुए दोषों को पकड़ने तथा उनसे बचने के योग्य बनाना।
- (घ) छात्रों में तार्किक दृष्टिकोण तथा तर्कसंगत विचार और सत्य के प्रति सम्मान उत्पन्न करना।

उपर्युक्त उद्देश्यों एवं लक्ष्यों की पूर्ति हेतु पाठ्य वस्तु को प्रस्तुत करते समय अध्यापक को विचाराधीन प्रकरण के व्यावहारिक पक्ष पर विशेष बल देना तथा दैनिक जीवन से दृष्टान्त और उदाहरण देना अपेक्षित है।

पाठ्यक्रम—

100 अंकों का एक प्रश्न-पत्र 3 घण्टे का होगा। न्यूनतम उत्तीर्णांक—33

इकाई-1—तर्कशास्त्र की परिभाषा, तर्क का निगमन रूप, विचार के नियम, पद प्रकरण, वाच्य धर्म, तार्किक परिभाषा पदों के प्रयोग में आये हुए दोष, प्रकरण पदों के निरोध में आये हुये दोष, प्रकरण। 50 अंक

इकाई-2—तर्कशास्त्र का क्षेत्र एवं मूल्य, आगमन और उनके प्रकार, आगमन की संकल्पनायें, प्रकृति की एकरूपता, आगमन के वस्तुगत आचार, निरीक्षण एवं प्रयोग।

25 अंक

इकाई-3—भारतीय तर्कशास्त्र में अनुमान का स्वरूप एवं प्रकार वेत्वाभाव के प्रमुख भेद, भारतीय तर्कशास्त्र के कारण का स्वरूप, भारतीय तर्कशास्त्र में अन्वय एवं व्यक्ति परक विधि।

25 अंक

प्राकृतिक आपदायें—(यथा आग, भूकम्प, बाढ़, सूखा एवं तूफान आदि) के स्वरूप एवं निराकरण के तार्किक निराकरण।

पुस्तक—

कोई भी पुस्तक निर्धारित या संस्तुत नहीं की गयी है। विद्यालय के प्रधान विषय अध्यापक के परामर्श से पाठ्यक्रम के अनुरूप उपयुक्त पुस्तक का चयन कर लें।

नोट— कुल 20 प्रश्न में से किन्ही 10 प्रश्नों का उत्तर देना है। सभी के अंक समान है।

मानव विज्ञान (एन्थ्रोपोलोजी)— कक्षा-11

(मानविकी, वैज्ञानिक वर्ग एवं व्यावसायिक वर्ग हेतु)

इस विषय की लिखित परीक्षा का न्यूनतम उत्तीर्णांक 23 एवं 10 कुल 33 एक प्रश्न-पत्र, 70 अंको का तीन घण्टे का होगा। 30 अंक की प्रयोगात्मक परीक्षा होगी।

अध्ययन का उद्देश्य—

1—समाज के विकास, उनके आधारभूत कारकों, विस्तार तथा विविधता की जानकारी प्राप्त करना तथा उसके भावरूप के बारे में निष्कर्ष निकालना।

2—प्राकृतिक पर्यावरण तथा मानव के मध्य अन्तःक्रिया को भारत तथा विश्व के सन्दर्भ में सामाजिक विकास पर पड़ने वाले उसके प्रभाव को समझना, विश्लेषण कर निष्कर्ष निकालने के लिए सक्षम बनाना।

3—समाज की समसामयिक समस्याओं के बारे में जानकारी करके निर्णय लेने की योग्यता प्राप्त करना।

4—मानव विकास और उसकी उपलब्धियाँ तथा विफलताओं को सजीव एवं प्रेरणादायक रूप में प्रस्तुत कर समाज के समाजवादी स्वरूप की स्थापना करना।

5—विश्व के पर्यावरणीय घटकों, विभिन्न क्षेत्रों में संसाधनों तथा उसके उपयोग की जानकारी प्राप्त करना तथा भविष्य के बारे में निष्कर्ष निकालना।

6—मानव विज्ञान नामक विषय के विकास तथा 19वीं एवं 20वीं शताब्दी में हुये विभिन्न अध्ययनों से बनी मानव विज्ञान की रूपरेखा का ज्ञान विद्यार्थियों को देना।

7—मानव विज्ञान की विषय-वस्तु, विस्तार तथा विभिन्न शाखाओं का ज्ञान सरल तथा बोधगम्य भाषा के माध्यम से विद्यार्थियों को प्राप्त कराना।

8—मानव विज्ञान एक लोकप्रिय तथा उपयोगी विषय है जो कि मानव जीवन के शारीरिक तथा सामाजिक सांस्कृतिक दोनों ही पक्षों के विकास पर प्रकाश डालता है। मानव जीवन का कोई भी पक्ष इससे अछूता नहीं है। सभी पक्षों के तारतम्य का एकीकृत चित्र प्रस्तुत करना।

9—मानव के सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन की समस्याओं को समझाने तथा सुलझाने की क्षमता का सृजन करना।

10—सभ्यता की मुख्य धारा से दूर बसे सरल जनजाति समाजों की विशिष्टता, विविधता एवं उनकी आधुनिक समस्याओं का ज्ञान देना जिससे उन्हें राष्ट्रीय जीवन की मुख्य धारा से जोड़ने के सफल प्रयास किये जा सकें।

खण्ड—क

(सामाजिक, मानव विज्ञान)

35 : अंक

	अंक	भार
इकाई—1 मानव विज्ञान की परिभाषा, शाखायें तथा अन्य विज्ञानों से सम्बन्ध।	4	
इकाई—2 सामाजिक एवं सांस्कृतिक मानव विज्ञान की परिभाषा एवं विषय क्षेत्र, सामाजिक मानव विज्ञान एवं समाजशास्त्र में समानतायें एवं भिन्नतायें।	6	
इकाई—3 विवाह, परिभाषा, जनजातीय समाजों में प्रचलित विवाह के प्रकार—एक विवाह, बहु विवाह। जनजातीय समाजों में प्रचलित जीवनसाथी चुनने के तरीके—अधिमान्य विवाह, समलिंगीय सहोदरज (पैरेलल कजिन) विवाह, विषमलिंगीय सहोदरज (क्रास कजिन) विवाह, वधु-धन एवं उसका महत्व।	10	
इकाई—4 परिवार—परिभाषा, प्रकार एवं कार्य।	7	
इकाई—5 नातेदारी व्यवस्था—क्लोन (गोत्र सम समूह), लिनिएज (वंश समूह) का वर्णन, नातेदारी के व्यवहार— प्रतिमान—परिहायें एवं परिहार सम्बन्ध।	8	
सन्दर्भित पुस्तकें—		
1—डी0 एन0 मजूमदार एवं टी0 एन0 मदान—सामाजिक मानव शास्त्र : एक परिचय।		
2—उमाशंकर मिश्र—सामाजिक—सांस्कृतिक मानव शास्त्र। उमाशंकर मिश्र—नृतत्व चिन्तन (पलका प्रकाशन)।		
3—विजय शंकर उपाध्याय एवं विजय प्रकाश शर्मा—भारत की जनजातीय संस्कृति (मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी)।		
4—शैपिरो एवं शैपिरो—मानव संस्कृति एवं समाज (Man Culture and Society)।		
5—एम्बर एवं एम्बर—मानव विज्ञान (हिन्दी अनुवाद) यू0बी0सी0 सर्विसेज, दिल्ली।		
6—गोपालशरण एवं आर0 पी0 श्रीवास्तव—मानव विज्ञान एवं समाजशास्त्र (इंग्लिश)। न्यू रॉयल बुक कम्पनी, लखनऊ।		
7—विजय शंकर उपाध्याय एवं गया पाण्डेय—सामाजिक सांस्कृतिक मानव शास्त्र, क्राउन पब्लिकेशन्स, रांची।		
8—नीरजा सिंह एवं निशा शर्मा—परिचयात्मक मानव विज्ञान।		

खण्ड—ख		35 : अंक
(प्रागैतिहासिक मानव विज्ञान)		
	अंक भार	
इकाई—1	प्रागैतिहास, अर्थ, विषय क्षेत्र, काल मापन विधियाँ—सापेक्ष एवं निरपेक्ष।	12
इकाई—2	यूरोपीय पाषाण काल की संस्कृतियों की परिचायात्मक—रूपरेखा, पुरा पाषाणकाल, मध्य पाषाण काल एवं नव पाषाणकाल	12
इकाई—3	सिंधु घाटी की सभ्यता— उत्पत्ति, विस्तार, विशेषतायें, सांस्कृतिक, आर्थिक, नगर नियोजन, विकास और पतन	11
सन्दर्भित पुस्तकें—		
	1—परिचयात्मक मानव विज्ञान—नीरजा सिंह, निशा शर्मा।	
	2—What is Anthropology—Dr. A. R. N. Srivastava.	
	3—डी0 के0 भट्टाचार्या—यूरोपियन प्रागैतिहास (इंग्लिश)।	
	4—उद्विकासीय मानव विज्ञान—डा0 विभा अग्निहोत्री।	
	5—V. Rami Reddy—Prehistory (English) Thirupati (Andhra Pradesh)	
(प्रायोगिक मानव विज्ञान)		पूर्णांक 30
	पाठ्यक्रम	अंक भार
इकाई—1	कपाल एवं उपांग अस्थियों का रेखांकित एवं चिन्हित वर्णन मानव कपाल का नारंग का फ्रन्टलिस एवं नॉरमा लैटररैलिस पक्ष का रेखांकित एवं चिन्हित वर्णन। ह्यूमरस, रेडियस, अल्ना, फीमर, टिबिया, फिबुला।	10 5 अंक चित्रण एवं 5 अंक सही नामांकन एवं वर्णन के लिए
इकाई—2	एन्थ्रोपोस्कोपी (मानववीक्षिकी) 5 व्यक्तियों के चेहरे पर निम्नलिखित सीमेटोस्कोपिक अवलोकन करना— (क) मानव केश—स्वरूप, रंग, प्रकृति (फार्म, कलर एवं टैक्सचर) (ख) नासिका—मूल, सेतु, नथुने (रूट, ब्रिज, विंग्स) (ग) आँख—एपिकैन्थिक फाल्ड, नेत्र वर्ण (आई कलर) (घ) ओष्ठ (लिप)—मोटाई एवं वर्हिर्वर्तन (निचले होंठ को बाहर की ओर लटका होना) ओष्ठ की विद्यमानता (थिकनैस एवं इवरटेंड ओष्ठ) (च) चेहरे की उदशतहनुता (फेशियल प्रोग्नैथजम)	10
इकाई—3	प्रायोगिक रिकार्ड (लैब बुक)— इकाई 1, 2, 3 और 4 विद्यार्थियों को सिखाये जायेंगे तथा उस पर आधारित लैब बुक होगी।	5
इकाई—4	मौखिक परीक्षा	5
कुल अंक . . 30		
निर्देश— इकाई 1 में वर्णित कपाल एवं उपांग अस्थियों को चार्ट से देखकर रेखांकित एवं चित्रित करना।		

सन्दर्भ पुस्तकें—

- (1) प्रयोगात्मक शारीरिक मानव विज्ञान—डा0 विभा अग्निहोत्री।
- (2) मानव अस्थि विज्ञान—हिन्दी रूपान्तर—अजय भगत एवं पोद्दार।
- (3) Physical Anthorpology Practical--by B. M. Das & Ranjan Deha.

प्रयोगात्मक अंक विभाजन

मानव विज्ञान

अधिकतम अंक : 30

न्यूनतम उत्तीर्णांक : 10

समय : 03 घण्टा

निर्धारित अंक

- | | |
|---|------------|
| 1—कपाल एवं उपांग अस्थियों का रेखांकित एवं चिन्हित करना—
(सही चित्रण हेतु 3 अंक तथा नामांकन व पहचान हेतु 3 अंक) | 06 अंक |
| 2—एन्थ्रोपोस्कोपी | 04 अंक |
| 3—मौखिकी— | 05 अंक |
| 4—प्रोजेक्ट कार्य—
(प) किसी सामाजिक विषय पर साक्षात्कार
(पप) किसी सामाजिक विषय पर प्रश्नावली तैयार करना— | 5+5=10 अंक |
| 5—प्रायोगिक रिकार्ड बुक— | 05 अंक |

नोट :—प्रोजेक्ट कार्य एवं प्रायोगिक रिकार्ड बुक परिषदीय प्रयोगात्मक परीक्षा के समय विद्यार्थियों द्वारा प्रस्तुत किया जायेगा।

संगीत (गायन) अथवा संगीत (वादन)— कक्षा—11

तीन घण्टों का एक लिखित प्रश्न—पत्र 50 पूर्णांक का होगा। 50 पूर्णांक की प्रयोगात्मक परीक्षा भी होगी।

संगीत (गायन)

खण्ड—क (संगीत विज्ञान)

पूर्णांक : 25

दो शास्त्रीय शब्दावली की परिभाषा और व्याख्या स्वर सप्तक का तारव (पिच), तीव्रता और गुण, शुद्ध और विकृत स्वर, श्रुतियां शुद्ध स्वरों का आन्दोलन और तार पर शुद्ध स्वरों का स्थान, अलाप, तान, मुर्की, कण कम्पन, मोड़, गमक, छूट, तानों के प्रकार (सपाट अलंकारिक आदि), आरोह, अवरोह पकड़ वक्र वादी का आलोचनात्मक अध्ययन। संवादी, अनुवादी, विवादी, वर्ज्य नाद की परिभाषा एवं विशेषतायें।

खण्ड—ख

पूर्णांक : 25

(संगीत का इतिहास और रागों का अध्ययन)

गीतों की शैलियां और प्रकार—ध्रुपद, तराना, सरगम गीत, भजन त्रिवट, चतुरंग, रागमाला और होली। घरानों का संक्षिप्त अध्ययन।

प्रयोगात्मक परीक्षा के लिए प्रस्तावित पाठ्यक्रम में रागों की विशेषतायें।

स्वर विस्तार के माध्यम से रागों का विकास और भेद। कठिन अलंकारों की रचना।

पाठ्यक्रम में प्रस्तावित तालों के बोलों का दुगुन, चौगुन का ज्ञान, तीनताल, झपताल, एक ताल।

गीतों के आलाप, तान, बोलतान सहित लिपिबद्ध करने की योग्यता।

छोटे स्वर समुदायों के आधार पर रागों को पहचानना और उनकी बढ़त की योग्यता।

सामान्य संगीत सम्बन्धी किसी विषय पर छोटा निबन्ध।

भारतीय संगीत में आशु रचना का स्थान।

भारतीय संगीत साहित्य का संक्षिप्त इतिहास(प्राचीन काल)।

सारंगदेव, तानसेन, अमीर खुसरों, भीमसेन जोशी, किशोरी अमोनकर एवं गंगूबाई हंगल की जीवनियां और भारतीय संगीत में उनका योगदान।

प्रयोगात्मक (गायन)

50 अंक

(1) निम्नलिखित से रागों का विस्तृत अभ्यासभीमपलासी, भैरव, मालकोस।

प्रत्येक में कम से कम एक द्रुत ख्याल तैयार होना चाहिये। उचित अलाप तान, मुर्की एवं अन्य लयपूर्ण तालबद्ध विस्तारण के साथ उनको गाने की योग्यता विद्यार्थी में अपेक्षित है। इन रागों में थोड़ी स्वतन्त्रता के साथ आशु रचना करने की शक्ति उन्हें दिखलानी चाहिये।

कठिन तालबद्ध रूपों और निरर्थक वेग पर ही केवल नहीं, वरन् सही ध्वनि, उच्चावचन, स्पष्टता और गरिमापूर्ण अभिव्यक्ति एवं लय के स्वाभाविक प्रवाह पर बल होना चाहिये।

उक्त रागों के गीतों में कम से कम ध्रुपद अथवा धमार, एक विलम्बित ख्याल तथा एक तराना होगा। ध्रुपद और धमार में दुगुन, तिगुन और चौगुन गाने तथा लिखने की क्षमता होनी चाहिये।

(2) दुर्गा, हिंडोल, बहार नामक रागों का सामान्य रूप में अभ्यास। अलाप तान आदि की आवश्यकता नहीं है। केवल स्थायी और अन्तरा पर्याप्त होगा। विद्यार्थियों में इन रागों में से प्रत्येक का आरोह, अवरोह और पकड़ गाने की योग्यता होनी चाहिये और जब धीमी गति में अभिव्यक्ति अलाप के द्वारा प्रस्तुत किये जायें तब उन्हें पहचानने की क्षमता होनी चाहिये।

(3) निम्नलिखित में से प्रत्येक ताल में कम से कम एक गीत सीखना चाहिये।

तीन ताल, झप ताल, एक ताल, चौताल।

पाठ्यक्रम में प्रस्तावित सब तालों के ठेके ताल के साथ कहने एवं लिखने की योग्यता विद्यार्थी में होनी चाहिये।

(4) छोटे स्वर समुदायों को जब आकार में गा 10 उँ ग्रा बजाया जाये, विद्यार्थियों में उनके स्वर बतलाने की योग्यता होनी चाहिये। यह स्वर समुदाय पाठ्यक्रम में प्रस्तावित विस्तृत अध्ययन वाली रागों में से लिये जायेंगे। संगीत गायन के प्रत्येक विद्यार्थी में पाठ्यक्रम के सभी तालों का साधारण ठेका तबले पर बजाने की योग्यता होनी चाहिये।

विशेष सूचना अध्यापकों को वाह्य प्रयोगात्मक परीक्षक के विचारार्थ प्रत्येक विद्यार्थी के कार्यों की एक आख्या बनानी चाहिये।

संगीत (वादन)

खण्ड-क (संगीत विज्ञान)

25 अंक

संगीत गायन में प्रस्तावित पाठ्यक्रम के अलावा निम्नलिखित और रहेगा :

अधिस्वर, वाद्यों में पूरक तालों (तरव) का प्रयोग, चिकारी, स्वर, तोड़ा तिहाई, जमजमा, पेशकारा, टुकड़ा मुखड़ा, पलठा, मोहरा, तिहाई, सम, ताली खाली भरी।

विभिन्न प्रकार के भारतीय संगीत वाद्यों के ज्ञान के साथ जो विशेष वाद्य लिया गया है उसके विभिन्न अंगों एवं मिलाने का विशेष ज्ञान, तबला, पखावज, सितार, वायलिन, बांसुरी, वीणा, सराद, सारंगी, दिलरूबा, इसराज।

खण्ड-ख (संगीत का इतिहास और शैलियों का अध्ययन)

25 अंक

(1) वाद्य पाठ्यक्रम हेतु प्रस्तावित रागों की विशेषतायें, स्वर विस्तार के माध्यम से रागों का विकास एवं भेद।

अथवा

पाठ्यक्रम के तालों तीनलाल, झपताल, सूलताल, एक ताल, चार ताल के विभिन्न लयों के साथ लयात्मक प्रकार, कठिन अलंकारों की रचना। लयकारियों में ताललिपि में लिखने की क्षमता। जैसे कायदा, परन, टुकड़ा।

(2) तालों में कायदा, पलटा, निहाई के साथ लिपिबद्ध करने की योग्यता।

अथवा

गतों को स्वरलिपि में साधारण तोड़ें एवं झाले के साथ लिखने की योग्यता। अल्प स्वर विस्तार अथवा ठेकों के कुछ बोलों के आधार पर रागों अथवा तालों को पहचानने की योग्यता।

(3) विलम्बित और द्रुत गतें।

अथवा

बाजों के प्रकार (दिल्ली, अजराडा)

(4) सामान्य संगीत सम्बन्धी विषयों पर संक्षिप्त निबन्ध।

(5) भारतीय संगीत का संक्षिप्त इतिहास भारतीय संगीतज्ञों सारंगदेव, तानसेन, अमीर खुसरो, भातखंडे, अल्लारक्खा खां, विलायत खां, एम राजम एवं पं0हरी प्रसाद चौरसिया की देन और उनकी जीवनियाँ।

प्रयोगात्मक परीक्षा (वादन)

50 अंक

विद्यार्थी निम्नलिखित वाद्यों में से कोई भी एक ले सकता है :

(1) तबला, (2) पखावज, (3) वीणा, (4) सितार, (5) सरोद, (6) सारंगी, (7) इसराज अथवा दिलरूबा, (8) वायलन, (9) बांसुरी, (10) गिटार (गिटार का पाठ्यक्रम सितार की भांति होगा)।

प्रथम दो वाद्यों की प्रयोगात्मक परीक्षा योजना अन्य वाद्यों की प्रयोगात्मक परीक्षा योजना से भिन्न होगी।

तबला या पखावज की प्रयोगात्मक परीक्षा

1 विद्यार्थियों को पर्याप्त बोल (ठेका पेशकार, परन, टुकड़े, तिहाइयां आदि) जानना चाहिये। ताल का पांच मिनट का आकर्षक प्रदर्शन देने की योग्यता होनी चाहिये। इस प्रकार के प्रदर्शन में किसी भी बोल की पुनरावृत्ति न हो वरन् वही बोल विभिन्न लयों और दूसरे प्रकार के तालों से निस्तारण के रूप में यदि जान पड़े तो बजाया जा सकता है। एक ठेके के बोल निश्चय ही दो क्रमिक टुकड़ों आदि के बीच दोहराये जा सकते हैं। एकांकी (सोलों) प्रदर्शन के लिये निम्नलिखित तालें पाठ्यक्रम में हैदू

तीव्रा, तीनताल झपताल, एकताल, चारताल, सूलताल।

2 विद्यार्थियों की सरल धुनों के साथ, दादरा, कहरवा, तीनताल, रूपक, एकताल, चौताल और धमार में संगत करने की योग्यता होनी चाहिये।

3 जो वाद्य विद्यार्थी ले उन्हें मिलाने की योग्यता होनी चाहिये।

4 विभिन्न लयकारी जैसे कि दुगुन, तिगुन, चौगुन एवं आड़।

परीक्षक के द्वारा पूछे गये तालों को अपने वाद्य में प्रस्तुत करना।

सितार आदि लय वाले वाद्यों की प्रयोगात्मक परीक्षा

(1) निम्नलिखित 6 रागों में से प्रत्येक में एक गत मसीतखानी और एक रजाखानी जिसका विस्तार सहित अभ्यास होगा :

भीमपलासी, भैरव और मालकोस।

यह विशेष वाद्य जो लिया गया है, उसकी विशेष गरिमा के साथ बजाना और अपनी गतों को और अधिक सुन्दर बजाना विद्यार्थियों से अपेक्षित है। उन रागों में आशु रचना करने की योग्यता होनी चाहिये।

(2) पूर्वी, मारवा, तिलक, कामोद, रागों में केवल एक गत बिना किसी विशेष विस्तार के बजाना।

विद्यार्थियों को इनमें से प्रत्येक राग का आरोह-अवरोह और पकड़ बजाने की योग्यता होनी चाहिये और जब उन्हें धीमे अभिव्यक्ति अलापों द्वारा प्रस्तुत किया जाय तब पहचानने की योग्यता होनी चाहिये।

(3) ऊपर दिये (1) और (2) में सभी गतें तीन ताल में हो सकती है लेकिन विद्यार्थियों को निम्नलिखित ठेकों से परिचित होना चाहिये और उन्हें ताली देते हुये कहना आना चाहिये।

दादरा, कहरवा, रूपक।

(4) जैसा कि संगीत गायन में ठीक वैसा ही।

विशेष सूचना गायन या वादन की प्रयोगात्मक परीक्षा के अंकों का बटवारा निम्न प्रकार से होगा :

संगीत गायन/वादन

अधिकतम अंक 50

न्यूनतम उत्तीर्णांक अंक 16 अंक

समय 6 घण्टे

एक समय में परीक्षा के लिये परीक्षार्थियों की संख्या पर प्रतिबन्ध यदि आवश्यक हो। इण्टरमीडिएट परीक्षा संगीत वादन परीक्षा एक दिन में क्रमशः 20-25 परीक्षार्थियों से अधिक न हो। प्रत्येक खण्ड का विवरण तथा निर्धारित अंक :

1 तबला और पखावज लेने वालों के लिये

1 परीक्षार्थियों द्वारा चुने गये अपने ताल का प्रदर्शन।	15
2 पाठ्यक्रम में निहित साधारण अध्ययन की ताले।	05
3 पाठ्यक्रम में प्रस्तावित विस्तृत अध्ययन की ताले।	10
4 तालों का कहना और उनका बजाना।	05
5 परीक्षक द्वारा गायी गयी अथवा बजायी गयी धुनों के साथ संगत करने की योग्यता।	05
6 ताल पढ़ने की योग्यता।	05
7-सामान्य प्रभाव।	05

नोट : संगीत गायन के साथ हारमोनियम की संगत की अनुमति नहीं है।

2 तबला व पखावज के अलावा अन्य वादन संगीत तंत्रवाद्य लेने वालों के लिये

1 विद्यार्थियों द्वारा चुने गये अपने रुचि के साथ गीत अथवा संगीत का प्रदर्शन।	15
2 विस्तृत अध्ययन के रागों के ऊपर पूछे गये अलाप।	10
3 पाठ्यक्रम में प्रस्तुत विस्तृत अध्ययन की ताल।	05
4 पाठ्यक्रम में निहित साधारण अध्ययन की ताल।	05
5 राग और स्वर समूह को पहचानने की क्षमता।	05
6 परीक्षार्थियों की आवाज और उसका सामान्य प्रभाव।	05
7-सामान्य प्रभाव।	05

संस्तुत पुस्तकें

- 1-ताल परिचय भाग दो-जी0सी0 श्रीवास्तव, संगीत सदन प्रकाशन, इलाहाबाद।
- 2-तबला प्रवेशिका भाग दो-पी0 नारायण (केला प्रकाशन, इलाहाबाद)।
- 3-तबला परिचय भाग एक-आई0एन0 गोस्वामी (एन गोस्वामी, बरेली)।

अध्यापकों के सन्दर्भ हेतु संस्तुत पुस्तकें

- 1-हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति-क्रमिक पुस्तक मालिका, भाग 2, 3 एवं 4, ले0 पं बी0एन0 भातखण्डे, संगीत प्रेस, हाथरस।
- 2-शास्त्र राग परिचय भाग दो-प्रकाशन नारायण (कला प्रकाशन, 240, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद)।
- 3-राग परिचय भाग दो-हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव, संगीत सदन प्रकाशन, 88, साउथ मलाका, इलाहाबाद।

कक्षा-11 संस्कृत

(अंक विभाजन)

पूर्णांक-100

सामान्य निर्देश – संस्कृत विषय में 100 अंकों का एक प्रश्नपत्र होगा। प्रश्न-पत्र के प्रत्येक खण्ड में निर्धारित अंकों के अन्तर्गत दीर्घ उत्तरीय, लघु उत्तरीय, अति लघु उत्तरीय एवं बहुविकल्पीय प्रश्नों का समावेश कर कई प्रश्न पूछे जा सकते हैं। प्रश्नपत्र में प्रश्नों के लिए निर्धारित अंक ही उत्तर के आकार की संक्षिप्तता या दीर्घता का द्योतक होगा। प्रत्येक प्रश्नपत्र के अन्तर्गत समाविष्ट पाठ्यक्रम का अंक विभाजन निम्नवत् होगा:-

खण्ड-क (गद्य)

20 अंक

चन्द्रापीडकथा

- | | | |
|----|--|--------|
| 1. | गद्यांश के आधार पर प्रश्नोत्तर। | 10 अंक |
| 2. | कथात्मक पात्रों का चरित्र चित्रण (हिन्दी में, अधिकतम 100 शब्द)। | 4 |
| 3. | रचनाकार का जीवन परिचय एवं गद्यशैली (हिन्दी अथवा संस्कृत में, अधिकतम 100 शब्द)। | 4 |
| 4. | सन्दर्भित पुस्तक से सम्बन्धित वैकल्पिक प्रश्न। | 2 |

खण्ड-ख (पद्य)

रघुवंशमहाकाव्यम्

20 अंक

- | | | |
|----|---|-------|
| 1. | किसी श्लोक की सन्दर्भसहित हिन्दी में व्याख्या। | 2+5=7 |
| 2. | किसी श्लोक की सन्दर्भसहित संस्कृत में व्याख्या। | 2+5=7 |
| 3. | कविपरिचय एवं काव्यशैली (हिन्दी अथवा संस्कृत में, अधिकतम 100 शब्द) | 4 |
| 4. | काव्यगत तथ्यों एवं भावों पर आधारित वैकल्पिक प्रश्न। | 2 |

खण्ड-ग (नाटक)

20 अंक

अभिज्ञानशाकुन्तलम् (चतुर्थोऽङ्कः)

- | | | |
|----|--|-------|
| 1. | पाठगत नाटक के किसी गद्यांश अथवा पद्य की सन्दर्भसहित हिन्दी में व्याख्या। | 2+5=7 |
| 2. | पाठगत नाटक के अंशों से सूक्तिपरक पंक्ति की सन्दर्भसहित हिन्दी में व्याख्या। | 2+5=7 |
| 3. | कालिदास का जीवनपरिचय एवं नाट्यशैली (हिन्दी अथवा संस्कृत में, अधिकतम 100 शब्द)। | 4 |
| 4. | नाट्यांश के तथ्यों पर आधारित वैकल्पिक प्रश्न। | 2 |

खण्ड-घ (पत्र लेखन)

- | | |
|--|---|
| मित्र या सम्बन्धियों को पत्र, प्रार्थनापत्र आदि। | 6 |
|--|---|

खण्ड-ड (अलंकार)

निम्नलिखित अलंकारों की सामान्य परिभाषा (हिन्दी या संस्कृत में) अथवा उदाहरण संस्कृत में-अनुप्रास एवं यमक।

4

खण्ड-च (व्याकरण)

1. अनुवाद – हिन्दी वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद।	8
2. कारक तथा विभक्ति	4
3. स्मास	4
4. सन्धि अथवा सन्धि-विच्छेद, नामोल्लेख, नियम	4
5. शब्दरूप	4
6. धातुरूप	4
7. प्रत्यय	2

निर्धारित पुस्तकें एवं पाठ्यवस्तु

खण्ड-क (गद्य)

महाकविबाणभट्टप्रणीतम् – कादम्बरीसारतत्त्वभूतम् “चन्द्रापीडकथा” का पूर्वार्द्ध भाग-आसीत् पुरा शूद्रको नाम राजासर्वरमणीयकानाम् एकनिवासभूताम्, कादम्बरीं ददर्श।

खण्ड-ख (पद्य)

महाकविकालिदासप्रणीतम्-रघुवंशमहाकाव्यम् (द्वितीय सर्ग)
प्रारम्भ से श्लोक संख्या 40 तक।

खण्ड-ग (नाटक)

महाकविकालिदासप्रणीतम्-अभिज्ञानशाकुन्तलम् ((चतुर्थोऽङ्कः))
प्रारम्भ से लेकर पद्य संख्या 10 तक।

खण्ड-घ (पत्रलेखन)

मित्र या सम्बन्धियों को पत्र, प्रार्थनापत्र आदि।

खण्ड-ङ (अलंकार)

निम्नलिखित अलंकारों की सामान्य परिभाषा (हिन्दी या संस्कृत में) अथवा उदाहरण संस्कृत में – अनुप्रास एवं यमक।

खण्ड-च (व्याकरण)

1. अनुवाद –

हिन्दी वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद।

2. कारक तथा विभक्ति –

निम्नलिखित सूत्रों तथा वार्तिकों के आधार पर कारकों तथा विभक्तियों का ज्ञान –

(क) प्रथमा विभक्ति (कर्ता कारक)

- (1) स्वतंत्रः कर्ता।
- (2) प्रातिपदिकार्थलिंगपरिमाणवचनमात्रे प्रथमा।

(ख) द्वितीया विभक्ति (कर्म कारक)

- (1) कर्तुरीप्सिततमं कर्म।
- (2) कर्मणि द्वितीया।
- (3) अकथितं च।
- (4) अधिशीङ्स्थासां कर्म।

- (5) अभितः परितः समयानिकषाहाप्रतियोगेऽपि । (वा0)
- (6) कालाध्वनोरत्यन्तसंयोगे ।
- (ग) **तृतीया विभक्ति (करण कारक)**
- (1) साधकतमं करणम् ।
- (2) कर्तृकरणयोस्तृतीया ।
- (3) सहयुक्तेऽप्रधाने ।
- (4) पृथग्विनानानाभिस्तृतीयाऽन्यतरस्याम् ।
- (5) येनाङ्गविकारः ।
3. **समास –**
निम्नलिखित समासों का ज्ञान, परिभाषा तथा संस्कृत में विग्रहसहित उदाहरण—तत्पुरुष, कर्मधारय, बहुव्रीहि ।
4. **सन्धि –** सन्धि, सन्धिविच्छेद, नामोल्लेख तथा नियम ।
निम्नलिखित सूत्रों के अनुसार संधियों का उदाहरण सहित ज्ञान ।
स्वरसन्धि— (1) इको यणचि, (2) एचोऽयवायावः,
(3) आद्गुणः, (4) वृद्धिरेचि, (5) अकः सवर्णे दीर्घः, (6) एङि पररूपम्, (7) एङःपदान्तादति ।
5. **शब्दरूप—** निम्नलिखित संज्ञा शब्दों का रूप –
(अ) पुल्लिङ्ग – राम, हरि, गुरु, पितृ, भगवत्, करिन्, राजन्, पति, सखि, विद्वस्, चन्द्रमस् ।
(आ) स्त्रीलिङ्ग – रमा, मति, नदी, धेनु, वधू, वाच, सरित्, श्री, स्त्री, अप् ।
6. **धातुरूप—** दसों लकारों का सामान्य ज्ञान तथा निम्नलिखित धातुओं के लट्, लङ्, लोट्, विधिलिङ्ग एवं लृट् में रूप ।
परस्मैपद— भू, पठ्, पा, गम्, दृश्, स्था, नी, अस्, नश्, आप, शक् इष्, प्रच्छ्, कृष् के रूप ।
7. **प्रत्यय—** क्तिन्, क्त्वा, ल्यप्, शतृ, शानच्, तुमुन्, यत् ।
टिप्पणी—संस्कृत देवनागरी लिपि में लिखी जायेगी ।

सैन्य विज्ञान— कक्षा-11

पाठ्यक्रम का उद्देश्य

सभी सामाजिक विज्ञानों में सैन्य विज्ञान एक जटिल एवं महत्वपूर्ण विज्ञान है। इसका अर्थ केवल सशक्त सेना संगठन, प्रतिष्ठान, शास्त्र अथवा सैनिक से ही नहीं अपितु उसकी जड़ें राष्ट्र को राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्रों में व्यापक रूप से फैली हैं। इसका क्षेत्र व्यापक एवं सभी प्रकार के ज्ञान से सम्बन्धित है।

इसका एकांकी अध्ययन नहीं हो सकता। राष्ट्र की शक्ति, गरिमा और गौरव राष्ट्रीय मंच पर कैसे उभर सकती है तथा विश्व शान्ति और सह अस्तित्व स्थापित करने में भारत प्रमुख भूमिका निभा सकता है। यही इस विषय के पठन-पाठन का मुख्य उद्देश्य है। यह विषय सैन्य शिक्षा अथवा प्रशिक्षण से भिन्न है।

सैन्य विज्ञान विषय में 70 अंको का एक लिखित प्रश्न-पत्र 3 घण्टे का होगा। 30 अंकों की एक प्रयोगात्मक परीक्षा होगी। लिखित में उत्तीर्णांक 70 में से 23 अंक होंगे तथा प्रयोगात्मक परीक्षा के लिये 30 अंक में से 10 अंक होंगे। कुल में उत्तीर्णांक 33 अंक होंगे। लिखित तथा प्रयोगात्मक परीक्षा में अलग-अलग उत्तीर्ण होना आवश्यक है।

1-सैन्य विज्ञान :

12 अंक

- (अ) परिभाषा, क्षेत्र तथा महत्व ।

(ब) राजनीतिशास्त्र, इतिहास, भूगोल, अर्थशास्त्र, मनोविज्ञान से सम्बन्ध।

2—थल सेना :

10 अंक

(अ) थल सेना का वर्गीकरण (लड़ाकू, सहायक तथा प्रशासनिक अंगों के आधार पर), आवश्यकता तथा सामान्य ज्ञान।

(ब) पैदल सेना, कवचयुक्त सेना (टैंक) व तोपखाने की विशेषतायें तथा कार्य।

(स) पैदल सेना, बटालियन का संगठन तथा कार्य।

(द) शांति एवं युद्धकालीन थल सैन्य संगठन (केवल रूपरेखा)।

(च) भारतीय सशस्त्र सेनायें आणविक प्रक्षेपात्र के संदर्भ में।

3—वायु सेना :

06 अंक

(अ) भारतीय वायुसेना का संक्षिप्त इतिहास।

(ब) वायु सेना के कार्य।

(स) वायु सेना के विमानों के प्रकारों का सामान्य ज्ञान।

4—नौसेना :

07 अंक

(अ) भारतीय स्वतंत्रता के समय नौसेना की स्थिति।

(ब) भारतीय नौसेना के कार्य तथा पोतों के प्रकारों का सामान्य ज्ञान (विमान वाहन पोत, वाहन पोत, विध्वंसक—पोत तथा पनडुब्बियां, फ्रिगेट)।

5—भारतीय सैन्य इतिहास तथा युद्ध :

12 अंक

(1) वैदिक तथा महाभारतकाल सैन्य व्यवस्था।

(सैन्य व्यवस्था महाभारत के युद्ध के सन्दर्भ में)।

(2) झेलम का युद्ध 326 ई0 पूर्व।

(3) आचार्य चाणक्य द्वारा वर्णित मौर्य कालीन सैन्य व्यवस्था।

6—हिन्दू कालीन सैन्य व्यवस्था :

08 अंक

(गुप्तकाल से हर्ष काल तक संक्षेप में)।

7—मुगल युग की सैन्य व्यवस्था :

08 अंक

(केवल पानीपत के प्रथम युद्ध 1526 ई0 के सम्बन्ध में)।

8—राजपूत सैन्य व्यवस्था :

07 अंक

(महाराणा प्रताप (हल्दी घाटी की लड़ाई के सन्दर्भ में)।

प्रयोगात्मक

30 अंक

(1) मानचित्र पठन

(1) सर्वेक्षण पत्रक (सर्वे ग्रीडमैप) का परिचय, परिभाषा, उपयोगिता, हाशिये की सूचनायें, सांकेतिक चिन्ह, ग्रीड तथा कन्टूर व्यवस्था।

(2) उत्तर दिशायें—प्रकार तथा दिशा ज्ञान के तरीके।

(3) दिक्मान—परिभाषा तथा अन्तर परिवर्तन।

(2) प्रिज्मैटिक दिक्सूचक, सर्विस प्रोटेक्टर तथा सशस्त्र सेनाओं के पद

(1) मानचित्र दिशानुकूल करना (नक्शा सेट करना)।

(2) तीनों सेनाओं के बेसिस ऑफ रैंक की पहचान।

(3) प्रयोगात्मक कार्य की अभ्यास पुस्तिका।

प्रयोगात्मक परीक्षाओं में अंकों का विवरण निम्नलिखित होगा।

(क)मानचित्र पठन।	20 अंक
(ख)प्रिज्मैटिक दिक्सूचक।	05 अंक
(ग)प्रायोगिक अभ्यास-पुस्तिका।	05 अंक

प्रिज्मैटिक दिक्सूचक, सर्विस प्रोटेक्टर तथा प्रायोगिक अभ्यास-पुस्तिका के अंक भौतिक परीक्षा पर भी आधारित होंगे। मानचित्र पठन के सभी प्रश्न-पत्र सर्वेक्षण पत्रांक पर ही होंगे।

पुस्तकें

कोई पुस्तक निर्धारित या संस्तुत नहीं की गयी है। विद्यालयों के प्रधान विषय अध्यापक के परामर्श से पाठ्यक्रम के अनुरूप उपयुक्त पुस्तक का चयन कर लें।

सैन्य विज्ञान

अधिकतम अंक 30

न्यूनतम उत्तीर्णांक अंक 10 अंक

समय 04 घण्टे

नोट : एक टोली में परीक्षार्थियों की संख्या 20 से अधिक न हो। एक दिन में दो टोली से अधिक की परीक्षा न हो।

निर्धारित अंक

1 मानचित्र परिचय-परिभाषा, प्रकार, हाशिये पर दी गयी सूचनाओं को वास्तविक मानचित्र पर पढ़ना तथा हाशिये की सूचनाओं के प्रकार	02
2 मानचित्र निर्देशांक-चार अंकीय एवं छः अंकीय निर्देशांक।	02
3 मापक की परिभाषा, मापक के प्रकार।	02
4 सरल मापक की रचना।	01
5 दिक्सूचकदृनाम, विभिन्न पुर्जों के प्रकार तथा प्रयोग विधि।	01
6 मानचित्र दिशानुकूल करना।	02
7 मौखिक परीक्षा।	05
8 सांकेतिक चिन्ह-चार सांकेतिक चिन्हों को बनाना जिसमें एक सैनिक सांकेतिक चिन्ह अनिवार्य है।	02
9 उत्तर दिशाओं से सम्बन्धित प्रश्न।	02
10 मानचित्र पर ग्रिड दिक्मान नापना।	03
11 दिक्मानों के अन्तर्परिवर्तन।	03
12 उत्तरान्तरों एवं विशिष्ट दिक्सूचक त्रुटि ज्ञात करना।	02
13 अभ्यास पुस्तिका।	03

शिक्षाशास्त्र- कक्षा-11

100 अंकों का एक प्रश्न-पत्र 3 घण्टे होगा। न्यूनतम उत्तीर्णांक -33

खण्ड-क (अंक 50)

(शिक्षाशास्त्र के सिद्धान्त एवं आधुनिक शैक्षिक विकास)

1 प्रस्तावनादृशिक्षा का अर्थ प्रचलित एवं वैज्ञानिक शिक्षा का महत्त्व, आवश्यकता एवं उपयोगिता, शिक्षा का स्वरूप-औपचारिक एवं अनौपचारिक।	15 अंक
2 शिक्षा के उद्देश्य (क) व्यक्तिगत एवं सामाजिक, (ख) व्यावसायिक, हमारे देश की वर्तमान परिस्थितियों के सन्दर्भ में शिक्षा के उद्देश्य।	10 अंक
3 शिक्षा के अभिकरण शिक्षा अधिकारियों का वर्गीकरण, गृह, परिवार, विद्यालय, समुदाय, स्थानीय संस्थाएँ एवं राज्य।	15 अंक
4 शिक्षा प्रणालियाँ-मांटेसरी प्रणाली, किण्डरगार्टन प्रणाली, डाल्टन प्रणाली, प्रोजेक्ट प्रणाली, बेसिक शिक्षा।	10 अंक

खण्ड-ख (शिक्षा मनोविज्ञान)

- 1 शिक्षा मनोविज्ञान (क) अर्थ एवं क्षेत्र, (ख) उपयोगिता एवं महत्व। 20 अंक
- 2 बालक की वृद्धि तथा विकास (क) प्रारम्भिक बाल्यकाल-शारीरिक एवं मानसिक विकास, भाषा का विकास एवं सामाजिक विकास, 20 अंक
- (ख) पूर्व किशोरावस्था एवं किशोरावस्था की अवस्थाएँ, शारीरिक एवं मानसिक विकास, सामाजिक विकास।
- 3 व्यक्तिगत भेद-शारीरिक, मानसिक एवं व्यक्तिगत भेद। 10 अंक

पुस्तकें

कोई पुस्तक निर्धारित या संस्तुत नहीं की गई है। विद्यालयों के प्रधान विषय अध्यापकों के परामर्श से पाठ्यक्रम के अनुरूप उपयुक्त पुस्तक का चयन कर लें।

ग्रन्थ शिल्प- कक्षा-11

लिखित परीक्षा में एक प्रश्न-पत्र 70 अंक एवं तीन घण्टे की अवधि का होगा। इसके अतिरिक्त 30 अंक की प्रयोगात्मक परीक्षा चार घण्टे की अवधि में एक दिन में सम्पन्न होगी। प्रयोगात्मक परीक्षा में मौखिक परीक्षा भी सम्मिलित रहेगी। उत्तीर्ण होने के लिये लिखित और प्रयोगात्मक परीक्षा में कम से कम 23+10=33 अंक होने चाहिये।

इकाई-1-(क) कागज बनाने का इतिहास निर्माण (कुटीर उद्योग पद्धति), कच्चा सामान के उद्गम एवं उनके बाजार कच्चे माल से लुग्दी बनाते समय गंदगी एवं प्रदूषण से होने वाला प्रभाव एवं उनके बचाव के उपाय। भारत में मशीन द्वारा कागज बनाने के विभिन्न केन्द्र। कागज और दपती की आधुनिक नाप प्रणाली जैसे ए शून्य, पवन आदि का परिचय। 14 अंक

(ख) टाइप के विभिन्न अंग, टाइप के विभिन्न नाप, टाइप केस तथा उसकी व्यवस्था, टाइप का वितरण, प्रूफ सुधारना तथा उनके संकेत।

इकाई-2-(क) प्रयोग में आने वाली विभिन्न सामग्रीकागज (सादा एवं डिजाइनदार), दपती, जिल्द बन्दी का कपड़ा (सादा एवं डिजाइनर), फीता आइलेट्स, प्रेस बटन आदि। नाप, उनकी वजन रंगों आदि सहित उनका सही विवरण एवं उनके संग्रह की विधियाँ। लेई, सरेस एवं चिपकाने के आधुनिक पदार्थ। 14 अंक

(ख) सरेस, लेई आदि तैयार करना एवं उनसे उत्पन्न होने वाली दुर्गन्ध से बचाव।

इकाई-3-1 यंत्र संरक्षण तथा उसके उचित प्रयोग एवं रख-रखाव 14 अंक

(क) फोल्डर, कैंची, चाकू, पटरी, बैकिंग हैमर, काटने की आरी, पंच, आईलेट लगाने का यंत्र, बटन लगाने के यंत्र आदि।

(ख) दपती काटने का यंत्र, निपिंग प्रेस, स्टैन्डिंग ऐण्ड लाइन प्रेस।

2 जिल्दसाजीव्यापारिक विधि एवं लैमिनेशन कार्य।

इकाई-4-1 प्रयोगार्थ सामग्रीविभिन्न प्रकार के 11 उ तथा आवरण पृष्ठ के कागज। 14 अंक

2 लेटर प्रेस, लीथो, ऑफसेट व स्क्रीन प्रिन्टिंग की छपाई।

इकाई-5-1 निगेटिव बनाने की विधियाँ, धातु की प्लेट पर मुद्रण सतह बनाना। कैमरे का सिद्धान्त, हाफटोन एवं तिरंगी छपाई का सिद्धान्त। ब्लॉक बनाने में रासायनिक पदार्थों के प्रयोग करते समय होने वाले प्रदूषण का निवारण। 14 अंक

नोट-कुल 10 प्रश्नों में से 5 प्रश्न करने हैं सभी के अंक समान हैं। प्रत्येक इकाई से दो प्रश्न पूछे जायं।

प्रयोगात्मक

30 अंक

(1) सत्र कार्य

(अ) प्रत्येक विद्यार्थी को प्रत्येक मॉडल बनाने का विवरण तैयार करना आवश्यक है। विवरण विषय अध्यापक/प्रधानाचार्य द्वारा अवलोकित होगा और प्रयोगात्मक परीक्षक के समक्ष प्रस्तुत किया जायेगा। इसके लिये प्रधान परीक्षक द्वारा अंक निर्धारित किये जायेंगे।

(ब) बनाये जाने वाले मॉडलों की सूची का चार्ट बनाया जाय और कक्षाओं में टांगा जाय।

(स) प्रत्येक विद्यार्थी द्वारा विषय से सम्बन्धित एक चार्ट भी तैयार करना आवश्यक है।

(2) मौखिक परीक्षा

परीक्षक द्वारा कम से कम तीन प्रश्न प्रत्येक विद्यार्थी से पूछे जायेंगे। इसके लिये सभी अंक प्रधान परीक्षक द्वारा निर्धारित किये जायेंगे।

प्रयोगात्मक कार्य के लिये

1 सरल तथा क्रमवत् अभ्यासविभिन्न आकारों के लिफाफे, राइटिंग पैड, पोर्टफोलियो, पत्रिकाओं के कवर, एक जुज का नोट बुक जिसका कवर सादा व दफती लगा हो। कलेण्डर, एलबम, खुली हुयी फाइल, केस बनाना।

2 पुस्तक की मरम्मत करना जिसकी सिलाई केसिंग से ठीक हो।

3 पृष्ठ बनवाने के लिये कागज की सीटों को सरल विधियों से मोड़ना।

4 एक सस्ती पुस्तक जिल्दसाजी टोप की सिलाई द्वारा करना तथा उसकी केस बाइन्डिंग करना। उस पुस्तक के ऊपर और नीचे रक्षक कागज लगाना, यह बाइन्डिंग निम्नलिखित क्रियाओं को करते हुये की जाये।

(1) पुरानी पुस्तक का एक-एक जुज अलग करना।

(2) फटे हुये जुजों को साफ करना तथा मरम्मत करना, फटे हुये कागजों को सुधारना।

(3) रक्षक कागजों को बनाना।

(4) टेप सिलाई करना।

(5) पीठ पर सरेस लगाना। उसके किनारे काटना, पीठ को गोल करना, ऊपर नीचे काटकर बराबर करना।

(6) केस का बनाना।

(7) केस का पुस्तक पर चिपकाना।

टिप्पणी

(1) प्रत्येक सत्र में प्रत्येक परीक्षार्थियों द्वारा कम से कम दस मॉडल अवश्य बनाये जायें और इसके अतिरिक्त प्रत्येक को कम से कम दो उच्च कोटि के सुन्दर मॉडल अपनी इच्छानुसार बनाये जायें।

(2) सभी मॉडलों पर सजावट का कार्य स्वयं किया जाये।

पुस्तकें

कोई पुस्तक निर्धारित या संस्तुत नहीं की गयी है। विद्यालयों के प्रधान विषय अध्यापक के परामर्श से पाठ्यक्रम के अनुरूप उपयुक्त पुस्तक का चयन कर लें।

ग्रन्थ शिल्प**अधिकतम अंक 30****न्यूनतम उत्तीर्णांक अंक 10 अंक****समय 06 घण्टे**

1 मॉडल बनाना।

03

2 सजावट।

03

3 प्रेस कार्य	
(क) कम्पोजिंग।	03
(ख) प्रूफ रीडिंग कार्य।	03
4 मौखिक कार्य।	03
5 फाइल रिकॉर्ड।	04
6 सत्रीय कार्य सतत् मूल्यांकन।	03
7 प्रोजेक्ट कार्य एवं मौखिकी।	08

कक्षा 11

काष्ठ शिल्प

इस विषय की लिखित परीक्षा में एक प्रश्न पत्र तीन घण्टे 15 मिनट का होगा। प्रश्न पत्र 70 अंक का होगा। प्रयोगात्मक परीक्षा 30 अंक की छः घण्टे की अवधि में एक दिन में सम्पन्न होगी। उत्तीर्ण होने के लिए लिखित एवं प्रयोगात्मक में कम से कम क्रमशः 23+10=33 अंक होने चाहिए।

प्रश्न पत्र	अधिकतम अंक	न्यूनतम अंक
1. लिखित—केवल प्रश्नपत्र	70 अंक	23 अंक
2. प्रयोगात्मक	30 अंक	10 अंक
योग .	100 अंक	33 अंक

उत्तीर्ण होने के लिये लिखित तथा प्रयोगात्मक परीक्षा में अलग-अलग उत्तीर्ण होने के साथ ही 33 अंक प्राप्त करना अनिवार्य है।

इकाई—एक

10 अंक

- काष्ठशिल्प की परिभाषा, सिद्धान्त एवं उद्देश्य।
- काष्ठशिल्प में प्रयोग होने वाले यंत्र। परिभाषा एवं उनका वर्गीकरण।
- खुरदरा काटने वाले यंत्र:**— इसके अन्तर्गत विभिन्न प्रकार की आरियों का ज्ञान। जैसे— दाँते बनाना, सेट करना, 2.54 सेमी0 में दाँतों की संख्या, दाँतों का कोण, चलाते समय ध्यान देने योग्य बातें आदि।
- रन्दने वाले यंत्र:**— इसके अन्तर्गत विभिन्न प्रकार के रन्दों का ज्ञान। जैसे:— उनका प्रयोग, खराबियाँ तथा उनको दूर करना, मुँह का कोण, चलाते समय ध्यान देने योग्य बातें आदि।

इकाई—दो

10 अंक

- छीलने वाले यंत्र**— इसके अन्तर्गत विभिन्न प्रकार की रुखानियों तथा झा नाइफ का ज्ञान।
- खरोचने वाले यंत्र**— इसके अन्तर्गत विभिन्न प्रकार के रेतियों का ज्ञान।
- जाँच करने वाले यंत्र**— इसके अन्तर्गत स्ट्रेट एज, वाइडिंग स्ट्रिप, प्लम्ब सूई, स्पिरट लेवेल, गुनिया, स्लाइडिंग बेवेल, माइटर स्क्वायर आदि का ज्ञान।
- चिन्ह लगाने वाले यंत्र**— इसके अन्तर्गत विभिन्न प्रकार के खतकस, दो फुटा, चिन्ह चाकू, विंग प्रकार का ज्ञान।

इकाई—तीन

10 अंक

- छेद करने वाले यंत्र**— इसके अन्तर्गत ब्रेस, हैण्ड ड्रिल, देशी ड्रिल एवं ब्राडाल का ज्ञान। ब्रेस तथा हैण्ड ड्रिल में प्रयोग होने वाले बिट्स (BITS) का ज्ञान।

2. **ठोकने तथा निकालने वाले यंत्र**— इसके अन्तर्गत मुँगरी, हथौड़े, जम्बूर, प्लायर्स, नेल पुलर, नेल पंच, पेचकस आदि का ज्ञान।
3. **कसकर पकड़ने वाले यंत्र**— इसके अन्तर्गत सिकन्जा, जी सिकन्जा, बेन्च वाइस, बेन्च होल्ड फास्ट, सा वाइस तथा हैण्ड स्क्रू का ज्ञान।

इकाई—चार

10 अंक

1. **पर्यावरण**— काष्ठशिल्प प्रयोगशाला से होने वाले प्रदूषण, उनका स्वास्थ्य पर प्रभाव व बचाव के उपाय। वृक्ष हमारे मित्र, प्रदूषण दूर करने में इनसे प्राप्त सहायता।
2. **लकड़ी में खराबियाँ**— खराबियों के प्रकार तथा उनका वर्णन।
3. वृक्ष के मुख्य भाग तथा उनके कार्य।

इकाई—पाँच

10 अंक

1. वृक्ष के प्रकार तथा तने का व्यतस्त खण्ड।
2. वृक्ष का बढ़ना।
3. पेड़ काटने का समय तथा कटी हुई लकड़ियों के नाम व व्यापारिक आकार।
4. लहड़े चीरना, लकड़ी के रेशे तथा अच्छी लकड़ी की पहचान।

इकाई—छः

10 अंक

1. **नमूनों को सजाने की विधियाँ**— जैसे:— शोपिंग, खराद कार्य, तक्षण कला, ऐंठन, इनलेइंग, एप्लीक का कार्य, मोल्डिंग, विनियरिंग तथा स्टेन्सिलिंग का सम्पूर्ण ज्ञान।
2. **आलेखन**— परिभाषा, प्रकार एवं बनाने का सिद्धान्त।
3. साधारण एवं विकर्ण मापनी बनाने का ज्ञान।

इकाई—सात

10 अंक

1. **मोल्डिंग**— उनके प्रकार, नाप, अनुपात, एक या कई को मिलाकर उनका प्रयोग।
2. **सरेस**—सरेस के प्रकार, पकाने की विधि तथा प्रयोग करने का ज्ञान।
3. काष्ठकला में प्रयोग होने वाले तेल।

नोट—कुल 14 प्रश्नों में से 7 प्रश्न करने हैं सभी के अंक समान हैं। प्रत्येक इकाई से दो प्रश्न पूछे जायें।

प्रयोगात्मक कार्य

1. प्रयोगात्मक कार्य में विभिन्न प्रकार के नमूने (MODELS) बनवाये जायेंगे। उनकी नाप, आकृति बनाने की विधि, सजावट आदि करके परिवर्तन करना।
2. सभी प्रकार के यंत्रों का क्रमानुसार प्रयोग करने का उचित अभ्यास कराना।
3. सत्र कार्य तथा प्रोजेक्ट फाइल तैयार कराना।

सिलाई— कक्षा—11

लिखित परीक्षा में एक प्रश्न—पत्र 70 अंक व तीन घण्टे का होगा। इसके अतिरिक्त 30 अंकों की एक प्रयोगात्मक परीक्षा होगी जिसमें मौखिक परीक्षा भी सम्मिलित है। प्रयोगात्मक परीक्षा 4 घण्टे से अधिक न होगी। उत्तीर्ण होने के लिये लिखित और प्रयोगात्मक परीक्षा में कम से कम क्रमशः 23+10=33 अंक आने चाहिये।

इकाई (1) परिधान (पोषाक) —(1) परिधान का महत्व, (2) परिधान के प्रकार, (3) मौसम, आयु, लिंग तथा विभिन्न अवसरों पर परिधान कैसे होने चाहिये ? का ज्ञान। 10 अंक

इकाई (2) वस्त्र अभिन्यास व्यवसाय (1) सफलता के तत्व, (2) वस्त्रों का मितव्ययी प्रयोग, (3) वस्त्रों के प्रकार सूती, ऊनी, रेशमी, सिन्थेटिक एवं आधुनिक वस्त्रों की जानकारी तथा परिधान के अनुसार इन वस्त्रों के प्रयोग का ज्ञान। 10 अंक

इकाई (3) कन्धे एवं शरीर के गठन की जानकारी तथा इसके नाप लेने की विधि शरीर (1) सामान्य, (2) तना हुआ, (3) झुका हुआ, (4) तोंदिल तथा अर्ध तोंदिल, (5) कूबड़ निकला हुआ। 10 अंक

कन्धा (1) सामान्य, (2) ऊँचा कन्धा, (3) झुका हुआ कन्धा।

इकाई (4) नाप लेने की पद्धतियाँ डायरेक्ट पद्धति, क्लाइमेक्स पद्धति तथा विभिन्न पद्धतियों का संक्षिप्त ज्ञान। 10 अंक

इकाई (5) कटाई सिलाई के अंगदृ(1) कटर क्या है ?, (2) अच्छा कटर और टेलर किस प्रकार बनाया जा सकता है ?, (3) कटाई, सिलाई तथा प्रेस करते समय की सावधानियाँ, (4) अनुमानित कपड़े का ज्ञान, (5) फैशन के अनुसार परिधान बनाने की योग्यता, (6) सिले हुये परिधान में होने वाले दोष की जानकारी तथा उन्हें दूर करने के उपाय। 10 अंक

इकाई (6) सिलाई व्यवसाय में प्रयोग होने वाले शब्दों की परिभाषा एवं ज्ञानदृसिक करना, दम फ्रॉक, गिदरी, हाला, टिप, डार्ट प्लीट, गिरह, फिशेडार्ट चाक, ताबीज, कुटका, चौपा, धोंसा, ट्रिनिंग, बबीना, वकरम, चिलोटी ले-आउट ट्राइऑन, अरज आड़ा, औरेब आदि। 10 अंक

इकाई (7) पर्यावरण सुरक्षा—(1) सिलाई करते समय विभिन्न प्रकार के प्रदूषणों से होने वाली सम्भावनायें तथा उन्हें दूर करने के उपाय, (2) सिलाई कक्ष में कूड़ा-कचरा, कतरन जलने से प्रदूषण फैलना तथा उसे दूर करने के उपाय, (3) मशीनों से उत्पन्न होने वाले ध्वनि प्रदूषण को कम करने के उपाय। 10 अंक

नोट—कुल 14 प्रश्नों में से 7 प्रश्न करने हैं सभी के अंक समान हैं। प्रत्येक इकाई से दो प्रश्न पूछे जायें।

प्रयोगात्मक कार्य

दिये हुये नाप के अनुसार निम्नलिखित वस्त्रों का चित्र बनाना, काटना एवं पूर्ण रूप से सिलना।

पुरुषों के वस्त्र

कमीज—

(1) नेहरू कमीज, कुर्ता।

(2) बुशशर्ट।

नेकर—

(1) आधुनिक नेकर, हाफपैट।

(2) तोंदिल एवं अर्ध तोंदिल व्यक्ति के लिये।

पैट—

(1) नॉर्मल कार्पुलेन्ट।

(2) पलाटिरा एक प्लेट तथा बिना प्लेट वाला, आधुनिक फैशन के अनुरूप बच्चों के वस्त्र।

(3) बाबा सूट।

कोट—

(1) नेशनल स्टाइल क्लोज़्ड (बन्दगले) कॉलर कोट।

(2) ऑर्डनरी ओपन कॉलर कोट।

(3) नेहरू जैकेट।

पुस्तकें

कोई पुस्तक निर्धारित या संस्तुत नहीं की गयी है। विद्यालयों के प्रधान विषय अध्यापक के परामर्श से पाठ्यक्रम के अनुरूप उपयुक्त पुस्तक का चयन कर लें।

सिलाई

अधिकतम अंक 30

न्यूनतम उत्तीर्णांक 10 अंक

समय 04 घण्टे

- | | |
|--|----|
| 1 दिये गये नापों के अनुसार वस्त्रों के विभिन्न भागों का चित्र बनाना (झापिटंग) एवं कटाई करना। | 06 |
| 2 वस्त्र की सिलाई, फिनिशिंग एवं प्रेसिंग। | 06 |
| 3 मौखिक कार्य। | 03 |
| 4 फाइल रिकॉर्ड। | 05 |
| 5 सिलाईबालिका, पुरुष एवं स्त्री के वस्त्र। | 06 |
| 6 मशीन के विभिन्न भागों का ज्ञान। | 02 |
| 7 सत्रीय कार्य एवं मौखिक कार्य। | 02 |

नृत्य कला- कक्षा-11

एक लिखित प्रश्न-पत्र तीन घण्टे और 50 अंकों का होगा। इसके अलावा 50 अंकों की प्रयोगात्मक परीक्षा भी होगी। उत्तीर्ण होने के लिये विद्यार्थी को लिखित, प्रयोगात्मक और योग में क्रमशः कम से कम 17, 16 और 33 अंक पाना आवश्यक है।

25 अंक

1-निम्नलिखित में से किसी एक की परिभाषा और व्याख्या जहाँ सम्भव हो सके उदाहरण और चित्र दें-कथक, भरतनाट्यम्।

ताण्डव, सास्य, मुद्रा, मुद्राय गीत, भाव, कविता, कस्क-मस्क कटाक्ष निकास, अल्लारिपु, जतिस्वरम्, शब्दम्, वर्णम्, पदम थिल्लन, लय, हरोवा, विरामद्रुत, लघु, गुरु प्लत काकपद।

लयकारियों के विभिन्न प्रकार हाथों के (संयुक्त), सात प्रकार की भ्रमरी गति, 8 प्रकार की चाल।

25 अंक

2-कथक के भेद और विशेषतायें (मुरली की गति, मटकी, गागर) अथवा भरतनाट्यम् अलारिपु, जातिस्वरम्, शब्दम्, वर्णम्, पदम्।

गतों टुकड़े, आमद परन, सलाम आदि को ताललिपि में लिखने की योग्यता जो नृत्य के साथ संगत के रूप में प्रयुक्त होता है। निम्नलिखित तालों के टेकों, उनकी विभिन्न लयों जैसे-दुगुन, चौगुन का ज्ञान, झपताल, त्रिताल-

नौ रसों का परिचय।

नृत्य सम्बन्धी किसी भी सामान्य विषय पर छोटा निबन्ध।

निम्नलिखित नृत्यकारों की जीवनियाँ-

सितारा देवी, रामगोपाल, विन्दादीन, लच्छू महाराज।

प्रयोगात्मक

50 अंक

1 टखने, घुटने, कमर, कन्ध, बाहों, कलाइयों, सिर, गर्दन, आंखों, भौहों की गतियों का अभ्यास, विभिन्न प्रकार की चालों का प्रदर्शन।

2 चौताल में सरल तत्तकार, चारगत, एक आमद, तीन चक्करदार परन। 10 टुकड़े और कवित तीन तालों में, एक गत दो परन।

3 तबले पर तीन ताल, झपताल के टेके बनाने की योग्यता। कम से कम उपरोक्त तालों में से प्रत्येक में दो टुकड़े और सभी टुकड़े आदि को हाथ से ताली, खाली आदि दिखाते हुये सभी तालों को पहचानने और अनुगमन करने की योग्यता।

4 कथानक और पौराणिक नृत्य जैसे कृष्ण की जीवन घटनायें आदि से दो नृत्य।

या

अल्लारिपु, जातिस्वरम्, शब्दम्, वर्णम् की भरत नाट्यम् नृत्य की श्रृंखला किन्हीं दो रागों में।

पुस्तक : कोई भी पुस्तक निर्धारित या संस्तुत नहीं है। विद्यालयों के प्रधान विषय अध्यापक से परामर्श करके पाठ्यक्रम के अनुरूप उपयुक्त पुस्तक का चयन कर लें।

नृत्यकला

अधिकतम अंक 50	न्यूनतम उत्तीर्णांक अंक 16 अंक	समय प्रति परीक्षार्थी 15-20 मि0
1 परीक्षार्थी का अपना चुना हुआ नृत्य।		08
2 परीक्षक द्वारा पूछे गये नृत्य खण्ड गत टुकड़े आदि विभिन्न तालों में बताना।		03
3 वेश, श्रृंगार, सज्जा, अन्य प्रसाधन आदि।		03
4 अभिव्यक्ति, संदेश, भाव आदि।		03
5 लयकारी, ताल, ज्ञान आदि।		03
6 नृत्य के टुकड़ों और ताल को विभिन्न लयों में हाथ से ताली आदि दिखाते हुये।		02
7 सामान्य धारण और नृत्य का प्रभाव।		03
8 रिकॉर्ड।		05
9 प्रोजेक्ट।		10
10 सत्रीय कार्य।		10

भौतिक विज्ञान- कक्षा-11

इसमें 70 अंक का एक प्रश्नपत्र तीन घंटे का होगा। 30 अंक की प्रयोगात्मक परीक्षा होगी।

खण्ड-क

35 अंक

1	भौतिक जगत तथा मापन	02 अंक
2	शुद्ध गतिकी	06 अंक
3	गति के नियम	07 अंक
4	कार्य ऊर्जा तथा शक्ति	07 अंक
5	दृढ़ पिण्ड तथा कणों के निकाय की गति	07 अंक
6	गुरुत्वाकर्षण	06 अंक

इकाई 1 भौतिक जगत तथा मापन

भौतिकी कार्य क्षेत्र तथा अन्तर्निहित रोमांच, भौतिक नियमों की प्रकृति, भौतिकी प्रौद्योगिकी एवं समाज, मापन की आवश्यकता, माप के मात्रक प्रणालियाँ, S. I. मात्रक, मूल तथा व्युत्पन्न मात्रक, लम्बाई, द्रव्यमान तथा समय मापन, यथार्थता तथा मापक यंत्रों की परिशुद्धता, माप में त्रुटि, सार्थक अंक। **02 अंक**

भौतिक राशियों की विमायें, विमीय विश्लेषण तथा इसके अनुप्रयोग।

इकाई 2 शुद्ध गतिकी

निर्देश फ्रेम (जड़त्वीय व अजड़त्वीय फ्रेम) सरल रेखा में गति, स्थिति-समय ग्राफ, चाल तथा वेग, गति के वर्णन के लिये अवकलन तथा समाकलन की आरम्भिक संकल्पनायें। **06 अंक**

एक समान तथा असमान गति, माध्य चाल तथा तात्क्षणिक वेग।

एक समान त्वरित गति, वेग-समय, स्थिति-समय ग्राफ, एक समान त्वरित गति के लिये सम्बन्ध (ग्राफीय विवेचना) अदिश और सदिश राशियाँ, स्थिति एवं विस्थापन सदिश, सदिश तथा संकेतन पद्धति, सदिश की समानता, सदिशों का वास्तविक संख्याओं से गुणन, सदिशों का जोड़ व घटाना, आपेक्षिक वेग।

एकांक सदिश, किसी तल में सदिश का वियोजन समकोणिक घटक, सदिशों का अदिश तथा सदिश गुणनफल, एक समतल में गति, एक समान वेग तथा एक समान त्वरण के प्रकरण, प्रक्षेप्य गति, एक समान वृत्तीय गति।

इकाई 3 गति के नियम

बल की सहजानुभूत संकल्पना, जड़त्व न्यूटन के गति का पहला नियम, संवेग और न्यूटन का गति का दूसरा नियम, आवेग, न्यूटन के गति का तृतीय नियम, रेखीय संवेग संरक्षण नियम तथा इसके अनुप्रयोग, संगामी बलों का संतुलन, स्थैतिक तथा गतिज घर्षण, घर्षण के नियम, लोटनिक (Rolling Friction) घर्षण, एक समान वृत्तीय गति की गतिकी, अभिकेन्द्र बल, वृत्तीय गति के उदाहरण (समतल वृत्ताकार सड़कों पर वाहन, ढालू सड़कों पर वाहन)।

07 अंक

इकाई 4 कार्य ऊर्जा तथा शक्ति

नियत बल तथा परिवर्ती बल द्वारा किया गया कार्य, गतिज ऊर्जा, कार्य ऊर्जा प्रमेय, शक्ति स्थितिज ऊर्जा की धारणा, कमानी की स्थितिज ऊर्जा, संरक्षी बल, यांत्रिक ऊर्जा का संरक्षण (गतिज तथा स्थितिज ऊर्जायें), असंरक्षी बल, एक व द्विविमीय तल में प्रत्यास्थ तथा अप्रत्यास्थ संघट्ट, ऊर्ध्वाधर वृत्त में गति।

07 अंक

इकाई 5 दृढ़ पिण्ड तथा कणों के निकाय की गति

द्विकण निकाय का संहति केन्द्र, संवेग संरक्षण तथा संहति केन्द्रगति, दृढ़ पिण्ड का संहति केन्द्र, एक समान छड़ का संहति केन्द्र। बल का आघूर्ण, बल आघूर्ण (Torque) कोणीय संवेग, कोणीय संवेग संरक्षण कुछ उदाहरणों सहित। दृढ़ पिण्डों का संतुलन, दृढ़ पिण्डों की घूर्णी गति तथा घूर्णी गति के समीकरण, रैखिक तथा घूर्णी गतियों की तुलना, जड़त्व आघूर्ण, घूर्णन त्रिज्या सरल ज्यामितीय पिण्डों के जड़त्व आघूर्णों के मान (व्युत्पत्ति नहीं) समान्तर अक्ष तथा लम्बवत् अक्ष प्रमेयों के प्राक्कथन तथा इनके अनुप्रयोग।

07 अंक

इकाई 6 गुरुत्वाकर्षण

ग्रहीय गति के केप्लर के नियम, गुरुत्वाकर्षण का सार्वत्रिक नियम, गुरुत्वीय त्वरण, गुरुत्वीय त्वरण के मान में ऊँचाई, गहराई एवं पृथ्वी के घूर्णन के कारण परिवर्तन, गुरुत्वीय स्थितिज ऊर्जा, गुरुत्वीय विभव, पलायन वेग, उपग्रह का कक्षीय वेग, भू तुल्यकाली उपग्रह।

खण्ड—ख

35 अंक

1	स्थूल द्रव्य के गुण	10 अंक
2	ऊष्मागतिकी	09 अंक
3	आदर्श गैस का व्यवहार तथा गैसों का अणुगति सिद्धान्त	06 अंक
4	दोलन तथा तरंगें	10 अंक

इकाई 1 स्थूल द्रव्य के गुण

प्रत्यास्थ व्यवहार, प्रतिबल विकृति संबंध, हुक का नियम, यंग गुणांक, आयतन प्रत्यास्था गुणांक, अपरूपण (Shear) दृढ़ता गुणांक, पॉयसन अनुपात, प्रत्यास्थ ऊर्जा, तरल स्तम्भ के कारण दाब, पास्कल का नियम तथा इसके अनुप्रयोग (द्रवचालित लिफ्ट तथा द्रवचालित ब्रेक), तरल दाब पर गुरुत्व का प्रभाव।

10 अंक

श्यानता, स्टोक्स का नियम, सीमान्त वेग, रेनाल्ड अंक, धारारेखी तथा प्रक्षुब्ध प्रवाह, क्रांतिक वेग, बरनौली का प्रमेय तथा इसके अनुप्रयोग, पृष्ठ ऊर्जा और पृष्ठ तनाव, संपर्क कोण, दाब आधिक्य पृष्ठ तनाव की धारणा का बूँदों, बुलबुलों तथा केशिका क्रिया में अनुप्रयोग।

ऊष्मा, ताप, तापीय प्रसार, ठोस, द्रव व गैस का तापीय प्रसार, समतापी प्रक्रम, रूदोष्म असंगत (Anomalous) प्रसार और इसका प्रभाव, विशिष्ट ऊष्मा धारिता C_p , C_v , कैलोरीमिति, अवस्था परिवर्तन, विशिष्ट गुप्त ऊष्मा धारिता।

ऊष्मा स्थानान्तरण चालन, संवहन और विकिरण, कृष्ण-पिंड विकिरण, किरचॉफ का नियम, अवशोषण और उत्सर्जन क्षमता और ग्रीन-हाउसदृग्प्रभाव, ऊष्मा चालकता, न्यूटन का शीतलन नियम, वीन का विस्थापन नियम, स्टीफेन का नियम।

इकाई 2 ऊष्मागतिकी की

तापीय साम्य तथा ताप की परिभाषा (ऊष्मागतिकी का शून्य कोटि नियम), ऊष्मा, कार्य तथा आन्तरिक ऊर्जा, ऊष्मागतिकी का प्रथम नियम समतापीय प्रक्रम, रुद्धोष्म प्रक्रम। **09 अंक**

ऊष्मागतिकी का द्वितीय नियम, उत्क्रमणीय तथा अनुत्क्रमणीय प्रक्रम, ऊष्मा इंजन प्रशीतित्र (Refrigerators)।

इकाई 3 आदर्श गैस का व्यवहार तथा गैसों का अणुगति सिद्धान्त

आदर्श गैस के लिये अवस्था का समीकरण, गैस के संपीडन में किया गया कार्य, गैसों का अणुगति सिद्धान्त अभिगृहीत, दाब की संकल्पना, गतिज ऊर्जा तथा ताप, गैस के अणुओं की वर्गमाध्य मूल चाल, स्वातंत्र्य कोटि, ऊर्जा समविभाजन नियम (केवल प्रकथन) तथा गैसों की विशिष्ट ऊष्मा पर अनुप्रयोग, माध्य मुक्त पथ की संकल्पना, आवोग्राद्रो संख्या। **06 अंक**

इकाई 4 दोलन तथा तरंगें

आवर्तीगति, आवर्तकाल, आवृत्ति, समय के फलन के रूप में विस्थापन, आवर्तीफलन, सरल आवर्त गति (S.H.M.) तथा इसका समीकरण, कला, कमानी के दोलन, प्रत्यानयन बल तथा बल स्थिरांक, S. H. M. में ऊर्जादृग्तिज तथा स्थितिज ऊर्जायें, सरल लोलक इसके आवर्तकाल के लिये व्यंजक की व्युत्पत्ति, मुक्त, अवमंदित तथा प्रणोदित दोलन (केवल गुणात्मक धारणा), अनुनाद।

तरंग गति, अनुदैर्घ्य तथा अनुप्रस्थ तरंगें, तरंग गति की चाल, प्रगामी तरंग के लिये विस्थापन सम्बन्ध, तरंगों के अध्यारोपण का सिद्धान्त, तरंगों का परावर्तन, डोरियों तथा पाइपों में अप्रगामी तरंगें, मूल विधा तथा गुणवृत्तियाँ (Fundamental mode and Harmonics), विसपन्द डाप्लर प्रभाव। **10 अंक**

प्रयोगात्मक

प्रयोगात्मक परीक्षा का अंक विभाजन निम्नवत् होगा

भौतिक विज्ञान

अधिकतम अंक 30

न्यूनतम उत्तीर्णांक अंक 10 अंक

समय 04 घण्टे

- | | |
|--|----|
| 1 कोई दो प्रयोग (2 × 5)। प्रत्येक खण्ड से एक प्रयोग। | 10 |
| 2 प्रयोग पर आधारित मौखिकी। | 05 |
| 3 प्रयोगात्मक रिकॉर्ड। | 04 |
| 4 प्रोजेक्ट कार्य व उस पर आधारित मौखिकी। | 08 |
| 5 सत्रीय कार्यदृसतत् मूल्यांकन। | 03 |

प्रत्येक प्रयोग के 05 अंक का वितरण निम्नवत् होगा

- | | | |
|--|----|----|
| (1) क्रियात्मक कौशल (आवश्यक सावधानियाँ सहित) उपकरण का सामंजस्य व प्रेक्षण कौशल (शुद्ध प्रेक्षण)। | 01 | 01 |
| (2) प्रेक्षणों की पर्याप्त संख्या तथा उचित सारणीय। | | 01 |
| (3) गणनात्मक कौशल अथवा ग्राफ बनाना। | | 01 |
| (4) परिणाम/निष्कर्ष का शुद्ध मात्रक सहित कथन। | | 01 |
| (5) आरेख (परिपथ, किरण आरेख, सैद्धान्तिक आरेख)। | | 01 |

प्रयोग सूची

(खण्ड-क)

- वर्नियर कैलीपर्स की सहायता से किसी छोटी गोलीय/बेलनाकार वस्तु का व्यास ज्ञात करना।
- स्क्रूगेज की सहायता से दिये गये तार का व्यास ज्ञात करना।
- सदिशों के समान्तर चतुर्भुज नियम के उपयोग द्वारा दी गयी वस्तु का भार ज्ञात करना।

- 4 सरल लोलक का उपयोग करे $L-T$ तथा $L-T^2$ ग्राफ खींचना तथा उचित ग्राफ का उपयोग करके सेकण्ड्री लोलक की प्रभावी लम्बाई ज्ञात करना।
- 5-गोलाईमापी (Spherometer) की सहायता से किसी गोलीय तल की वक्रता त्रिज्या ज्ञात करना।
- 6-सरल लोलक द्वारा गुरुत्वीय त्वरण 'g' का मान ज्ञात करना।
- 7 गुटके तथा क्षैतिज पृष्ठ के बीच घर्षण गुणांक ज्ञात करने के लिये सीमान्त घर्षण तथा अभिलम्ब प्रतिक्रिया के बीच सम्बन्ध का अध्ययन करना तथा घर्षण गुणांक ज्ञात करना।
- 8 दिये गये तार के पदार्थ का यंग प्रत्यास्थता गुणांक ज्ञात करना। सर्ल के उपकरण की सहायता से।
- 9 लोड-विस्तार ग्राफ खींचकर किसी कुण्डलिनी कमानी का बल स्थिरांक ज्ञात करना।
- 10 कोशिकीय उन्नयन विधि द्वारा जल का पृष्ठ तनाव ज्ञात करना।

(खण्ड-ख)

- 11 शीतलन वक्र खींचकर किसी तप्त वस्तु के ताप तथा समय के बीच सम्बन्ध का अध्ययन करना।
- 12 मिश्रण विधि द्वारा किसी दिये गये (i) ठोस, (ii) द्रव की विशिष्ट ऊष्मा धारिता ज्ञात करना।
- 13 (i) स्वरमापी का उपयोग करके नियत तनाव पर किसी दिये गये तार की लम्बाई (e) तथा आवृत्ति (h) के बीच सम्बन्ध का अध्ययन करना तथा m एवं l/e के मध्य ग्राफ खींचना।
(ii) स्वरमापी का उपयोग करके नियत आवृत्ति के लिये किसी दिये गये तार की लम्बाई (e) तथा तनाव (T) के बीच सम्बन्ध का अध्ययन करना तथा e^2 तथा T के मध्य ग्राफ खींचना।
- 14 अनुनाद नली का उपयोग करके दो अनुनाद स्थितियों द्वारा कक्ष ताप पर वायु में ध्वनि की चाल ज्ञात करना तथा अन्त्य संघारित ज्ञात करना।
- 15 P तथा V एवं P तथा $1/v$ के बीच ग्राफ खींचकर नियत ताप पर वायु के नमूने के लिये दाब के साथ आयतन में परिवर्तन का अध्ययन करना।
- 16 किसी दी गयी गोल वस्तु का सीमान्त वेग मापकर दिये गये श्यान द्रव का श्यानता गुणांक ज्ञात करना।
- 17 न्यूटन के शीतलन नियम का सत्यापन करना।
- 18 स्प्रिंग के लिये भार तथा लम्बाई में वृद्धि के बीच वक्र खींचकर बल नियतांक ज्ञात करना।
- 19-स्वरमापी की सहायता से किसी दिये गये स्वरित्र की आवृत्ति ज्ञात करना।
- 20-अनुनाद नली का उपयोग करके किये गये दो स्वरित्र की आवृत्तियों की तुलना करना तथा अन्य संशोधन ज्ञात करना।

(ग) वाणिज्य वर्ग- कक्षा-11

बहीखाता तथा लेखाशास्त्र

विशेष निर्देश-(1) भारतीय बहीखाता पद्धति एक प्रश्न प्रश्नपत्र 100 अंकों का होगा जो अनिवार्य होगा।

(2) पाश्चात्य बहीखाता पद्धति का सैद्धान्तिक अध्ययन वही रहेगा, जिस आधार पर बैंकों तथा व्यापार गृहों में खाते रखे जाते हैं परन्तु इसका अध्ययन एवं प्रश्नों के उत्तर हिन्दी अथवा अंग्रेजी किसी में किये जा सकते हैं। हिन्दी में लेखा और खतौनी करने के Debt or (Dr.) लिये के लिये ऋणी और (ऋ०) Credit or (Cr.) के लिये (व०) लिखा जायेगा। (न कि नाम और जमा) और ज्व और ढल के स्थान पर क्रमशः 'की' और 'से' का प्रयोग अनिवार्य होगा। जैसे अंग्रेजी के जर्नल लेखा Ram Dr. का लेखा हिन्दी में राम ऋ० लिखी जायेगी (To goods a/c) का माल खाते का-और इस लेखे की खतौनी राम के खाते में ऋ० पक्ष की ओर से होगी। 'माल खाते का' और माल खाता के धनी में होगा 'राम से'।

- (1) लेखाशास्त्र आशय एवं सिद्धान्त (अवधारणायें, मान्यतायें, परम्परायें) (लेखा के विभिन्न स्वरूपों के संक्षिप्त अध्ययन) प्रारम्भिक लेखे की पुस्तकें एवं खाता बही। विनिमय बिल व चेक सम्बन्धी लेखे।
30 अंक
- (2) व्यापार एवं लाभ-हानि खाता तथा आर्थिक चिट्ठा (समायोजनायें सहित), अशुद्ध आशय प्रकार एवं उनका सुधार। रहितया मूल्यांकन की विभिन्न विधियां।
20 अंक
- (3) प्रेषण व संयुक्त साहस के खाते, औसत भुगतान तिथि।
20 अंक
- (4) भारतीय बही खाता पद्धति का सैद्धान्तिक अध्ययन एवं बहियों का प्रयोग (कच्ची, पक्की रोकड़ बही नाम व जाम नकल बहियों का लिखना)।
20 अंक
- (5) पूंजीगत आख्यागत संचय एवं कोष।
10 अंक

निर्धारित पुस्तकें-

कोई पुस्तक निर्धारित नहीं है। संस्था के प्रधान विषय अध्यापक के परामर्श से पाठ्यक्रम के अनुरूप पुस्तक का चयन कर लें।

व्यापारिक संगठन एवं पत्र-व्यवहार- कक्षा-11

इस विषय में एक प्रश्न-पत्र 100 अंकों का और समय तीन घंटे का होगा-

- 1-वाणिज्य एवं आधुनिक सभ्यता व्यापार की स्थापना, व्यावसायिक पर्यावरण आशय एवं घटक। व्यवसाय व उद्योगों का पर्यावरण प्रदूषण पर प्रभाव एवं नियन्त्रण, व्यापारिक सफलता के आवश्यक गुण।
25 अंक
- 2-विभिन्न व्यापार गृह एवं उनका संगठन, एकल व्यापारी, साझेदारी (स्कन्द कम्पनी)।कम्पनी अधिनियम, 2013 का संक्षिप्त परिचय, विशेषतायें।
25 अंक
- 3-मध्यस्थ व्यापार, अभिकर्ता डाकघर और बैंकों की सेवा में।
15 अंक
- 4-पब्लिक काल आफिस (पी0सी0ओ0), फ़ैक्स ई-मेल एवं इण्टरनेट। चेक विनिमय विषय प्रतिज्ञा-पत्र और हुण्डी।
20 अंक
- 5-यातायात-उसके आर्थिक तथा सामाजिक महत्व, यातायात के विभिन्न प्रकार।
15 अंक

पुस्तकें-

कोई पुस्तक निर्धारित या संस्तुत नहीं की गयी है। विद्यालयों के प्रधान विषय अध्यापक के परामर्श से पाठ्यक्रम के अनुरूप उपयुक्त पुस्तक का चयन कर लें।

अधिकोषण तत्व- कक्षा-11

इस विषय में एक प्रश्न-पत्र 100 अंकों का और समय तीन घंटे का होगा-

- 1-मुद्रा, द्रव्य और विनिमय-मुद्रा की परिभाषा और कार्य। मुद्रा का मूल्य-उनको प्रभावित करने वाले तत्व, मुद्रा का परिणाम सिद्धान्त।
20 अंक

- 2—प्रमाण की समस्या, रजत एवं स्वर्ण मापन, एक धातुमान और द्विधातुमान, स्वर्ण प्रमाप, स्वर्ण पिण्ड प्रमाप, स्वर्ण करेन्सी प्रमाप, स्वर्ण विनिमय प्रमाप, स्वर्ण प्रमाप की विशेषतायें, भारत में मैट्रिक प्रमाप। 30 अंक
- 3—कागजी मुद्रा—कागजी मुद्रा के गुण और दोष, कागजी मुद्रा के भेद (प्रतिनिधि, परिवर्तनीय और अपरिवर्तनीय) सरकार द्वारा और बैंक द्वारा नोट प्रकाशन, एक अथवा अधिक बैंकों द्वारा नोट प्रकाशन, श्रेष्ठ कागजी मुद्रा के लक्षण, भारत में पत्र मुद्रा। 30 अंक
- 4—साख—परिभाषा, उत्पत्ति और विकास—साख के विकास हेतु अनुकूल परिस्थितियां, साख के विकास से लाभ, साख तथा पूंजी मांग—पत्र। 20 अंक

औद्योगिक संगठन— कक्षा—11

इस विषय में एक प्रश्न—पत्र 100 अंकों का और समय तीन घंटे का होगा—

- 1—कृषि उद्योग—आशय, विशेषतायें, महत्व, संगठन, प्रबन्ध एवं अन्य सहायक उद्योग। 10 अंक
- 2—छोटे व बड़े पैमाने की कृषि—अर्थ, विशेषतायें, प्रभाव, लाभ, हानि। 10 अंक
- 3—कृषि का व्यावसायीकरण—कृषि उत्पादनों का विपणन, विधियां, व्यावसायीकरण का कृषि पर प्रभाव। 10 अंक
- 4—कृषि में मशीनों की उपयोगिता। 10 अंक
- 5—कृषि पर आधारित सहायक उद्योगों की कार्य प्रणाली। 10 अंक
- 6—निर्माण उद्योग से आशय एवं विशेषतायें। 10 अंक
- 7—निर्माण उद्योग में मशीनों का प्रयोग तथा उत्पादन और बिक्री पर उनका प्रभाव। 10 अंक
- 8—श्रम का संगठन एवं प्रबन्ध, श्रम की कार्यक्षमता पर पारिश्रमिक, कार्य करने के घण्टे (कार्य अवधि) और कार्य की परिस्थितियों का प्रभाव। 10 अंक
- 9—व्यापारिक संघ—अर्थ, विशेषतायें, कार्य, महत्व एवं संगठनात्मक ढांचा। 10 अंक
- 10—श्रम सम्बन्धी संगठन पर नियुक्तकर्ता का प्रभाव। 10 अंक

पुस्तक—कोई पुस्तक निर्धारित या संस्तुत नहीं की गयी है।

नोट—कुल 20 प्रश्नों में से 10 प्रश्न करने हैं सभी के अंक समान हैं। प्रत्येक इकाई से दो प्रश्न पूछे जायं।

अर्थशास्त्र तथा वाणिज्य भूगोल— कक्षा—11

इस विषय में एक प्रश्न—पत्र 100 अंकों का और समय तीन घंटे का होगा—

खण्ड—क

- 1—**विषय परिचय**—परिभाषा का क्षेत्र। अन्य विज्ञान से सम्बन्ध। आर्थिक जीवन का विकास। आर्थिक नियम। 25 अंक
- 2—**उपभोग**—उपभोगिता, सीमान्त और कुल उपयोगिता ह्रास नियम, सम—सीमान्त उपयोगिता। मांग का नियम, मांग की लोच। आवश्यकतायें और उनका वर्गीकरण तथा लक्षण, पारिवारिक बजट और एंजिल का नियम, उपभोक्ता की बचत। बचत और व्यय का सम्बन्ध/व्यय का सामाजिक पक्ष। 25 अंक

खण्ड—ख

- 1—वाणिज्य भूगोल के मूल सिद्धान्तों का सामान्य परिचय—
1—प्राकृतिक स्थिति और बनावट, जलाशय, प्राकृतिक वनस्पति एवं मिट्टी। 25 अंक
- 2—मुख्य उद्योग धन्धे, लोहा और फौलाद तथा वस्त्र उद्योग धन्धे, वन और तत्सम्बन्धी उद्योग, कृषि एवं खनिज उद्योग। 25 अंक

पुस्तकें—कोई भी पुस्तक संस्तुत नहीं की गयी है। संस्था से प्रधान, विषय अध्यापक के परामर्श से पाठ्यक्रम के अनुरूप उपयुक्त पुस्तक का चयन कर लें।

गणित तथा प्रारम्भिक सांख्यिकी— कक्षा-11

इस विषय में एक प्रश्न-पत्र 100 अंकों का और समय तीन घंटे का होगा—

खण्ड—क

(क) सामान्य गणित—

समानुपात, प्रतिशत वर्तमान तुल्य और बट्टा विनिमय दर, साझा, लाभ—हानि, कमीशन, दलाली, प्रीमियम, सरल और चक्रवृद्धि ब्याज।

50 अंक

खण्ड—ख (सामान्य सांख्यिकी)

परिभाषा, क्षेत्र, महत्व और सांख्यिकी का अविश्वास। सांख्यिकीय नियमितता (Statistical Regularity) वृहत् संस्थाओं की जड़ता (Inertia of large numbers)] नियम।

50 अंक

पुस्तकें—कोई भी पुस्तक निर्धारित या संस्तुत नहीं की गयी है। विद्यालयों के प्रधान, विषय अध्यापक के परामर्श से पाठ्यक्रम के अनुरूप उपयुक्त पुस्तक का चयन कर लें।

नोट— खण्ड क एवं ख में प्रत्येक से 10-10 प्रश्न बहुविकल्पीय प्रत्येक 2 अंक एवं 8-8 प्रश्न प्रत्येक से 3-3 प्रश्न करना है। प्रत्येक प्रश्न 10 अंक।

बीमा सिद्धान्त एवं व्यवहार— कक्षा-11

इस विषय में एक प्रश्न-पत्र 100 अंकों का और समय तीन घंटे का होगा—

- | | |
|---|--------|
| 1—भारत में बीमा/व्यवसाय का उद्गम एवं विकास। | 06 अंक |
| 2—बीमा की परिभाषा, विशेषतायें एवं महत्व। | 08 अंक |
| 3—बीमा के विभिन्न प्रकार। | 06 अंक |
| 4—बीमा संविदा के प्रमुख सिद्धान्त। | 10 अंक |
| 5—जीवन बीमा की परिभाषा, लक्षण तथा महत्व। | 06 अंक |
| 6—जीवन बीमा पत्रों के विभिन्न प्रकार एवं उनकी विशेषताएं | 08 अंक |
| 7—जीवन बीमा कराने की विधि। | 06 अंक |
| 8—जीवन बीमा प्रीमियम निर्धारित करने वाले प्रमुख तत्व। | 08 अंक |
| 9—जीवन बीमा की प्रमुख शर्तें। | 08 अंक |
| 10—भारतीय जीवन बीमा निगम का निर्माण एवं संगठन। | 08 अंक |
| 11—जीवन बीमा से सम्बन्धित निम्नलिखित पर संक्षेप में अध्ययन— | 09 अंक |
| (1) समर्पण मूल्य। | |
| (2) बीमा-पत्र में परिवर्तन। | |
| (3) चुकता बीमा-पत्र। | |
| (4) दोहरी दुर्घटना एवं असमर्थता लाभ। | |
| (5) वेतन बचत योजना। | |
| (6) बीमा-पत्र की जमानत पर ऋण। | |
| (7) खोये हुये बीमा-पत्र। | |
| (8) बिना डाक्टरी जांच के बीमा। | |
| (9) बीमा-पत्रों का पुनर्चलन। | |

- 12—ग्रामीण क्षेत्रों में जीवन बीमा को अधिक लोकप्रिय बनाने के उपाय। 09 अंक
13—जीवन बीमा विक्रय कला (सेल्समैन शिप)। 08 अंक

शस्य विज्ञान— कक्षा—11

शस्य विज्ञान विषय में एक प्रश्न-पत्र 70 अंको का होगा। लिखित परीक्षा के अतिरिक्त 30 अंकों की एक प्रयोगात्मक परीक्षा भी होगी।

खण्ड—क 35 पूर्णांक

(कृषि शस्य विज्ञान—साधारण फसलें, मिट्टी तथा खाद)

1—मिट्टियाँ—मिट्टियों की उत्पत्ति, मिट्टियों की बजरी, बलुई, दोमट, सिल्ट तथा चिकनी मिट्टी में वर्गीकरण, मिट्टी के भौतिक गुण, मिट्टी की रचना पर भौतिक एवं रासायनिक कारकों का प्रभाव। भूमि संरक्षण की विभिन्न विधियों के मूल सिद्धान्त। 15 अंक

2—खाद तथा खाद देना, पौधों की वृद्धि के लिये आवश्यक पोषाहार, खेत की मुख्य फसलों द्वारा मिट्टी से ली जाने वाली नाइट्रोजन, फासफोरस तथा पोटाश की मात्रा, खाद देने की आवश्यकता, जैव तथा अजैव खाद फसलों तथा मिट्टियों पर उनके प्रभाव सम्बन्धी अन्तर, खाद तथा उर्वरकों के डालने की विधियाँ, गोबर की खाद तथा कम्पोस्ट खाद का संरक्षण, हरी खाद की फसलें और उनके उपयोग, मिन् खदों का अध्ययन तथा प्रति हेक्टेयर मात्रा गणना करना— 20 अंक

गोबर की खाद, कम्पोस्ट, अरण्डी खली, मूंगफली की खली, अमोनिया सल्फेट, सुपर फास्फेट, पोटैशियम सल्फेट, यूरिया, सी0 ए0 एन0 तथा मिश्रित खाद, डाई अमोनिया सल्फेट।

खण्ड—ख 35 पूर्णांक

(सिंचाई, जल निकास एवं शाक तथा फल संवर्धन)

1—सिंचाई तथा जल निकास—फसलों को पानी की आवश्यकता, जलमान प्रसव एवं उसका मिट्टीकरण, आकार के सम्बन्ध, सिंचाई, जल के गुण और उनके प्रभाव। 10 अंक

2—सिंचाई की प्रणालियाँ एवं विधियाँ—भराव सिंचाई, थाला विधि, बौछारी सिंचाई, उठाव सिंचाई एवं तोड़ सिंचाई, पट्टी सिंचाई (बार्डर विधि) प्रत्येक के लाभ और सीमायें। 10 अंक

3—सिंचाई—जल की माप की कटाव एवं कुलावा, हेक्टेयर, सेमी0, मीटर माप की प्रणाली। 08 अंक

4—जल निकास की आवश्यकता—मिट्टी में अतिनमी से हानियाँ, भूमि विकास एवं सुधार (क्षारीय तथा अम्लीय मिट्टियाँ, उनका बनाना, रोकथाम एवं सुधार)। 07 अंक

पुस्तकें—

कोई पुस्तक निर्धारित या संस्तुत नहीं की गयी है। विद्यालय के प्रधान सम्बन्धित विषय अध्यापक के परामर्श से पाठ्यक्रम के अनुरूप उपयुक्त पुस्तक का चयन कर लें।

शस्य विज्ञान (व्यवसायिक वर्ग)

अधिकतम अंक : 30

न्यूनतम उत्तीर्णांक : 10

समय : 03 घंटा

निर्धारित अंक

- 1—बीज या सब्जी के लिये बीज तैयार करना— 04 अंक
2—पहचान—मिट्टी, बीज, फल, खर—पतवार, खाद, रोग, दवायें— 04 अंक
3—फसलों का उत्पादन, लागत, उपज एवं लाभ की प्रति हेक्टेयर गणना करना— 03 अंक
4—प्रयोग आधारित मौखिकी— 04 अंक
5—वर्ष भर में किये गये कार्यों का सत्रीय मूल्यांकन— 05 अंक
6—जुताई, खेत तैयार करना (हल, कल्टीवेटर या हरी खाद)— 04 अंक

सामान्य आधारीक विषय- कक्षा-11 (व्यावसायिक वर्ग)**परिचय-**

राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 1986 के अनुसार 2 स्तर पर व्यावसायिक शिक्षा के प्रमुख उद्देश्य निम्नवत् हैं-

- 1-शिक्षा की विविध धाराओं के अध्ययन का अवसर उपलब्ध कराना जिससे कि स्वरोजगार को बढ़ाया जा सके।
- 2-तकनीकी जनशक्ति की मांग और आपूर्ति के असंतुलन को कम करना।
- 3-लक्ष्यविहीन उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्रों को एक विकल्प प्रदान करना।

सारांश में उपर्युक्त उद्देश्यों पर आधारित व्यावसायिक शिक्षा से यह अपेक्षा की जाती है कि वह समाज में ऐसे व्यक्तियों का निर्माण कर सकेगी, जिनके पास अपने स्वयं के विकास के विस्तृत ज्ञान का स्रोत एवं प्रशिक्षण होगा, युवा शक्ति को लाभकारी रोजगार देकर उनमें निरुत्साह की भावना को समाप्त करने अथवा कम करने में सहयोगी हो सकेगी, उद्यमिता के प्रति एक स्वस्थ भावना का विकास, आत्मविश्वास तथा व्यावसायिक जागरूकता उत्पन्न कर सकेगी।

स्थूल रूप से व्यावसायिक शिक्षा केवल किसी एक व्यवसाय (ट्रेड) छात्रों में रुचि उत्पन्न कर ज्ञान बोध एवं कौशल प्राप्त करने की ओर ही नहीं आकर्षित करती है, वरन् इसके अतिरिक्त निम्नलिखित उद्देश्यों की भी शिक्षा प्रदान करती है-

- 1-वातावरण तथा वातावरण के विकास के प्रति जागरूकता।
- 2-वैज्ञानिक तथा तकनीकी परिवर्तनों के कारण वातावरण में होने वाले परिवर्तन के प्रति पहले से जानकारी होना।
- 3-अपने समाज की आवश्यकता तथा विकास के परिप्रेक्ष्य में व्यावसायिक शिक्षा जीवनपर्यन्त शिक्षा तंत्र के एक अंश के रूप में समझना।

व्यावसायिक शिक्षा छात्रों को वेतनभोगी अथवा स्वरोजगार दो प्रकार के व्यवसायों के लिये तैयार करती है किन्तु उनमें से अधिकांश छात्र स्वरोजगार हेतु अपने स्वयं के प्रतिष्ठानों को स्थापित करने में आवश्यक आत्मविश्वास की कमी रखते हैं, जबकि इसे स्वीकार किया जाना चाहिये कि आगामी आने वाले वर्षों के कुछ सामाजिक तथा आर्थिक समस्याओं का समाधान ढूढ़ने में स्वरोजगार की एक आवश्यक भूमिका होगी। अतः यह आवश्यक है कि व्यावसायिक शिक्षा को उद्यमिता विकास कार्यक्रमों द्वारा स्वरोजगार से जोड़ा जाये।

आज की शिक्षण संस्थाएँ तथा समाजसेवी संस्थाओं का प्रमुख उद्देश्य छात्रों को वेतनभोगी रोजगार के लिये तैयार करना है जिसके फलस्वरूप छात्रों में रचनात्मक (Creativity)] लगन (Perseverance)] स्वतंत्रता (Independence)] अन्तःदृष्टि (Visions) एवं नव-निर्माण की प्रवृत्ति (Innovativeness) जो उद्यमिता विकास के प्रमुख लक्षण हैं, उनको प्रोत्साहन नहीं मिल पाता है, जबकि व्यावसायिक शिक्षा का उद्देश्य छात्रों द्वारा अपने व्यवसाय (ट्रेड) से सम्बन्धित उद्यमिता के अवसरों का आभास करना, स्वरोजगार के क्रिया-कलापों की व्यवस्था करना तथा अपने प्रतिष्ठानों को प्रभावी व्यवस्था करने में प्रशिक्षण दिया जाना है। उद्यमिता विकास के कार्यक्रमों के विशिष्ट रूप निम्नवत् हैं-

- (1) छात्रों में वेतनभोगी रोजगार के अतिरिक्त विकल्प के रूप में उद्यमिता (स्वरोजगार) की अनुभूति एवं कल्पना करने की क्षमता का विकास करना।
- (2) उद्यमिता (स्वरोजगार) प्रारम्भ करने हेतु प्रोत्साहित होकर उनमें भावना तथा क्षमतायें विकसित करना जो स्वरोजगार भविष्य को प्रारम्भ करने तथा उसकी स्थापना करने के लिये आवश्यक है।
- (3) उद्यमिता (स्वरोजगार) के अवसरों को खोज करने के लिये अन्तर्दृष्टि का विकास करना।

4-उद्यम सम्बन्धी (स्वरोजगार), साहस को संगठित करने तथा उसे सफलतापूर्वक चलाने हेतु छात्रों में क्षमता का विकास करना।

उपर्युक्त उद्देश्यों को दृष्टिगत रखते हुये व्यावसायिक शिक्षा पढ़ने वाले छात्रों के लिये सामान्य आधारिक विषय के अन्तर्गत निम्नलिखित दो प्रमुख घटकों को रखा गया है-

- (1) वातावरणीय शिक्षा तथा ग्रामीण विकास।
- (2) उद्यमिता का विकास।

सामान्य आधारिक विषय हेतु निर्धारित 15 प्रतिशत समय में से 5 प्रतिशत समय वातावरणीय शिक्षा तथा ग्रामीण विकास हेतु तथा 15 प्रतिशत समय उद्यमिता के विकास हेतु निर्धारित किया गया है। इनके पाठ्यक्रमों का विस्तार आगे किया जा रहा है।

सामान्य आधारिक विषय में 100 अंकों का एक प्रश्न-पत्र तीन घंटे का होगा।

खण्ड-क (50 अंक)

(पर्यावरणीय शिक्षा एवं ग्रामीण विकास)

(1) पर्यावरणीय शिक्षा-

- (1) पर्यावरणीय संसाधन (शक्ति/ऊर्जा, वायु, जल, मिट्टी, खनिज, पौध तथा जन्तु) निहित क्षमता, सन्दोहन के प्रभाव। 8 अंक
- (2) संसाधनों और संख्या के मध्य जनसंख्या विस्फोट और असामंजस्य, आधारभूत मानव आवश्यकताओं और महत्वाकांक्षा उद्देश्यों की अभिलाषा को प्राप्त करने हेतु पर्यावरण की मांग और पर्यावरण पर इसका प्रभाव। 8 अंक
- (3) औद्योगीकरण का पर्यावरण पर प्रभाव- 4 अंक
 - (क) प्राकृतिक दृश्य का अनुत्क्रमणीय परिवर्तन।
 - (ख) पर्यावरण का अतिक्रमण/अवक्रमण और इनके प्रभाव।
- (4) आधुनिक कृषि का पर्यावरण पर प्रभाव- 8 अंक
 - क-अधिक उपज प्रदान करने वाली किस्मों का प्रयोग एवं अनुवांशिक स्रोतों से वंचित करना।
 - ख-नहर द्वारा सिंचाई और जलाक्रांति (वाटर लागिंग)।
 - ग-उर्वरकों एवं कीटनाशकों का प्रयोग और पर्यावरण पर इसके प्रभाव।
 - घ-कीटनाशकों के उत्पादन, भण्डारण, प्रेषण एवं निस्तारण में जोखिम उठाना।
- (5) भूमि प्रयोग, मृदा अवक्रमण, जनसंख्या दबाव और वनों की क्षीणता, घास के मैदान एवं फसल के खेत। 4 अंक
- (6) जलवायु और मृदा का पर्यावरणीय प्रदूषण और जीवित संसार पर इसके प्रभाव। 2 अंक
- (7) खतरनाक औद्योगिक एवं कृषि उत्पाद- 2 अंक
 - 7.1-उनके प्रयोग से सम्बन्धित सुरक्षा एवं स्वास्थ्य सम्बन्धित आपदायें।
 - 7.2-प्रयोग करने का पर्यावरण पर प्रभाव।
- (8) चिकित्सीय तकनीकी का दुरुपयोग एवं दवाओं के दुरुपयोग। 2 अंक
- (9) सामग्रियों के गुण (जैव अवक्रमण और अवक्रमण रहित)। 2 अंक

(2) ग्रामीण विकास-

- (1) भारतवर्ष में भूमि उपयोग के पार्श्वदृश्य (चित्रण)। 2 अंक
- (2) आर्थिक पिछड़ेपन के कारण, गरीबी ग्रस्त क्षेत्र। 2 अंक
- (3) निवेशों (इनपुट) को सुधार कर कृषि उत्पादकता बढ़ाने के उपाय। 2 अंक
- (4) वनारोपण-वन लगाना, सामाजिक एवं फार्म वानकी पर्यावरणीय सामाजिक और आर्थिक वृद्धि। 2 अंक

(5) ग्रामीण कूड़े-कचरे का पुनः उपयोग जैसे गोबर गैस संयंत्र, कम्पोस्ट खाद का निर्माण। 2 अंक

खण्ड-ख

(50 अंक)

उद्यमिता विकास

1-व्यवसाय में उद्यमिता का बोध कराना-

8 अंक

1-व्यवसाय (कैरियर कन्सास) सम्बन्धी सामान्य चर्चा, उसके विद्यालय एवं चुने हुये व्यवसाय की अनिवार्यता।

2-व्यावसायिक धारा के अन्तर्गत वैकल्पिक जीविकोपार्जन के साधन तथा वेतनभोगी एवं स्व रोजगार।

3-उद्यमिता की गतिशीलता-

(1) व्यवसाय में उद्यम का महत्व एवं उपादेयता।

(2) उद्यमिता की विशेषतायें/महत्व/कार्य एवं प्रतिफल (पुरस्कार)।

(4) भारतीय संस्कृति में उद्यमिता, भारतीय संस्कृति का स्वरूप-

(1) उद्यमिता का महत्व तथा स्वरूप, भारतीय संस्कृति में उद्यमिता का महत्व तथा स्वरूप।

(2) उत्पाद तथा उपयोगी अवधारणा।

(3) सादा जीवन एवं उच्च विचार तदनुसार आचरण।

2-उद्यमिता के मूल्य-

4 अंक

(1) मूल्य एवं मानव व्यवहार से सम्बन्धित मूल्यों का बोध कराना।

(2) उद्यमिता में मूल्यों का बोध-

(1) नवीन स्थिति।

(2) स्वतंत्रता।

(3) समुन्नत प्रदर्शन।

(4) कार्य के प्रति निष्ठा।

(3) उद्यमिता सम्बन्धी मूल्यों के क्रिया-कलापों को परिचित कराना।

3-विभिन्न प्रकार के उद्यमिता सम्बन्धी प्रवृत्तियों की धारणायें एवं उनकी सार्थकता-

6 अंक

1-कल्पना शक्ति/अन्तर्ज्ञान का प्रयोग।

2-सामान्य जोखिम उठाना।

3-अभिव्यक्ति एवं कार्य की स्वतंत्रता का लाभ उठाना।

4-आर्थिक अवसरों को खोजना।

5-सफलतापूर्वक पूरे किये गये कार्यो से संतुष्टि प्राप्त करना।

6-विश्वास करना कि ये पर्यावरण को परिवर्तित कर सकते हैं।

7-पहल करना।

8-स्थिति का विश्लेषण करना एवं कार्य योजना बनाना।

9-कार्य में लगे रहना।

10-क्रिया-कलाप।

4-व्यावहारिक क्षमतायें-

6 अंक

1-नवीन स्थिति से अवगत होना एवं जोखिम उठाना।

2-संदिग्धताओं को सहने की क्षमता।

3-समस्या-समाधान।

- 4-लगनशीलता ।
- 5-स्तर/कार्य प्रदर्शन की गुणवत्ता ।
- 6-सूचनाओं को प्राप्त करना ।
- 7-व्यवस्थित योजना ।
- 8-क्रिया-कलाप ।

5-उद्यमिता अभिप्रेरणा-

8 अंक

- 1-स्वयं के बारे में आंकड़े एकत्रित करना ।
- 2-उद्यमिता के व्यवस्था एवं अभिप्रेरणा के ढंग/तरीकों से परिचित कराना ।
 - (1) उद्यमिता सम्बन्धी कौशल एवं व्यवहार का प्रत्यावाद/ज्ञान देना ।
- 3-जोखिम उठाने की क्षमता, सफलता की आशा एवं असफलता का भय ।
 - (1) पश्च-पोषण से सीखना ।
- 4-समझाने की अभिप्रेरणा शक्ति, उपलब्धि, कल्पनायें, अभिप्रेरणा की प्रगाढ़ता, उपलब्धि, भाषा आदि ।
- 5-व्यक्तिगत कार्यक्षमता-
 - (1) व्यक्तिगत जीवन का लक्ष्य ।
 - (2) उद्यमिता से इसका सम्बन्ध ।
 - (3) नियंत्रण के स्थान (बिन्दु) ।
- 6-उद्यमिता के मूल्यों पर प्रत्यावाद करना (का ज्ञान देना) ।
- 7-उपलब्धि योजना ।
- 8-कार्य क्षमता पर प्रभाव ।
- 9-उद्यमिता सम्बन्धी लक्ष्यों को निर्धारित करना-
 - (1) उद्यमिता के उद्देश्य की सहभागिता ।
 - (2) उद्यमिता स्थापित करने हेतु उचित तर्कों का विकास ।
 - (3) कठिनाइयों का सामना करना ।
 - (4) सहायता प्राप्त करने की क्षमता में पुनर्बलन का विकास ।
- 10-सृजनात्मकता ।
- 11-समस्याओं का सामना करने की योग्यता को समझना एवं व्यवहार में लाना ।

6-उद्यम चलाने की क्षमता-

8 अंक

- 1-परियोजना का निर्धारण-
 - 1.1-बड़े पैमाने के उद्योग, मध्यमवर्गीय पैमाने के उद्योग एवं छोटे पैमाने के लिये उद्योग, लघु क्षेत्र, कुटीर उद्योग एवं ग्रामीण उद्योग की परिभाषायें ।
 - 1.2-परियोजनाओं का वर्गीकरण, निर्माण, कार्य सेवा, व्यापार करना, उपभोक्ता वस्तुयें, पूंजीगत वस्तु, सहायक वस्तु, प्रत्येक प्रकार के कार्यों का क्षेत्र एवं उनकी विशेषतायें ।
- 2-केन्द्रीय एवं राज्य सरकार की नीतियां, एस0 एस0 आई0 लघु क्षेत्र और नये उद्यमों के लिये कार्यक्रम एवं प्रोत्साहन ।
- 3-उद्योग धन्धे स्थापित करने के चरण ।
- 4-वर्तमान एवं भावी उद्योग धन्धों की सहायता प्रदान करने वाली संस्थाओं के सम्बन्ध में जानकारी-

- 4.1—डी० आई० सी० ।
- 4.2—उद्योग निदेशालय ।
- 4.3—तकनीकी सलाहकारों का संगठन ।
- 4.4—एस० एफ० सी० ।
- 4.5—एस० एस० आई० डी० सी० ।
- 4.6—आई० डी० सी० ।
- 4.7—एस० एस० आई० सी० ।
- 4.8—एस० आई० एस० आई० ।
- 4.9—व्यापारी बैंक ।
- 4.10—सहकारी बैंक ।
- 4.11—के० बी० आई० सी० इत्यादि ।

5—एस० एस० आई० के क्षेत्र में अनन्य उत्पादन हेतु उत्पादित वस्तुओं का आरक्षण ।

विद्यार्थियों को उत्पादित वस्तुओं की सूची बांट देनी चाहिये ।

7—विपणन (बाजार) की स्थिति का पता लगाना—

4 अंक

- 1—विपणन (बाजार) की स्थिति ज्ञात करने की आवश्यकता एवं महत्त्व ।
- 2—बाजार की स्थिति का पता लगाने के घटक एवं तकनीक—
 - 2.1—उत्पाद की प्रकृति ।
 - 2.2—मांग विश्लेषण और उपभोक्ता की आवश्यकताओं का पता लगाना ।
 - 2.3—पूर्ति विश्लेषण और बाजार की स्थितियां ।
 - 2.4—विपणन का अभ्यास, भण्डारण वितरण पैकिंग, साख नीति प्रेषण, व्यक्तिगत विपणन कला का चयन करना ।
- 3—बाजार को समझना, बाजार का विभक्तीकरण, उत्पाद विश्लेषण ।
- 4—उत्पाद का चयन करना और चयनित उत्पाद हेतु बाजार का सर्वेक्षण करना ।

8—परियोजना का चयन—

6 अंक

- 1—परियोजना की पहचान के लिये पहचान हेतु विचार—विमर्श ।
- 2—दिये गये विचारों के संक्षिप्तीकरण की प्रक्रिया ।
- 3—उत्पादन के अन्तिम चुनाव के कारकों पर विचार करना, मांग प्रतियोगी उत्पादन के कारकों की उपलब्धियां, सरकारी नीति, सीमान्त लाभ इत्यादि ।
- 4—क—शक्तियों, कमजोरियों, अवसरों एवं प्रशिक्षण का विश्लेषण—
 - 4—क—1—शक्तियां और कमजोरियां ।
 - 4—क—2—व्यक्तिगत शक्तियों और कमजोरियों का मूल्यांकन ।
 - 4—क—3—मुद्रा ।
 - 4—क—4—बाजार ।
 - 4—क—5—तकनीकी ज्ञान की जानकारी ।
- 4—ख—1—श्रम, सामग्री एवं क्षमतायें ।
- 4—ख—2—अवसर एवं प्रशिक्षण ।

4-ख-3-आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक एवं अन्तर्राष्ट्रीय पहलुओं की स्थिति के अध्ययन द्वारा प्रशिक्षण को पूर्ण करना एवं पर्यावरणीय छानबीन करना।

इतिहास

कक्षा-11

इसमें 100 अंकों का एक प्रश्नपत्र होगा। न्यूनतम उत्तीर्णांक-33

प्रश्नों के प्रकार	प्रश्नों की संख्या	अंक	योग
बहुविकल्पीय प्रश्न	10	1	10
अतिलघु उत्तरीय प्रश्न (अधिकतम 50 शब्द)	5	2	10
लघु उत्तरीय प्रश्न (अधिकतम 100 शब्द)	6	5	30
दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (अधिकतम 500 शब्द)	3	10	30
मानचित्र	5	02	10
ऐतिहासिक घटनाक्रम	10	01	10
	प्रश्नों की संख्या-39		योग - 100

ज्ञानात्मक	-	30%
बोधात्मक	-	40%
अनुप्रयोगात्मक	-	20%
कौशलात्मक	-	10%
सरल	-	30%
सामान्य	-	50%
कठिन	-	20%

विश्व इतिहास के मूल आधार-

इकाई-1 : प्रारम्भिक समाज

20 अंक

1. मानव जीवन के प्रारम्भ से अफ्रीका, यूरोप, 1500 ई0पू0 के विशेष सन्दर्भ में।

(क) मानव की उत्पत्ति से संबंधित विभिन्न मत

(ख) प्रारम्भिक समाज- शिकारी और संग्रहक युग

परिचर्चा- शिकारी और संग्रहक समाज पर।

2. प्रारम्भिक शहर

इराक तीसरी सहस्राब्दी ईसा पूर्व के विशेष सन्दर्भ में।

(क) शहरों का विकास

(ख) प्रारम्भिक शहरी समाज की प्रकृति

परिचर्चा-लेखन कला के विकास पर।

इकाई-2 : साम्राज्य

25 अंक

3. तीन महाद्वीपों में फैला हुआ साम्राज्य

रोमन साम्राज्य, 27 ई0पू0 से 600 ई0 के सन्दर्भ में।

- (क) राजनीतिक विकास
- (ख) आर्थिक समृद्धि
- (ग) धार्मिक सांस्कृतिक आधार
- (घ) उत्तर जीविता

परिचर्चा—दास प्रथा के विभिन्न आयाम।

4. **मध्य इस्लामिक क्षेत्र – 7वीं से 12वीं शताब्दी के विशेष परिप्रेक्ष्य में।**

- (क) राजनीति
- (ख) अर्थनीति
- (ग) संस्कृति

परिचर्चा— धर्मयुद्धों की प्रकृति पर संगोष्ठी।

5. **यायावर (खानाबदोश) साम्राज्य—**

तेरहवीं से चौदहवीं शताब्दी के मंगोलों के विशेष संदर्भ में।

- (क) यायावरी (खानाबदोशी) की प्रकृति
- (ख) साम्राज्यों का निर्माण
- (ग) अन्य राज्यों से सम्बन्ध और विजयें

परिचर्चा—यायावार (खानाबदोश) समाजों और राज्य निर्माण के सम्बन्ध।

इकाई—3 : बदलती परम्परायें—

25 अंक

6. **तीन वर्ग (श्रेणी)**

मुख्यतः पश्चिमी यूरोप, 13वीं से 16वीं शताब्दी के विशेष सन्दर्भ में।

- (क) सामन्ती समाज और अर्थव्यवस्था
- (ख) राज्यों का गठन
- (ग) चर्च और समाज
- (घ) सामन्तवाद के पतन पर इतिहासकारों के विचार।

7. **बदलती हुयी सांस्कृतिक परम्परायें—**

14वीं से 17वीं शताब्दी के यूरोप के विशेष संदर्भ में—

- (क) साहित्य एवं कला में नये विचार एवं प्रतिमानों का उदय
- (ख) पूर्ववर्ती विचारों के साथ सहसम्बन्ध
- (ग) पश्चिम एशिया का योगदान

परिचर्चा—यूरोपीय पुनर्जागरण के विचार की वैधता पर इतिहासकारों के दृष्टिकोण।

8. **संस्कृतियों का टकराव**

अमेरिका 15वीं से 18वीं शताब्दी

- (क) यूरोपवासियों की खोज यात्रायें।
- (ख) स्वर्ण की खोज—दासता, छापेमारी उन्मूलन।
- (ग) देशज लोग और संस्कृति—अरावाक, एजटेक, इन्का।
- (घ) पारगमन (विस्थापन) का इतिहास

परिचर्चा—दास व्यापार के सम्बन्ध में इतिहासकारों के दृष्टिकोण।

इकाई-4 : आधुनिकीकरण की ओर

20 अंक

9. औद्योगिक क्रान्ति—

इंग्लैण्ड पर केन्द्रित 18वीं व 19वीं शताब्दी के विशेष परिप्रेक्ष्य में।

- (क) आविष्कार (नई खोजें) और तकनीकी परिवर्तन
- (ख) विकास के तरीके
- (ग) कामगार (श्रमिक) वर्ग का उदय

परिचर्चा—क्या यह औद्योगिक क्रान्ति थी?— इतिहासकारों के संवाद

10. मूल निवासियों का विस्थापन

उत्तरी अमेरिका और ऑस्ट्रेलिया, 18वीं से 20वीं शताब्दी के विशेष संदर्भ में।

- (क) उत्तरी अमेरिका और ऑस्ट्रेलिया में यूरोपीय उपनिवेश।
- (ख) श्वेत उपनिवेशवादी समाजों का गठन (White Settler Societies)
- (ग) स्थानीय निवासियों (मूल निवासियों) का विस्थापन एवं दमन।

परिचर्चा—यूरोपीय उपनिवेशवाद का मूल निवासियों पर प्रभाव' पर इतिहासकारों के दृष्टिकोण पर परिचर्चा।

11. आधुनिकीकरण का मार्ग—

पूर्वी एशिया 19वीं और 20वीं शताब्दी के उत्तरार्ध के विशेष संदर्भ में।

- (क) जापान में सैन्यवाद और आर्थिक विकास।
- (ख) चीन और साम्यवादी विकल्प।
- (ग) आधुनिकीकरण पर इतिहासकारों के विचार—विमर्श

12. मानचित्र कार्य – इकाई 1-4 05 प्रश्न प्रत्येक 02 अंक, 10 अंक

01 अंक सही उत्तर तथा 01 अंक सही स्थान हेतु निर्धारित है। दृष्टिबाधित छात्र-छात्राओं के लिये मानचित्र कार्य के स्थान पर 05 प्रश्न प्रत्येक 02 अंकों के रखे जायं।

विषय : नागरिक शास्त्र

कक्षा-11

केवल प्रश्न-पत्र

अधिकतम अंक : 100

समय : 3 घण्टे

खण्ड 'क'	भारत का संविधान : सिद्धान्त और व्यवहार	अंक
1. (1)	संविधान क्यों और कैसे और संविधान दर्शन	12
(2)	भारतीय संविधान में अधिकार	
2. (1)	चुनाव और प्रतिनिधित्व	10
(2)	कार्यपालिका	
3. (1)	विधायिका	10
(2)	न्यायपालिका	
4. (1)	संघवाद	10
(2)	स्थानीय शासन	
5.	संविधान : एक जीवंत दस्तावेज	8

	योग	50 अंक
खण्ड 'ख'	राजनीतिक सिद्धान्त	
6. (1)	राजनीतिक सिद्धान्त : एक परिचय	10
(2)	स्वतंत्रता	
7. (1)	समानता	10
(2)	सामाजिक न्याय	
8. (1)	अधिकार	10
(2)	नागरिकता	
9. (1)	राष्ट्रवाद	10
(2)	धर्मनिरपेक्षता	
10. (1)	शांति	10
(2)	विकास	
	योग	50 अंक

कक्षा-11

1. प्रश्नों के प्रकार

प्रश्नों के प्रकार	प्रश्नों की संख्या	अंक	कुल अंक
बहुविकल्पीय प्रश्न	10	1	10
अतिलघु उत्तरीय प्रश्न	10	2	20
लघु उत्तरीय प्रश्न	06	5	30
दीर्घ लघु उत्तरीय प्रश्न	04	6	24
दीर्घ उत्तरीय प्रश्न	02	8	16
	प्रश्नों की संख्या-32		योग - 100

2. प्रश्नों के स्वरूप पर बल

क्रमांक	प्रश्नों का प्रकार	अंक	अनुमानित प्रतिशत
1.	ज्ञानात्मक	40	40:
2.	बोधात्मक	40	40:
3.	अनुप्रयोगात्मक	20	20:
	योग-	100	100:

3. प्रश्नों की कठिनाई स्तर पर बल

क्रमांक	विलिप्तता स्तर	अंक	प्रतिशत
1.	सरल	30	30:
2.	सामान्य	50	50:
3.	कठिन	20	20:
	योग-	100	100:

कक्षा-11

पूर्णांक 100

खण्ड 'क' भारत का संविधान : सिद्धान्त एवं व्यवहार

50

इकाई-1

12 अंक

(1) संविधान क्यों और कैसे? और संविधान का दर्शन—

संविधान क्यों और कैसे? संविधान का निर्माण; संविधान सभा, प्रक्रियात्मक उपलब्धि; संविधान दर्शन।

(2) भारतीय संविधान में अधिकार—

अधिकारों का महत्व; भारतीय संविधान में मूल अधिकार राज्य के नीति-निदेशक तत्व; मूल अधिकार एवं नीति-निदेशक तत्वों के पारस्परिक संबंध।

इकाई-2

10 अंक

(1) चुनाव और प्रतिनिधित्व—

चुनाव और लोकतंत्र, भारत में चुनाव-प्रणाली; निर्वाचन क्षेत्रों का आरक्षण; स्वतंत्र एवं निष्पक्ष चुनाव; चुनाव सुधार।

(2) कार्यपालिका—

कार्यपालिका क्या है? विभिन्न प्रकार की कार्यपालिका; भारत में संसदीय कार्यपालिका; प्रधानमंत्री और मन्त्रिपरिषद; स्थायी कार्यपालिका : नौकरशाही।

इकाई-3

10 अंक

(1) विधायिका—

संसद की आवश्यकता क्यों होती है। द्विसदनात्मक संसद; संसद के कार्य तथा शक्तियाँ, विधायी कार्य; कार्यपालिका पर नियंत्रण; संसदीय समितियाँ : स्व नियमन।

(2) न्यायपालिका—

हमें एक स्वतंत्र न्यायपालिका की आवश्यकता क्यों है? न्यायपालिका की संरचना; न्यायिक सक्रियतावाद; न्यायपालिका एवं अधिकार; न्यायपालिका एवं संसद।

इकाई-4

(1) संघवाद—

संघवाद क्या है? भारतीय संविधान में संघवाद; एक शक्तिशाली केन्द्र के साथ संघवाद; भारत की संघीय प्रणाली के द्वंद; विशेष प्रावधान।

(2) स्थानीय शासन—

हमें स्थानीय शासन की आवश्यकता क्यों है? भारत में स्थानीय शासन का विकास; 73वाँ एवं 74वाँ संविधान संशोधन; 73वें एवं 74वें संविधान संशोधन का क्रियान्वयन।

इकाई-5

(1) संविधान एक जीवंत दस्तावेज—

क्या संविधान अपरिवर्तनीय होते हैं? संविधान में संशोधन की प्रक्रिया। संविधान में इतने संशोधन क्यों किये गये? संविधान की मूल संरचना तथा उसका विकास। संविधान : एक जीवंत दस्तावेज के रूप में।

(2) संविधान का राजनीतिक दर्शन— संविधान—लोकतान्त्रिक बदलाव का साधन, हमारे संविधान का

राजनीतिक दर्शन
क्या है?

खण्ड 'ख' राजनीतिक सिद्धान्त

इकाई-6

(1) राजनीतिक सिद्धान्त- एक परिचय-

10 अंक

राजनीति क्या है? राजनीतिक सिद्धान्त में हम क्या अध्ययन करते हैं? राजनीतिक सिद्धान्त को व्यवहार में लाना। राजनीतिक सिद्धान्त के अध्ययन के उद्देश्य।

(2) स्वतन्त्रता-

स्वतन्त्रता का आदर्श; स्वतन्त्रता क्या है? हमें प्रतिबन्धों की आवश्यकता क्यों है? 'हानि सिद्धांत'। नकारात्मक एवं सकारात्मक स्वतन्त्रता।

इकाई-7

(1) समानता-

10अंक

समानता का महत्व; समानता क्या है? समानता के विभिन्न आयाम; हम समानता को बढ़ावा कैसे दे सकते हैं?

(2) सामाजिक न्याय-

न्याय क्या है? न्याय की सुलभता (न्यायपूर्ण वितरण); निष्पक्ष न्याय; सामाजिक न्याय का अनुसरण।

इकाई-8

(1) अधिकार-

10अंक

अधिकार क्या है? यह कहाँ से आते हैं? कानूनी अधिकार और राज्य; अधिकारों के प्रकार; अधिकार और उत्तरदायित्व।

(2) नागरिकता-

नागरिकता क्या है? नागरिकता और राष्ट्र; सार्वभौमिक नागरिकता; वैश्विक नागरिकता।

इकाई-9

(1) राष्ट्रवाद-

10अंक

राष्ट्र और राष्ट्रवाद; राष्ट्रीय आत्म-निर्णय ; राष्ट्रवाद और बहुलवाद।

(2) धर्मनिरपेक्षता-

धर्मनिरपेक्षता क्या है? धर्म-निरपेक्ष राज्य क्या है? धर्मनिरपेक्षता पर भारतीय एवं पाश्चात्य दृष्टिकोण। भारतीय धर्मनिरपेक्षता : आलोचना एवं तर्क।

इकाई-10

(1) शांति-

10अंक

शांति का अर्थ; क्या हिंसा कभी शांति को प्रोत्साहित कर सकती है? शांति और राज्यसत्ता; शांति कायम करने के विभिन्न तरीके; शांति के समक्ष समकालीन चुनौतियाँ।

(2) विकास—

विकास क्या है? प्रभावी विकास का मॉडल एवं विकास की वैकल्पिक अवधारणायें।

मनोविज्ञान

कक्षा—11

100 अंको का एक प्रश्न-पत्र होगा, जिसकी अवधि तीन घण्टे होगी। न्यूनतम उत्तीर्णांक—33

खण्ड—क (सामान्य मनोविज्ञान)

50 अंक

1—मनोविज्ञान का अर्थ, परिभाषा, क्षेत्र।

07 अंक

2—मनोविज्ञान अध्ययन की पद्धतियाँ—अन्तर्दर्शन, निरीक्षण, प्रयोगात्मक तथा नैदानिक विधि।

08 अंक

3—व्यवहार के अभिप्रेरणात्मक एवं संवेगात्मक आधार अभिप्रेरणा—अर्थ स्वरूप, मौलिक अभिप्रेरणात्मक, सम्प्रत्यक्ष प्रकार (जन्मजात एवं अर्जित प्रेरक), आन्तरिक तथा वाह्य अभिप्रेरण, सम्वेग का अर्थ, विशेषतायें, सम्वेग में शारीरिक परिवर्तन, विभिन्न मत।

15 अंक

4—अवधानात्मक तथा प्रत्यक्षात्मक प्रक्रियायें—अवधान प्रकृति, विस्तार, विशेषतायें, प्रकार बोधात्मक कारक प्रत्यक्षीकरण—अर्थ, प्रकृति प्रत्यक्षीकरण तथा सम्वेदना में भिन्नता, प्रारम्भिक संगठन के नियम, आकृति, प्रत्यक्षीकरण, रंग प्रत्यक्षीकरण भ्रम एवं विभ्रम।

14 अंक

5—मनोविज्ञान में प्रयोग—

06 अंक

(1) प्रत्यक्षीकरण में तत्परता।

(2) अवधान विस्तार।

खण्ड—ख (व्यावहारिक मनोविज्ञान)

50 अंक

1—भारतीय स्थितियों के विशेष सन्दर्भ में शैक्षिक, व्यावसायिक, व्यक्तिगत निर्देशन, उत्तर प्रदेश में निर्देशन सेवा।

12 अंक

2—मानसिक स्वास्थ्य विज्ञान—अर्थ, क्षेत्र एवं उपयोगिता, वास्तविक स्वास्थ्य क्या है ? मानसिक अस्वस्थता के कारण, शोधक एवं प्रतिबन्धात्मक उपाय।

08 अंक

3—बाल अपराध—

10 अंक

(क) कारण—पर्यावरणीय एवं मनोविज्ञान।

(ख) शोधक उपाय परीक्षा—परिवीक्षण काल, सुधार गृह, मनोचिकित्सा।

4—उद्योग में मनोविज्ञान—कर्मचारियों के चयन, कार्य की दशायें तथा पदोन्नति के अवसर, प्रशासन तथा कल्याणकारी कार्यों के लिये सन्दर्भ में उद्योग एवं मानवीय सम्बन्ध, हड़ताल एवं तालाबन्दी/विज्ञापन तथा उद्योग का सम्बन्ध।

12 अंक

5—मनोविज्ञान में सांख्यिकीय गणना—सांख्यिकी का अर्थ, स्वरूप, उपयोगिता, आंकड़ों का व्यवस्थापन, केन्द्रीय प्रवृत्ति के माप, माध्यमान, मध्यांक तथा बहुलक।

08 अंक

पुस्तकें—

कोई भी पुस्तक निर्धारित या संस्तुत नहीं की गयी है। विद्यालयों के प्रधान विषय अध्यापक के परामर्श से पाठ्यक्रम के अनुरूप उपयुक्त पुस्तक का चयन कर लें।

कक्षा—11 अर्थशास्त्र

केवल प्रश्न पत्र न्यूनतम उत्तीर्णांक—33

पूर्णांक : 100

खण्ड-क

सांख्यिकी : अर्थशास्त्र के संदर्भ में

- | | |
|--|--------|
| (1) परिचय। | 05 अंक |
| (2) आंकड़ों का संग्रहण, व्यवस्थीकरण एवं उनका प्रस्तुतिकरण। | 32 अंक |
| (3) सांख्यिकीय उपकरण एवं उनका अर्थ। | 13 अंक |

खण्ड-ख – भारत का आर्थिक विकास

- | | |
|--|--------|
| (4) विकास के अनुभव (1947–1990) एवं 1991 से प्रारम्भ हुये आर्थिक सुधार। | 17 अंक |
| (5) भारतीय अर्थव्यवस्था के समय वर्तमान चुनौतियाँ। | 25 अंक |
| (6) भारत का अपना विकास का अनुभव-पड़ोसी देशों से तुलना। | 08 अंक |

खण्ड-क – सांख्यिकी : अर्थव्यवस्था के सन्दर्भ में

- | | | |
|---------------|---|--------|
| इकाई-1 | (1) अर्थशास्त्र क्या है? | 05 अंक |
| | (2) अर्थशास्त्र की परिभाषा, उसकी सम्भावनायें, कार्य एवं अर्थशास्त्र में सांख्यिकी का महत्व। | |

- | | | |
|---------------|--|--------|
| इकाई-2 | आंकड़ों का संग्रहण, व्यवस्थीकरण एवं प्रस्तुतिकरण | 32 अंक |
|---------------|--|--------|

- (1) **आंकड़ों का संग्रहण**— आंकड़ों का स्रोत—प्रारम्भिक एवं द्वितियक आंकड़े। आधारभूत आंकड़ा किस प्रकार से एकत्र किया जाता है। निदर्शन (Sampling) का सिद्धान्त। निदर्शन एवं गैर निदर्शन त्रुटियाँ, विनिमय आंकड़ों के कुछ महत्वपूर्ण स्रोत। भारत की जनगणना एवं राष्ट्रीय प्रतिदर्श सर्वेक्षण संगठन। National Sample Survey Organisation.
- (2) **आंकड़ों का व्यवस्थीकरण** — परिवर्तनशीलता का अर्थ एवं उनके प्रकार, बारंबारता बंटन।
- (3) **आंकड़ों का प्रस्तुतिकरण** — आंकड़ों का तालिकावार एवं आरेखीय प्रस्तुतिकरण (1) ज्यामितीय प्रकार—दंड आरेख, वृत्त चित्र (2) आवृत्ति आरेख — आयत चित्र (Histogram) बहुभुज (Polygram) एवं चाप विकर्ण (Ogive) (3) समय-श्रेणीक्रम — लेखा चित्र (Time- Series graph)

- | | | |
|---------------|---------------------------------------|---------------|
| इकाई-3 | सांख्यिकीय उपकरण एवं उनके अर्थ | 13 अंक |
|---------------|---------------------------------------|---------------|

केन्द्रीय प्रवृत्ति के मापन, माध्य (सरल और भारित) माध्यक एवं बहुलक।

खण्ड-ख

भारत का आर्थिक विकास

- | | |
|---------------|---|
| इकाई-4 | विकास के अनुभव(1947–1990)एवं आर्थिक सुधार वर्ष 1991 से |
|---------------|---|

17 अंक

1— स्वतंत्रता प्राप्ति की संध्या पर भारतीय अर्थव्यवस्था की स्थिति का संक्षिप्त परिचय। पंचवर्षीय योजनाओं के सामान्य लक्ष्य।

2— कृषि की प्रमुख विशेषतायें, समस्याएँ एवं नीतियाँ।

(ढाँचागत पक्ष एवं कृषि से संबंधित नवीन रणनीतियाँ आदि) उद्योग (औद्योगिक लाईसेन्स आदि) एवं विदेश व्यापार

1991 से आर्थिक सुधार

आवश्यकता एवं इसकी प्रमुख विशेषतायें— उदारीकरण, वैश्वीकरण एवं निजीकरण।

उदारीकरण, वैश्वीकरण एवं निजीकरण नीति का मूल्यांकन।

इकाई-5 भारतीय अर्थव्यवस्था के समक्ष वर्तमान चुनौतियाँ**25 अंक**

- 1— गरीबी – पूर्ण एवं उसके सापेक्ष, गरीबी उन्मूलन के मुख्य कार्यक्रम— उनका आलोचनात्मक विश्लेषण।
- 2— ग्रामीण विकास – मुख्य बिन्दु—साख एवं विपणन—सहकारी समितियाँ, कृषि विविधता, वैकल्पिक खेती— जैविक खेती।
- 3— मानव पूंजी, उसका निर्माण— किस प्रकार से व्यक्ति साधन बन सकते हैं। आर्थिक विकास में मानव पूंजी की भूमिका, भारत में शिक्षा के क्षेत्र का विकास।
- 4— रोजगार— औपचारिक एवं गैर औपचारिक, वृद्धि एवं अन्य मुद्दे— समस्यायें एवं नीतियाँ – एक आलोचनात्मक विश्लेषण।
- 5— आधारीक संरचना : अर्थ एवं प्रकार, मामले का अध्ययन, ऊर्जा एवं स्वास्थ्य : समस्यायें एवं नीतियाँ : एक आलोचनात्मक विश्लेषण।
- 6— वहनीय आर्थिक विकास— अर्थ, आर्थिक विकास का संसाधनों एवं पर्यावरण पर प्रभाव जिसमें ग्लोबल वार्मिंग भी सम्मिलित है।

इकाई-6 भारत का विकास का अनुभव**08 अंक**

- 1— पड़ोसी देशों से तुलना
 - 2— भारत एवं पाकिस्तान
 - 3— भारत एवं चीन
- मुद्दे – विकास, जनसंख्या, क्षेत्रवार विकास एवं अन्य विकास के संकेतक।

विषय : भूगोल

कक्षा—11

1. लिखित (केवल प्रश्न-पत्र) समय : 3 घण्टा
अंक : 70
2. प्रयोगात्मक अंक : 30

खण्ड 'क'	भौतिक भूगोल के मूल सिद्धान्त		35 अंक
	इकाई-1 : एक विषय के रूप में भूगोल	05 अंक	30
	इकाई-2 : पृथ्वी	05 अंक	
	इकाई-3 : भू-आकृतियाँ	05 अंक	
	इकाई-4 : जलवायु	05 अंक	
	इकाई-5 : जल (महासागर)	05 अंक	
	इकाई-6 : पृथ्वी पर जीवन	05 अंक	
	मानचित्र कार्य एवं आरेख	05 अंक	05
खण्ड 'ख'	भारत : भौतिक पर्यावरण		35 अंक
	इकाई-7 : परिचय	07 अंक	05 अंक
	इकाई-8 : भू : आकृति विज्ञान	08 अंक	
	इकाई-9 : जलवायु, वनस्पति एवं मृदा	08 अंक	
	इकाई-10 : प्राकृतिक आपदायें एवं संकट	07 अंक	
	मानचित्र कार्य	05 अंक	
खण्ड 'ग'	प्रयोगात्मक कार्य एवं आरेख		30 अंक
	इकाई-1 : मानचित्र के आधारभूत तत्व		10 अंक
	इकाई-2 : स्थलाकृति एवं मौसम मानचित्र		15 अंक
	प्रयोगात्मक पुस्तिका एवं मौखिकी		05 अंक

खण्ड 'क'

भौतिक भूगोल के मूल सिद्धान्त

35 अंक

- इकाई-1 – एक विषय के रूप में भूगोल** **5 अंक**
- (1) भूगोल एक समाकलन विषय के रूप में; स्थानिक गुण विज्ञान के रूप में; भूगोल की शाखाएँ—भौतिक भूगोल एवं मानव भूगोल।
- (2) क्षेत्र एवं व्यवसायिक विकल्प।
- इकाई-2 – पृथ्वी—** **5 अंक**
- (1) पृथ्वी की उत्पत्ति एवं विकास, पृथ्वी का आंतरिक संरचना,
- (2) वेगनर का महाद्वीपीय विस्थापन सिद्धान्त, प्लेट विवर्तनिकी,
- (3) भूकम्प एवं ज्वालामुखी— कारण, प्रकार एवं प्रभाव।
- इकाई-3 – भू-आकृतियाँ—** **5 अंक**
- (1) खनिज एवं शैल— शैलों के प्रमुख प्रकार एवं विशेषताएँ;
- (2) भू-आकृतिक प्रक्रियाएँ— अपक्षय, वृहतक्षरण, अपरदन एवं निक्षेपण, मृदा—निर्माण।
- (3) भू-आकृतियाँ एवं उनका विकास।
- इकाई-4 – जलवायु—** **5 अंक**
- (1) वायुमंडल— संघटन एवं संरचना; मौसम एवं जलवायु के तत्व।

- (2) सूर्या-भिताप- आपतन कोण एवं वितरण, पृथ्वी का उष्मा बजट; वायुमंडल का गर्म एवं ठंडा होना (संचलन एवं संवहन, पार्थिव विकिरण अभिवहन)। तापमान- तापमान को प्रभावित (नियंत्रित) करने वाले कारक; तापमान का वितरण- क्षैतिज एवं ऊर्ध्वाधर; तापमान का व्युत्क्रमण।
- (3) वायुदाब - वायुदाब पेटियाँ, पवन- भू मण्डलीय, मौसमी एवं स्थानिक, वायुराशियाँ एवं वाताग्र; उष्ण कटिबंधीय, शीतोष्ण कटिबंधीय एवं चक्रवात।
- (4) वर्षण - वाष्पीकरण, संघनन- ओस, पाला, धुंध, कोहरा एवं मेघ; वर्षा-प्रकार एवं विश्व वितरण।
- (5) विश्व की जलवायु- वर्गीकरण (कोपेन), ग्रीनहाउस प्रभाव, भूंडलीय ऊष्मन एवं जलवायु परिवर्तन।
- (6) जलवायु एवं वैश्विक चिंतन।

इकाई-5 - जल (महासागर)-

5 अंक

- (1) जलीय चक्र।
- (2) महासागर - अन्तः समुद्री उच्चावच, तापमान एवं लवणता।
- (3) महासागरीय-तरंगे, समुद्री धाराएं।

इकाई-6 - पृथ्वी पर जीवन-

5 अंक

- (1) जैवमंडल - पादप एवं अन्य जीवों की विशेषताएँ, जैवविविधता एवं संरक्षण, पारिस्थितिक तंत्र एवं पारिस्थितिक संतुलन। जैव-भू रासायनिक चक्र।

मानचित्र-

5 अंक

भारत के रूपरेखीय/प्राकृतिक/राजनैतिक मानचित्र पर इकाई 1 से 6 की विशेषताओं को चिन्हित करने सम्बन्धी मानचित्र कार्य-

1/2 अंक सही स्थान एवं 1/2 अंक सही उत्तर हेतु। दृष्टिबाधित परीक्षार्थियों हेतु मानचित्र से संबंधित 05 प्रश्न पूछे जायेंगे।

खण्ड 'ख'

भारत : भौतिक पर्यावरण

30 अंक

इकाई-7 -परिचय

7 अंक

- (1) स्थिति, विश्व में भारत का स्थान एवं आंतरिक सम्बन्ध।

इकाई-8 -भू-आकृति विज्ञान-

8 अंक

- (1) संरचना एवं उच्चावच; भू-आकृतिक विभाजन।
- (2) अपवाह-तंत्र; जल-विभाजक संकल्पना; हिमालीय एवं प्रायद्वीपीय नदियाँ।

इकाई-9 -जलवायु, वनस्पति एवं मृदा-

8 अंक

- (1) मौसम एवं जलवायु- तापमान, वायुदाब, पवन और वर्षा का स्थानिक एवं कालिक वितरण।
- (2) भारतीय मानसून- क्रियाविधि : आरंभ एवं परिवर्तिता; वर्षा की परिवर्तनशीलता; स्थानिक एवं कालिक; जलवायु के प्रकार।
- (3) प्राकृतिक वनस्पति- वनों के प्रकार एवं वितरण, वन्य जीवन संरक्षण, जीव मंडल निचय।
- (4) मृदा- प्रमुख प्रकार एवं विभाजन, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (I.C.A.R.) का वर्गीकरण; मृदा अवकर्षण एवं संरक्षण।

इकाई-10- प्राकृतिक आपदाएँ एवं संकट : कारण, परिणाम तथा प्रबन्ध

तथा प्रबंध।-

7 अंक

- (1) बाढ़।
- (2) सूखा- प्रकार तथा प्रभाव।
- (3) भूकम्प एवं सुनामी।

(4) चक्रवात – लक्षण एवं प्रभाव।

(5) भू-स्खलन।

मानचित्र—

5 अंक

भारत के रूपरेखीय (लजसपदम) प्राकृतिक तथा राजनैतिक मानचित्र पर उपरोक्त इकाईयों की विशेषताओं को चिन्हित तथा नामांकित करने सम्बन्धी मानचित्र कार्य—

1/2 अंक सही स्थान एवं 1/2 अंक सही उत्तर के लिये दृष्टिबाधित परीक्षार्थियों के लिये मानचित्र से संबंधित 05 प्रश्न पूछे जायेंगे।

खण्ड 'ग'

प्रयोगात्मक कार्य

30 अंक

इकाई-1 –

10 अंक

- (1) मानचित्र— प्रकार; मापक के प्रकार; सरल रेखिक पैमाने का निर्माण; दूरी का मापन; दिशा ज्ञान और रूढ़ चिन्हों का प्रयोग।
- (2) मानचित्र प्रक्षेप – अक्षांश, देशान्तर और समय; टोपोलॉजी, प्रक्षेप का निर्माण (संरचना) एवं तत्व। एक प्रधान अक्षांश वाले शंकवाकार प्रक्षेप एवं मर्केटर प्रक्षेप।

इकाई-2 – स्थलाकृतिक एवं मौसम मानचित्र—

15 अंक

- (1) स्थलाकृतिक मानचित्रों का अध्ययन (1:50,000 या 1:25,000 मापक वाले 63 जे/12 भू-पत्रक का अध्ययन निम्न शीर्षकों के अन्तर्गत।
समोच्च रेखा, पार्श्वचित्र एवं भू-आकृतियों की पहचान— ढाल, पहाड़ी, घाटी (≠ एवं T आकार की), जलप्रपात, विलफ एवं अधिवासों का वितरण।
- (2) वायव (वायु) Aerial फोटोग्राफी का परिचय— प्रकार, ज्यामिति एवं उर्ध्वाधर (Gematrical and Vertical) वायव (Aerial) फोटोग्राफ, मानचित्र एवं वायव (Aerial) फोटोग्राफ में अन्तर। वायव (Aerial) फोटो की मापनी, भौतिक एवं सांस्कृतिक तत्वों की पहचान।
- (3) उपग्रहीय चित्र – दूर संवेदीय उपग्रह से प्राप्त चित्र, आंकड़ों को अर्जित करने के चरण एवं संवेदन आंकड़ों को प्राप्त करना। (फोटोग्राफिक एवं डिजिटल)।
- (4) मौसम उपकरणों का प्रयोग – तापमापी, आद्र एवं शुष्क बल्व तापमापी, वायुदाब मापी यंत्र, पवन वेगमापी यंत्र, वर्षामापी यंत्र, मौसम, मानचित्र का परिचय, मौसम चिन्ह, जलवायु आंकड़ों का मानचित्रिकरण।

प्रयोगात्मक अभ्यास पुस्तिका एवं मौखिकी –

5 अंक

(मौखिकी इकाई-1 एवं 2 से की जायेगी।)

अंक विभाजन

- | | | |
|--|---|---------------|
| 1— लिखित परीक्षा— 6 प्रश्नों में से किन्ही 4 प्रश्नों का उत्तर देना है। प्रत्येक 5 अंक | — | 20 अंक |
| 2— प्रयोगात्मक अभ्यास पुस्तिका | — | 05 अंक |
| 3— मौखिक परीक्षा (इकाई 1 एवं 2 पर आधारित) | — | 05 अंक |

समाजशास्त्र

कक्षा-11

केवल प्रश्नपत्र

समय : 3 घण्टे

पूर्णांक : 100

इकाई	क	कालांश	अंक
	समाजशास्त्र का परिचय		
	1. समाजशास्त्र, समाज और अन्य सामाजिक विज्ञानों के साथ उसका सम्बन्ध।	20	10
	2. मूल संकल्पना और समाजशास्त्र में उनका उपयोग।	20	10

	3. सामाजिक संस्थाओं को समझना	22	10
	4. संस्कृति और समाजीकरण	18	10
	5. समाजशास्त्र की अनुसंधान विधियाँ	20	10
	योग	120	50
ख	समाज को समझना		
	6. सामाजिक संरचना स्तरीकरण और समाज में सामाजिक प्रक्रियाएँ	22	10
	7. ग्रामीण तथा नगरीय समाज में सामाजिक परिवर्तन और सामाजिक व्यवस्था	22	10
	8. पर्यावरण और समाज	16	10
	9. पाश्चात्य समाजशास्त्रियों का परिचय	20	10
	10. भारतीय समाजशास्त्री	20	10
	योग	120	50
	महायोग	240	100

खण्ड—(क) समाजशास्त्र का परिचय—

इकाई—1 समाजशास्त्र, समाज और अन्य सामाजिक विज्ञानों के साथ उसका सम्बन्ध।

10 अंक

1. समाज का परिचय, व्यक्तिगत और समष्टि (समूह) बहु दृष्टिकोण।
2. समाजशास्त्र का परिचय, उद्भव, प्रकृति और क्षेत्र तथा अन्य से सम्बन्ध।

इकाई—2 मूल संकल्पना तथा समाजशास्त्र में उनका उपयोग

10 अंक

1. सामाजिक समाज और समूह
2. प्रस्थिति और भूमिका
3. सामाजिक स्तरीकरण
4. समाज और सामाजिक नियन्त्रण

इकाई—3 सामाजिक संस्थाओं को समझना

10 अंक

1. परिवार, विवाह और नातेदारी
2. आर्थिक संस्थाएँ
3. राजनीतिक संस्थाएँ
4. धर्म एक सामाजिक संस्था के रूप में
5. शिक्षा एक सामाजिक संस्था के रूप में

इकाई—4 संस्कृति और सामाजीकरण

10 अंक

1. संस्कृति, मूल्य और मानदण्ड : साझा, मिश्रित एवं सहभागिता के आधार पर।
2. सामाजीकरण—अनुरूपता, संघर्ष और व्यक्तित्व का निर्माण।

इकाई—5 समाजशास्त्र की अनुसंधान विधियाँ

10 अंक

1. विधियाँ : अवलोकन एवं सर्वेक्षण

2. यन्त्र और तकनीक, साक्षात्कार एवं प्रश्नावली
3. समाजशास्त्र के क्षेत्र में सर्वेक्षण कार्य का महत्व

खण्ड—(ख) समाज को समझना

इकाई—6 सामाजिक संरचना, स्तरीकरण और समाज में सामाजिक प्रक्रियाएँ **10 अंक**

1. सामाजिक संरचना
2. सामाजिक स्तरीकरण : वर्ग, जाति, प्रजाति, लिंग
3. सामाजिक प्रक्रिया : सहयोग, प्रतिस्पर्धा, संघर्ष

इकाई—7 ग्रामीण और नगरीय समाज में सामाजिक परिवर्तन और सामाजिक व्यवस्थाएँ **10 अंक**

सामाजिक परिवर्तन : अर्थ, प्रकार, कारण और परिणाम

1. सामाजिक व्यवस्था : प्रभुत्व, अधिकार और कानून : अपराध और हिंसा
2. गाँव, कस्बा और शहर : ग्रामीण और नगरीय समाज में परिवर्तन

इकाई—8 पर्यावरण और समाज **10 अंक**

1. पारिस्थितिकी और समाज
2. पर्यावरणीय समस्याएँ और सामाजिक प्रतिक्रियाएँ
3. सतत् विकास

इकाई—9 पाश्चात्य समाज शास्त्रियों का परिचय **10 अंक**

1. कार्ल मार्क्स : वर्ग संघर्ष
2. इमार्शल दुर्खीम : श्रम विभाजन और सामूहिक परिणाम की श्रेणी
3. मैक्स वेबर : नौकरशाही

इकाई—10 भारतीय समाजशास्त्री **10 अंक**

1. जी0एस0 घूरिये : जाति एवं प्रजाति
2. डी0पी0 मुखर्जी : प्रथाएँ एवं परिवर्तन
3. ए0आर0 देसाई : राज्य
4. एम0एन0 श्रीनिवास : भारतीय गाँव

जीव विज्ञान

कक्षा—11 सैद्धांतिक

इसमें 100 अंकों का एक प्रश्नपत्र 70 लिखित एवं 30 प्रयोगात्मक का होगा।

समय—3 घंटा

केवल प्रश्नपत्र

अंक—70

इकाई	शीर्षक	अंक भार
1	सजीव जगत की विविधता	07
2	जंतुओं और पौधों की संरचनात्मक संघटना	12
3	कोशिका : संरचना और कार्य	15
4	पादप कार्यिकी	18
5	मानव कार्यिकी	18
	योग	70

इकाई – 1 सजीव जगत की विविधता

07 अंक

(1) **सजीव जगत –**

सजीव क्या है? जैव विविधता, वर्गीकरण की आवश्यकता, जीवन के तीन डोमेन, वर्गिकी एवं वर्गीकरण विज्ञान, जातियों की संकल्पना एवं वर्गिकीय क्रमबद्धता, द्विनामनामकरण पद्धति, वर्गिकी के अध्ययन हेतु साधन – म्यूजियम, प्राणि पार्क, हरबेरियम, पादप उद्यान।

(2) **जीव जगत का वर्गीकरण –**

पाँच जगत वर्गीकरण, मोनेरा, प्रोटिस्टा एवं फंजाई के प्रमुख लक्षण एवं प्रमुख समूहों में वर्गीकरण : लाइकेन, वाइरस एवं वाइराइड्स।

(3) **वनस्पति जगत –**

पौधों के प्रमुख लक्षण एवं प्रमुख समूहों में वर्गीकरण – एल्गी, ब्रायोफाइटा, टेरिडोफाइटा, जिम्नोस्पर्म एवं एंजियोस्पर्म (तीन से पाँच प्रमुख एवं विभेदीकारक लक्षण एवं प्रत्येक के कम से कम दो उदाहरण। एंजियोस्पर्म-वर्ग तक वर्गीकरण, विशिष्ट लक्षण एवं उदाहरण)।

(4) **जंतु जगत**

जंतुओं के प्रमुख लक्षण एवं वर्गीकरण, नानकार्डेट्स संघ तक एवं कार्डेट्स वर्ग तक (तीन से पाँच प्रमुख लक्षण एवं प्रत्येक के कम से कम दो उदाहरण)।

इकाई – 2 जंतुओं और पौधों की संरचनात्मक संघटना

12 अंक

(1) **पुष्पी पौधों की शारीरिकी –**

शारीरिकी एवं रूपान्तरण – ऊतक

(2) **पुष्पी पौधों की आकारिकी –**

पुष्पी पादपों के विभिन्न भागों— जड़, तना, पत्ती, पुष्पक्रम, पुष्प, फल और बीज की आकारिकी एवं कार्य (प्रयोगात्मक पाठ्यक्रम के सम्बन्धित प्रयोगों के साथ कराया जाय)

(3) **जंतुओं की संरचनात्मक संघटना –**

जंतु ऊतक, एक कीट कोंकरोच की आकारिकी, शारीरिकी एवं विभिन्न तंत्रों के कार्य (पाचन, परिसंचरण, श्वसन, तंत्रिका एवं जनन संक्षिप्त वर्णन)

इकाई – 3 कोशिका : संरचना एवं कार्य

15 अंक

(1) **कोशिका जीवन की इकाई –**

कोशिका सिद्धान्त एवं कोशिका जीवन की आधारभूत इकाई, प्रोकैरियोटिक एवं यूकैरियोटिक कोशिका की संरचना, पादप एवं जंतु कोशिका Cell envelope, कोशिका झिल्ली, कोशिका भित्ती, कोशिका अंगक (संरचना एवं कार्य) – एंडोमैम्ब्रेन सिस्टम, अन्तः प्रदव्यी जालिका, गाल्जी काय, लाइसोसोम्स, रिक्तिका, माइटोकॉन्ड्रिया, राइबोसोम, लवक, माइक्रोबॉडीज, कोशिका कंकाल, सीलिया, पलैजिला, सैन्ट्रिओल्स (संरचना और कार्य) केन्द्रक, केन्द्रककला, क्रोमेटिन, केन्द्रिक।

(2) **जैविक अणु –**

सजीव कोशिकाओं का रासायनिक संगठन, जैविक अणु, प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, वसा, न्यूक्लिक अम्ल की संरचना और कार्य। एन्जाइम-प्रकार, गुण एवं एन्जाइम क्रिया।

(3) **कोशिका चक्र एवं कोशिका विभाजन –**

कोशिका चक्र, सूत्री एवं अर्द्धसूत्री विभाजन एवं महत्व।

इकाई – 4 पादप कार्यिकी

18 अंक

(1) **पौधों में परिवहन –**

जल, पोषक पदार्थ एवं गैसों का संवहन, कोशिकीय परिवहन, विसरण, सहज विसरण, सक्रिय परिवहन, पादप जल सम्बन्ध, अन्तःशोषण, जल विभव, परासरण, जीव द्रव्य कुंचन, लम्बी दूरी तक जल परिवहन— अवशोषण, एपोप्लास्ट, सिम्प्लास्ट, वाष्पोत्सर्जनाकर्षण, मूल दाब, एवं बिंदु स्त्रावण, वाष्पोत्सर्जन स्टोमेटा का खुलना एवं बंद होना, खनिज पोषकों का अन्तर्ग्रहण एवं परिवहन, खनिज पदार्थों का स्थानान्तरण, फ्लोएम द्वारा परिवहन, दाब प्रवाह या सामूहिक प्रवाह परिकल्पना, गैसों का विसरण।

(2) **खनिज पोषण –**

आवश्यक खनिज तत्व, वृहत एवं सूक्ष्म पोषक तत्व तथा उनका कार्य, अनिवार्य तत्वों की अपर्याप्तता के लक्षण, खनिज लवणीय विषाक्तता, हाइड्रोपोनिक्स का सामान्य ज्ञान, नाइट्रोजन उपापचय, नाइट्रोजन चक्र, जैवीय नाइट्रोजन स्थरीकरण।

(3) **उच्च पादपों में प्रकाश संश्लेषण –**

प्रकाश संश्लेषण स्वपोषी पोषण का एक माध्यम, प्रकाश संश्लेषण का क्षेत्र, प्रकाश संश्लेषण में प्रयुक्त वर्णक (प्रारम्भिक ज्ञान), प्रकाश संश्लेषण की प्रकाश रासायनिक एवं जैव संश्लेषी प्रावस्था, चक्रीय एवं अचक्रीय फोटोफास्फोराइलेशन, रसायनी परासरण परिकल्पना, प्रकाशीय श्वसन, C_3 एवं C_4 पथ, प्रकाश संश्लेषण को प्रभावित करने वाले कारक।

(4) **पौधों में श्वसन**

गैसों का आदान-प्रदान, कोशिकीय श्वसन- ग्लाइकोलिसिस, किण्वन (अवायवीय), TCA चक्र एवं इलेक्ट्रॉनिक स्थानान्तरण तंत्र (वायवीय), ऊर्जा सम्बन्ध – उत्पादित ATP अणुओं की संख्या, एंफ़ीबोलिक पथ, श्वसन गुणांक।

(5) **पादप वृद्धि एवं परिवर्धन**

बीजों का अंकुरण, पादप वृद्धि की प्रावस्थाएं एवं पादप वृद्धि दर, वृद्धि – की – परिस्थितियाँ, विभेदीकरण – विविभेदीकरण, पुनर्विभेदीकरण-पादप कोशिका के विकास का वृद्धि क्रम, वृद्धि नियंत्रक-आक्सिन, जिबरेलिन, साइटोकाइनिन, इथाइलीन, ABA, बीज प्रसुप्तावस्था, बसन्तीकरण, दीप्तिकालिता।

इकाई – 5 मानव कार्यिकी

18 अंक

(1) **पाचन एवं अवशोषण –**

आहार नाल एवं पाचक ग्रंथियाँ, पाचक एन्जाइम्स एवं आहार नाल की श्लेष्मिका द्वारा स्त्रावित (गैस्ट्रोइंटस्टाइनल) हारमोन्स का कार्य, क्रमाकुंचन, पाचन, अवशोषण एवं कार्बोहाइड्रेट, प्रोटीन एवं वसा का स्वांगीकरण, प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट एवं वसा का कैलोरिक महत्व, (बाक्स सामग्री मूल्यांकन के लिए नहीं) बहिःक्षेपण। पोषण एवं पाचन तंत्र की विकृतियाँ – PEM, अपच, कब्ज, वमन, पीलिया एवं अतिसार (डायरिया)

(2) **श्वसन एवं गैसों का विनिमय –**

जंतुओं में श्वसनांग, मानव का श्वसन तंत्र, श्वसन की क्रियाविधि एवं इसका नियंत्रण, गैसों का विनिमय, गैसों का परिवहन एवं श्वसन का नियमन, (Respiratory Volume) श्वसनीय आयतन, श्वसन के विकार – दमा, इम्फाइसिमा, व्यावसायिक श्वसन रोग।

(3) **परिसंचरण एवं देह तरल –**

रूधिर की संरचना, रूधिर वर्ग, रूधिर का जमना, लसिका की संरचना एवं कार्य, मानव परिसंचरण तंत्र-मानव हृदय की संरचना एवं रूधिर वाहिकाएं, कार्डियक चक्र (हृदय चक्र) कार्डियक आउट पुट, ई0सी0जी0, दोहरा परिसंचरण, हृदय क्रिया का नियमन, परिसंचरण की विकृतियाँ-उच्च रक्त चाप, हृदय धमनी रोग, एंजाइना पैक्टोरिस, हार्टफेल्योर।

(4) **उत्सर्जी उत्पाद एवं निष्कासन**

उत्सर्जन की विधियाँ – एमीनोटेलिज्म, यूरिओटेलिज्म, यूरिकोटेलिज्म मानव उत्सर्जी तंत्र – संरचना और कार्य, मूत्र निर्माण, परासरण नियंत्रण, वृक्क क्रियाओं का नियमन रेनिन – एंजियोटेंसिन, अलिंतीय निट्रियेरेटिक कारक, ADH एवं डाइबिटीज इंसिपिडस, उत्सर्जन में अन्य अंगों की भूमिका, विकृतियाँ-यूरिमिया, रीनल फेलियर, रीनल केलकलाई, नैफ्राइटिस, डाइलिसिस एवं कृत्रिम वृक्क।

(5) **गमन एवं संचलन**

गति के प्रकार – पक्ष्माभि, कशाभि, पेशीय, कंकाल पेशियाँ- संकुचनशील प्रोटीन एवं पेशी संकुचन, कंकाल तंत्र एवं इसके कार्य, (प्रयोगात्मक पाठ्यक्रम के संबंधित प्रयोगों के साथ कराया जाय) पेशीय और कंकाल तंत्र के विकार-माइस्थेनिया ग्रेविस, टिटैनी, पेशीय दुष्पोषण, संधि शोथ, अस्थिसुषिरता, गाउट।

(6) **तंत्रिकीय नियंत्रण एवं समन्वयन**

तंत्रिका कोशिका एवं तंत्रिकाएं, मानव का तंत्रिका तंत्र, केन्द्रीय तंत्रिका तंत्र, परिधीय तंत्रिका तंत्र, विसरल तंत्रिका तंत्र, तंत्रिकीय प्रेरणाओं का उत्पादन एवं संवहन, प्रतिवर्ती क्रिया, संवेदिक अभिग्रहण (Perception) संवेदी अंग—आँख और कान की प्रारम्भिक संरचना और कार्य।

(7) **रासायनिक समन्वयन एवं एकीकरण**

अन्तःस्त्रावी ग्रंथियाँ और हारमोन, मानव अन्तःस्त्रावी तंत्र—हाइपोथैलेमस, पीयूष, पीनियल, थायराइड, पैराथायराइड, एड्रीनल, अग्नाशय, जनद। हारमोन्स की क्रियाविधि (प्रारम्भिक ज्ञान) दूतवाहक एवं नियंत्रक के रूप में हारमोन्स का कार्य, अल्प एवं अतिक्रियाशीलता एवं सम्बन्धित विकृतियाँ— बौनापन, एक्रोमिगेली, ग्वाइटर, एक्सोथैलेमिक ग्वाइटर, मधुमेह, एडीसन रोग।

समय—3 घंटा

प्रयोगात्मक

अंक—30

(क) **प्रयोगों की सूची**

1. तीन सामान्य पुष्पी पौधों (कुल – सोलेनेसी, फेबेसी, लिलिएसी) का अध्ययन एवं वर्णन, पुष्प का विच्छेदन एवं पुष्पी चक्रों, अण्डाशय एवं परागकोष के कक्षों का प्रदर्शन (पुष्प सूत्र एवं पुष्प आरेख), जड़ के प्रकार (मूसला अथवा अपस्थानिक), तना (शाकीय अथवा काष्ठीय), पत्ती (व्यवस्था, आकृति, शिराविन्यास—सरल अथवा संयुक्त)।
2. द्विबीजपत्री और एकबीजपत्री जड़ और तने की अनुप्रस्थ काट (स्लाइड) तैयार करना और उनका अध्ययन करना।
3. आलू के परासरणमापी द्वारा परासरण का अध्ययन करना।
4. एपिडर्मिस छिलकों उदाहरण रियो पत्तियों में प्लाजमोलिसिस का अध्ययन करना।
5. पत्तियों की ऊपरी और निचली सतहों पर रन्ध्रों का वितरण।
6. पत्तियों की ऊपरी और निचली सतहों पर वाष्पोत्सर्जन की दर का तुलनात्मक अध्ययन करना।
7. शर्करा, स्टार्च, प्रोटीन और वसा की उपस्थिति के लिये परीक्षण करना। उपयुक्त पादप और जन्तु पदार्थों में इनकी उपस्थिति ज्ञात करना।
8. पेपर क्रोमेटोग्राफी द्वारा पादप वर्णकों को पृथक करना।
9. पुष्प मुकुलों, पत्ती, ऊतक एवं अंकुरणशील बीजों में श्वसन की दर का अध्ययन करना।
10. मूत्र में यूरिया की उपस्थिति का परीक्षण करना।
11. मूत्र में शर्करा की उपस्थिति ज्ञात करना।
12. मूत्र में एलब्यूमिन की उपस्थिति ज्ञात करना।
13. मूत्र में पित्त वर्णकों की उपस्थिति ज्ञात करना।

(ख) **निम्नलिखित (स्पाटिंग) का अध्ययन/प्रेक्षण**

1. संयुक्त सूक्ष्मदर्शी के भागों का अध्ययन।
2. प्रतिरूपों/स्लाइड/मॉडल का अध्ययन एवं कारण बताते हुये उनकी पहचान करना— जीवाणु, ऑसिलेटोरिया, स्पाइरोगाइरा, राइजोपस, मशरूम, यीस्ट, लिवरवर्ट, मॉस, फर्न, पाइन, एक—एकबीजपत्री एवं द्विबीजपत्री पौधा, लाइकेन।
3. प्रतिरूपों का अध्ययन एवं कारण बताते हुये पहचान करना— अमीबा, हाइड्रा, लीवरपलूक, एस्केरिस, जोंक, केंचुआ, झींगा, रेशमकीट, मधुमक्खी, स्नेल, स्टारफिश, शार्क, रोहू, मेढक, छिपकली, कबूतर एवं खरगोश।
4. ऊतकों तथा पादप एवं जंतु कोशिकाओं की आकृतियों में पाई जाने वाली विविधता का अस्थाई/स्थाई स्लाइड द्वारा अध्ययन करना— पैलीसेड कोशिकाएं, द्वार कोशिका, पेरेन्काइमा, कोलेन्काइमा, स्केलेरेन्काइमा, जाइलम, पलोएम, शल्की एपीथीलियम, पेशी रेशे एवं स्तनधारी रुधिर की स्लाइड।
5. स्थायी स्लाइड की सहायता से प्याज के मूलाग्र की कोशिकाओं एवं जंतु कोशिका (टिड्डे) की कोशिकाओं में समसूत्री विभाजन का अध्ययन।

6. जड़, तना और पत्तियों के विभिन्न रूपान्तरणों का अध्ययन।
7. विभिन्न प्रकार के पुष्पक्रमों की पहचान तथा अध्ययन।
8. बीजों/किशमिश में अन्तःशोषण प्रक्रिया का अध्ययन करना।
9. निम्नलिखित प्रयोगों का प्रेक्षण एवं टिप्पणी लिखना –
 - (1) अवायवीय श्वसन
 - (2) दीप्तिकालिता
 - (3) Effect of apical bud removal
 - (4) Suction due to transpiration.
10. मानव कंकाल तथा विभिन्न प्रकार की संधियों का अध्ययन।
11. मॉडल की सहायता से कॉकरोच की वाह्य आकारिकी का अध्ययन करना।

कक्षा-11 रसायन विज्ञान

प्रश्न पत्र बनाने की योजना

1.	बहुविकल्पीय क, ख, ग, घ, ङ, च	1×6	06
2.	क, ख, ग, घ (प्रत्येक प्रश्न 2 अंक)	2×4	08
3.	क, ख, ग, घ (प्रत्येक प्रश्न 2 अंक)	2×4	08
4.	क, ख, ग, घ (प्रत्येक प्रश्न 3 अंक)	3×4	12
5.	क, ख, ग, घ (प्रत्येक प्रश्न 4 अंक)	4×4	16
6.	क, ख (प्रत्येक प्रश्न 5 अंक)	5×2	10
7.	क, ख (प्रत्येक प्रश्न 5 अंक)	5×2	10

- नोट:- (1) प्रश्न 6 व 7 में अथवा प्रश्न भी होंगे।
 (2) कम से कम 12 अंक के आंकिक प्रश्न पूछे जायें

कक्षा-11 रसायन विज्ञान

समय-3:00 घंटा

केवल प्रश्न पत्र

अंक 70

इकाई	शीर्षक	अंक
1.	रसायन की कुछ मूल अवधारणाएँ	05
2.	परमाणु संरचना	06
3.	तत्त्वों का वर्गीकरण और गुणधर्मों की आवर्तिता	05
4.	रासायनिक आबंधन एवं आण्विक संरचना	05
5.	द्रव्य की अवस्थायें – गैस और द्रव	04
6.	ऊष्मागतिकी	03
7.	साम्यावस्था	06
8.	रेडॉक्स अभिक्रिया	04
9.	हाइड्रोजन	03
10.	s ब्लॉक के तत्त्व (क्षार तथा क्षारीयमृदा धातुएँ)	05
11.	p-ब्लॉक के तत्त्व	06

12.	कार्बनिक रसायन कुछ मूलभूत सिद्धान्त तथा तकनीके	07
13.	हाइड्रोकार्बन	08
14.	पर्यावरणीय रसायन	03
	योग	70

नोट:—इसमें 70 अंकों का एक प्रश्न पत्र 3 घण्टे का होगा एवं 30 अंकों की प्रयोगात्मक परीक्षा होगी।

इकाई 1—रसायन की कुछ मूल अवधारणायें

05 अंक

सामान्य परिचय—

रसायन विषय का महत्व और विस्तार, द्रव्य की कणिक प्रकृति तक ऐतिहासिक पहुंच, रासायनिक संयोजन के नियम, डाल्टन का परमाणु सिद्धान्त, तत्व, परमाणु और अणु की अवधारणा।

परमाण्विक, आण्विक द्रव्यमान, मोल की अवधारणा और मोलर द्रव्यमान—प्रतिशत संघटन, मूलानुपाती एवं आण्विक—सूत्र, रासायनिक अभिक्रियायें, स्टॉइकियोमिस्ट्री और उस पर आधारित गणनायें।

इकाई 2 – परमाणु की संरचना

06 अंक

इलेक्ट्रॉन, प्रोटान और न्यूट्रॉन की खोज, परमाणु क्रमोंक, समस्थानिक और समभारिक, टॉमसन का मॉडल और इसकी सीमायें, रदरफोर्ड का मॉडल और इसकी सीमायें, बोर मॉडल और इसकी सीमायें, कोशों एवं उपकोशों की अवधारणा, द्रव्य एवं प्रकाश की द्वैत प्रकृति, दे ब्रॉग्ली सम्बन्ध, हाइजेनबर्ग का अनिश्चितता सिद्धान्त, कक्षकों की अवधारणा, क्वान्टम संख्याएं s , p और d कक्षकों की आकृतियाँ, कक्षकों में इलेक्ट्रॉन भरने के नियम—आफबाऊ नियम, पाउली अपवर्जन नियम तथा हुंड का नियम, परमाणुओं का इलेक्ट्रॉनिक विन्यास, अर्द्धभरित और पूर्ण भरित कक्षकों का स्थायित्व।

इकाई 3 – तत्वों का वर्गीकरण और गुणधर्मों की आवर्तिता

05 अंक

वर्गीकरण की सार्थकता, आवर्त सारणी के विकास का संक्षिप्त इतिहास, आधुनिक आवर्त नियम तथा आवर्त सारणी का वर्तमान स्वरूप, तत्वों के गुणधर्मों की आवर्ती प्रवृत्ति— परमाणु त्रिज्यायें, आयनी त्रिज्यायें आयनन एन्थैल्पी, इलेक्ट्रॉन लक्षि एन्थैल्पी, अक्रिय गैस त्रिज्यायें विद्युत ऋणात्मकता, संयोजकता, 100 से अधिक परमाणु क्रमांक वाले तत्वों का नामकरण।

इकाई 4 – रासायनिक आबंधन तथा आणविक संरचना

05 अंक

संयोजकता—इलेक्ट्रॉन, आयनिक आबंध, सहसंयोजक आबंध, आबंध प्राचल लुइस संरचना, सहसंयोजक आबंध का ध्रुवीय गुण, आयनिक आबंध का सहसंयोजक गुण, संयोजकता आबंध सिद्धान्त, अनुनाद, सहसंयोजक अणुओं की ज्यामिति, VSEPR सिद्धान्त s , p तथा d कक्षकों और कुछ सामान्य अणुओं की आकृतियों को सम्मिलित करते हुए संकरण की अवधारणा, समनाभिकीय द्विपरमाणुक अणुओं के आबंधन का आण्विक कक्षक सिद्धान्त (केवल गुणात्मक परिचय), हाइड्रोजन आबंध।

इकाई 5 – द्रव्य की अवस्थायें—गैस एवं द्रव

04 अंक

द्रव्य की तीन अवस्थायें, अन्तराआण्विक अन्योन्य क्रियायें, आबंधन के प्रकार, गलनांक और क्वथनांक, अणुओं की अवधारणा की व्याख्या में गैस नियमों की भूमिका, बॉयल का नियम, चार्ल्स का नियम, गैलुसैक नियम, आदर्श व्यवहार, आवोगाद्रो नियम, आदर्श गैस समीकरण की आनुभाषिक व्युत्पत्ति, आवोगाद्रो संख्या, आदर्श गैस समीकरण, आदर्श व्यवहार से विचलन, गैसों का द्रवण, क्रांतिक ताप, गतिज ऊर्जा और आण्विक वेग (प्रारम्भिक विचार)।

द्रव अवस्था—वाष्प दाब, श्यानता और पृष्ठतनाव (केवल गुणात्मक परिचय)।

इकाई 6 – ऊष्मागतिकी

03 अंक

निकाय की अवधारणा, निकाय के प्रकार, परिवेश, कार्य, ऊष्मा, ऊर्जा, विस्तीर्ण तथा गहन गुण, अवस्था फलन।

ऊष्मागतिकी का प्रथम नियम— आन्तरिक ऊर्जा और एन्थैल्पी (H), ऊष्माधारिता, विषिष्ट ऊष्मा ΔU तथा ΔH का मापन, हेस का स्थिर ऊष्मा संकलन नियम, एन्थैल्पी—आबंध वियोजन, संभवन (विरचन), दहन, कणीकरण, ऊर्ध्वपातन, प्रावस्था रूपान्तरण, आयनन तथा विलयन, तनुता ऊष्मा।

एन्ट्रापी का अवस्था फलन की भाँति परिचय, स्वतः प्रवर्तित और स्वतः अप्रवर्तित प्रक्रमों के लिये मुक्त ऊर्जा परिवर्तन, साम्य, साम्यावस्था हेतु मानदण्ड, ऊष्मागतिकी का द्वितीय तथा तृतीय नियम। (संक्षिप्त परिचय)

इकाई 7 – साम्यावस्था

06 अंक

भौतिकी और रासायनिक प्रक्रमों में साम्य, साम्य की गतिक प्रकृति, द्रव्यानुपाती क्रिया का नियम, साम्य स्थिरांक, साम्य को प्रभावित करने वाले कारक, लॅ शातैलिए का सिद्धान्त, आयनिक साम्य-अम्लों एवं क्षारकों का आयनन, प्रबल और दुर्बल वैद्युत् अपघट्य, आयनन की मात्रा, बहुक्षारकी अम्लों का आयनन, आयनन, अम्लीय शक्ति, pH की अवधारणा, हेन्डरसन समीकरण, लवणों का जलीय अपघटन (प्रारम्भिक विचार) बफर विलयन, विलेयता गुणनफल, समआयन प्रभाव उदाहरण सहित।

इकाई 8 – रेडाक्स अभिक्रिया

04 अंक

आक्सीकरण और अपचयन की अवधारणा, आक्सीकरण अपचयन अभिक्रियायें, आक्सीकरण संख्या, आक्सीकरण अपचयन अभिक्रियाओं की रासायनिक समीकरण को संतुलित करना (इलेक्ट्रॉन संख्या एवं आक्सीकरण संख्या के आधार पर)। रेडाक्स अभिक्रियाओं के अनुप्रयोग

इकाई 9 – हाइड्रोजन

03 अंक

आवर्त सारणी में हाइड्रोजन का स्थान, उपलब्धता, समस्थानिक, विरचन, गुण धर्म तथा हाइड्रोजन के उपयोग, हाइड्राइड-आयनी, सहसंयोजक एवं अंतराकाशी, जल के भौतिक तथा रासायनिक गुणधर्म, भारी जल, हाइड्रोजन पॅराक्साइड-विरचन, अभिक्रियाएँ और संरचना तथा उपयोग, हाइड्रोजन- ईंधन के रूप में।

इकाई 10 – s-ब्लॉक के तत्व (क्षार एवं क्षारीय मृदा धातुयें)

05 अंक

वर्ग 1 एवं वर्ग 2 के तत्व।

सामान्य परिचय, इलेक्ट्रॉनिक विन्यास, उपलब्धता, प्रत्येक वर्ग के प्रथम तत्व के असंगत गुणधर्म, विकर्ण सम्बन्ध, गुणधर्मों के विरचन में प्रवृत्ति (जैसे-आयनन एन्थैल्पी, परमाणु एवं आयनिक त्रिज्या), ऑक्सीजन, जल, हाइड्रोजन एवं हैलोजन से रासायनिक अभिक्रियाशीलता में प्रवृत्तियाँ, उपयोग।

कुछ महत्वपूर्ण यौगिकों का विरचन और गुणधर्म

सोडियम कार्बोनेट, सोडियम हाइड्राक्साइड और सोडियम, हाइड्रोजन कार्बोनेट, साधारण नमक, सोडियम एवं पोटैशियम का जैविक महत्व।

कैल्शियम ऑक्साइड, कैल्शियम कार्बोनेट एवं चूना व चूना पत्थर के औद्योगिक उपयोग। मैग्नीशियम तथा कैल्शियम का जैविक महत्व।

इकाई 11 – p-ब्लॉक के तत्व

06 अंक

p-ब्लॉक के तत्वों का सामान्य परिचय।

वर्ग 13 के तत्व- सामान्य परिचय, इलेक्ट्रॉनिक विन्यास, उपलब्धता, गुणधर्मों का विरचन, ऑक्सीकरण अवस्थायें, रासायनिक अभिक्रियाशीलता में प्रवृत्ति, वर्ग के प्रथम तत्व के असंगत गुणधर्म, बोरॉन-भौतिक और रासायनिक गुणधर्म, कुछ महत्वपूर्ण यौगिक-बोरेक्स, बोरिक अम्ल, बोरान हाइड्राइड, ऐल्यूमिनियम-अम्लों और क्षारों के साथ अभिक्रियायें, उपयोग।

वर्ग 14 के तत्व- सामान्य परिचय, इलेक्ट्रॉनिक विन्यास, उपलब्धता, गुणधर्मों का विरचन, ऑक्सीकरण अवस्थायें, रासायनिक अभिक्रियाशीलता में प्रवृत्तियाँ, समूह के प्रथम तत्व का असंगत व्यवहार, कार्बन श्रृंखलन, अपररूप, भौतिक और रासायनिक गुणधर्म, कुछ महत्वपूर्ण यौगिकों के उपयोग-ऑक्साइड।

सिलिकॉन के महत्वपूर्ण यौगिक और उनके कुछ उपयोग-सिलिकॉन टेट्राक्लोराइड, सिलिकोन, सिलिकेट एवं जिओलाइट, उनके उपयोग।

इकाई 12 – कार्बनिक रसायन-कुछ मूल सिद्धान्त और तकनीकें

07 अंक

सामान्य परिचय, कार्बनिक यौगिकों का शोधन, गुणात्मक और मात्रात्मक विश्लेषण की विधियाँ, वर्गीकरण और कार्बनिक यौगिकों की IUPAC नाम पद्धति। सहसंयोजक बन्ध में इलेक्ट्रॉनिक विस्थापन-प्रेरणिक प्रभाव, इलेक्ट्रोमैरिक प्रभाव, अनुनाद और अति संयुग्मन।

सहसंयोजक आबंध का सम और विषम विदलन-मुक्त मूलक, कार्बोनियम आयन, कार्बोनायन, इलेक्ट्रान स्नेही तथा नाभिक स्नेही, कार्बनिक अभिक्रियाओं की क्रियाविधि।

इकाई 13 – हाइड्रोकार्बन

08 अंक

हाइड्रोकार्बनों का वर्गीकरण-

एल्केन- नाम पद्धति, समावयवता, संरूपण (केवल एथेन), भौतिक गुणधर्म, रासायनिक अभिक्रियायें (हैलोजेनीकरण की मुक्त मूलक क्रियाविधि सहित) दहन और ताप अपघटन।

एल्कीन- नाम पद्धति, द्विक आबंध की संरचना (एथीन)।

ज्यामितीय समावयवता, भौतिक गुणधर्म, विरचन की विधियाँ, रासायनिक अभिक्रियायें-हाइड्रोजन, हैलोजन, जल और हाइड्रोजन हैलाइड (मार्कोनीकोफ के योग का नियम और पराक्साइड प्रभाव) का योग, ओजोनीकरण, आक्सीकरण, इलेक्ट्रान स्नेही योग की क्रियाविधि।

एल्काइन- नाम पद्धति, त्रिक आबंध की संरचना (एथाइन), भौतिक गुणधर्म, विरचन की विधियाँ, रासायनिक अभिक्रियायें- एल्काइनों की अम्लीय प्रकृति, हाइड्रोजन, हैलोजेन, हाइड्रोजन हैलाइड तथा जल के साथ योगात्मक अभिक्रियायें।

ऐरोमैटिक हाइड्रोकार्बन-परिचय, IUPAC नाम पद्धति-

बेन्जीन- अनुनाद, ऐरोमैटिकता, रासायनिक गुण-धर्म, इलेक्ट्रॉनस्नेही प्रतिस्थापन की क्रियाविधि, नाइट्रेशन, सल्फोनेशन, हैलोजेनीकरण, फ्रीडल क्राफ्ट अभिक्रिया, ऐल्किलन एवं ऐसीटिलन, एकल प्रतिस्थापित बेन्जीन में क्रियात्मक समूह का निर्देशात्मक प्रभाव, कैसरजनीयता और विषाक्तता।

इकाई 14 – पर्यावरणीय रसायन

03 अंक

पर्यावरण प्रदूषण- वायु, जल और मृदा प्रदूषण, वायु मण्डल में रासायनिक अभिक्रियायें, धूम्र, कोहरा, प्रमुख वायु मण्डलीय प्रदूषक, अम्लीय वर्षा, ओजोन और इसकी अभिक्रियायें, ओजोन परत के क्षय और इसके प्रभाव, ग्रीन हाउस प्रभाव तथा वैश्विक ऊष्मन औद्योगिक अपशिष्टों के कारण प्रदूषण, पर्यावरण प्रदूषण कम करने के लिये हरित रसायन एक वैकल्पिक साधन की तरह, पर्यावरण प्रदूषण को नियंत्रित करने के लिये योजनायें।

रसायन विज्ञान प्रयोगात्मक परीक्षा

कक्षा – 11

(1) मूलभूत प्रयोगशाला तकनीकें जैसे-

1. ग्लास नली या छड़ का काटना
2. ग्लास नली को मोड़ना
3. ग्लास नली से ग्लास जैट बनाना
4. कार्क में छेद करना

(2) रासायनिक पदार्थों का शोधन एवं लक्षण जैसे

1. कार्बनिक पदार्थों के गलनांक बिन्दु ज्ञात करना
2. कार्बनिक पदार्थों के क्वथनांक बिन्दु ज्ञात करना
3. निम्न में से किसी एक अशुद्ध प्रतिदर्श से क्रिस्टलन विधि द्वारा शुद्ध रूप में प्राप्त करना – फिटकरी, कापर सल्फेट, बेन्जोइक अम्ल

(3) चक्र परिवर्तन से सम्बंधित प्रयोग

(क) निम्न प्रयोगों में से कोई एक -

- फलों के रस, अम्लों, क्षारकों और लवणों की विभिन्न ज्ञात सान्द्रताओं के विलयनों का pH पत्र अथवा सार्वत्रिक सूचक द्वारा pH ज्ञात करना।

- समान सान्द्रण वाले प्रबल एवं दुर्बल अम्लों के विलयनों के pH मानों की तुलना करना।
- सार्वत्रिक सूचक का प्रयोग करते हुए प्रबल अम्ल का प्रबल क्षार के साथ अनुमापन करने में pH परिवर्तन का अध्ययन करना।

(ख) दुर्बल अम्लों एवं दुर्बल क्षारों के लिए समआयन प्रभाव के द्वारा pH मान परिवर्तन का अध्ययन करना।

(4) **रासायनिक साम्य**

निम्न में से कोई एक प्रयोग करना है –

- (1) फेरिक तथा थायो साइनेट आयनों वाले विलयनों की सान्द्रताओं में परिवर्तन (कमी या वृद्धि) करते हुए फेरिक आयनों तथा थायो साइनेट आयनों के मध्य साम्य में विस्थापन का अध्ययन करना।
- (2) क्लोराइड आयन तथा हाइड्रेटेड कोबाल्ट आयन $[Co(H_2O)_6]^{3+}$ वाले विलयनों की सान्द्रताओं में परिवर्तन करते हुए विलयनों के मध्य साम्य विस्थापन का अध्ययन करना।

(5) **मात्रात्मक निर्धारण**

- रासायनिक तुला का उपयोग करना सीखना
- आक्सेलिक अम्ल का मानक विलयन तैयार करना
- आक्सेलिक अम्ल के मानक विलयन के विरुद्ध अनुमापन द्वारा दिये गए अज्ञात सान्द्रण वाले सोडियम हाइड्रोक्साइड विलयन की सान्द्रता ज्ञात करना।
- सोडियम कार्बोनेट विलयन का मानक विलयन तैयार करना
- सोडियम कार्बोनेट के मानक विलयन के विरुद्ध अनुमापन द्वारा दिए गए अज्ञात हाइड्रोक्लोरिक अम्ल विलयन की सान्द्रता ज्ञात करना।

(6) **गुणात्मक विश्लेषण –**

(क) दिए गए लवण में एक धनायन तथा एक ऋणायन का निरीक्षण करना –

धनायन – (क्षारकीय मूलक) – $Pb^{2+}, Cu^{2+}, As^{3+}, Al^{3+}, Fe^{3+}, Mn^{2+}, Ni^{2+}, Zn^{2+}, Co^{2+}, Ca^{2+}, Sr^{2+}, Ba^{2+}, Mg^{2+}, NH_4^+$

ऋणायन – (अम्लीय मूलक) –

$CO_3^{2-}, S^{2-}, SO_3^{2-}, SO_4^{2-}, NO_2^-, NO_3^-, Cl^-, Br^-, I^-, PO_4^{3-}, C_2O_4^{2-}, CH_3COO^-$

(नोट – अघुलनशील लवण न दिये जायें)

(ख) कार्बनिक योगिकों में नाइट्रोजन, सल्फर, क्लोरीन, तत्वों का परीक्षण करना।

प्रोजेक्ट्स–

प्रयोगशाला तथा अन्य स्रोतों पर आधारित प्रयोग-परीक्षणों का वैज्ञानिक अन्वेषण करना तथा सीखना।

सुझाये गए कुछ प्रोजेक्ट्स–

- दूषित जल में सल्फाइड आयनों का परीक्षण करते हुए बैक्टीरियाओं (रोगाणुओं) का पता लगाना।
- जल की शुद्धिकरण की विधियों का अध्ययन करना।
- जल की कठोरता, तथा क्लोराइड, फ्लोराइड और लौह आयनों का परीक्षण करना तथा अनुमति सीमा से परे क्षेत्रीय बदलाव के तहत पेयजल में इनकी उपस्थिति का पता लगाना।

- विभिन्न कपड़ा धोने वाले साबुनों की झाग उत्पन्न करने की शक्ति तथा इन पर सोडियम कार्बोनेट की मात्रा डालने पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।
- चाय की पत्ती के विभिन्न प्रतिदर्शों में अम्लीयता का अध्ययन करना।
- विभिन्न द्रवों के वाष्पन की दर ज्ञात करना।
- रेशों की तन्व शक्ति पर अम्ल एवं क्षारों के प्रभाव का अध्ययन करना।
- फलों एवं सब्जियों के रसों का विश्लेषण कर उनकी अम्लीयता का पता लगाना।

(नोट:— दस कालखण्डों के बराबर समय लेने वाली किसी अन्य प्रोजेक्ट को भी शिक्षक का अनुमोदन प्राप्त होने पर चुना जा सकता है।)

कक्षा-11 (प्रायोगिक कार्य)

परीक्षा की मूल्यांकन योजना		पूर्णांक
1.	विषय वस्तु आधारित प्रयोग (1 से 4 तक)	04
2.	आयतनमितीय विश्लेषण (5)	08
3.	(क) लवण विश्लेषण (ख) कार्बनिक योजकों में तत्व का विश्लेषण	06 02
4.	कक्षा रिकार्ड तथा प्रोजेक्ट कार्य	05
5.	मौखिक परीक्षा	05
योग		30

कक्षा-11 (गणित)

समय-3 घंटा

केवल प्रश्नपत्र

अंक-100

क्रम	इकाई	अंक
6.	समुच्चय तथा फलन	29
7.	बीजगणित	37
8.	निर्देशांक ज्यामिति	13
9.	कलन	06
10.	गणितीय विवेचन	03
11.	सांख्यिकी तथा प्रायिकता	12
योग		100

इकाई-1 : समुच्चय तथा फलन

29 अंक

1. **समुच्चय :**
समुच्चय तथा उसका निरूपण, रिक्त समुच्चय, परिमित तथा अपरिमित समुच्चय, समसमुच्चय, उपसमुच्चय, वास्तविक संख्याओं के समुच्चय के उपसमुच्चय विशेषकर अन्तराल के रूप में (संकेतन सहित), अधिसमुच्चय, समष्टीय समुच्चय वेन आरेख, समुच्चयों का सम्मिलन तथा सर्वनिष्ठ, समुच्चयों का अन्तर, पूरक समुच्चय।
2. **सम्बन्ध तथा फलन :**
क्रमितयुग्म, समुच्चयों का कार्तीय गुणन, दो परिमित समुच्चयों के कार्तीय गुणन में अवयवों की संख्या, वास्तविक संख्याओं के समुच्चय का अपने से कार्तीय गुणन ($R \times R \times R$) तक सम्बन्ध की परिभाषा, चित्रीय आरेख, सम्बन्ध का प्रांत, सहप्रांत तथा परास। फलन एक विशेष प्रकार का सम्बन्ध, फलन का चित्रीय निरूपण, फलन का प्रांत, सहप्रांत तथा परास। वास्तविक मान फलन, इन फलनों का प्रांत तथा परास, अचर, तत्समक, बहुपद, परिमेयी, मापांक, चिन्ह, तथा महत्तम पूर्णांक फलन तथा उनके आरेख। फलनों का योग, अन्तर, गुणन तथा भागफल।
3. **त्रिकोणमितीय फलन :**

धनात्मक तथा ऋणात्मक कोण, कोणों की रेडियन तथा डिग्री में माप तथा उनका एक मापन से दूसरे में रूपान्तरण, इकाई वृत्त की सहायता से त्रिकोणमितीय फलनों की परिभाषा। x के सभी मानों के लिए तत्समक $\sin^2 x + \cos^2 x = 1$ तत्समक का सत्यापन। त्रिकोणमितीय फलनों के चिन्ह। त्रिकोणमितीय फलनों के प्रांत तथा परास तथा उनके आलेख का चित्रण।

$\sin(x \pm y)$ तथा $\cos(x \pm y)$ की $\sin x$, $\cos x$ तथा $\sin y$, $\cos y$ के रूप में अभिव्यक्ति तथा उनके साधारण अनुप्रयोग।

निम्न प्रकार के तत्समकों का निगमन करना :

$$\tan(x \pm y) = \frac{\tan x \pm \tan y}{1 \mp \tan x \tan y}$$

$$\cot(x \pm y) = \frac{\cot x \cot y \mp 1}{\cot y \pm \cot x}$$

$$\sin \alpha \pm \sin \beta = 2 \sin \frac{1}{2}(\alpha \pm \beta) \cos \frac{1}{2}(\alpha \mp \beta)$$

$$\cos \alpha + \cos \beta = 2 \cos \frac{1}{2}(\alpha + \beta) \cos \frac{1}{2}(\alpha - \beta)$$

$$\cos \alpha - \cos \beta = 2 \sin \frac{1}{2}(\alpha + \beta) \sin \frac{1}{2}(\alpha - \beta)$$

$\sin 2x$, $\cos 2x$, $\tan 2x$, $\sin 3x$, $\cos 3x$ तथा $\tan 3x$ से सम्बन्धित तत्समक।

$\sin y = \sin a$, $\cos y = \cos a$ and $\tan y = \tan a$ प्रकार के त्रिकोणमितीय समीकरणों के व्यापक हल।

इकाई-2 बीजगणित

37 अंक

- गणितीय आगमन का सिद्धान्त** : आगमन द्वारा उत्पत्ति के प्रक्रम। इस तरीके के अनुप्रयोग की प्रेरणा प्राकृतिक संख्याओं को वास्तविक संख्याओं के न्यूनतम आगमनिक उपसमुच्चयन के रूप में देखने से लेना। गणितीय आगमन का सिद्धान्त तथा उसके सामान्य अनुप्रयोग।
- सम्मिश्र संख्याएँ तथा द्विघात समीकरण** : सम्मिश्र संख्याओं की आवश्यकता, विशेषतया $\sqrt{-1}$ के लाने की प्रेरणा सभी द्विघात समीकरणों को हल न कर पाने की अयोग्यता पर। सम्मिश्र संख्याओं के बीजीय गुणधर्मों का संक्षिप्त विवरण। आरगंड तल तथा सम्मिश्र संख्याओं का ध्रुवीय निरूपण। बीजगणित के मूल प्रमेय का कथन। सम्मिश्र संख्याओं की पद्धति में द्विघात समीकरणों के हल।
- रैखिक असमिकाएँ** : रैखिक असमिकाएँ, एक चर में रैखिक असमिकाओं का बीजीय हल तथा उसका संख्या रेखा पर निरूपण। दो चरों में रैखिक असमिकाओं का आलेखीय हल। दो चर राशियों के रैखिक असमिका निकाय का हल ज्ञात करने की आलेखीय विधि।
- क्रमचय तथा संचय** : गणना का आधारभूत सिद्धान्त, फैक्टोरियल (n!), क्रमचय तथा संचय, nPr तथा nCr सूत्रों की व्युत्पत्ति तथा उनके सम्बन्ध। साधारण अनुप्रयोग।
- द्विपद प्रमेय** : ऐतिहासिक वर्णन, द्विपद प्रमेय का धन पूर्णांकीय घातांकों के लिए कथन तथा उत्पत्ति। पास्कल का त्रिभुज नियम, द्विपद प्रमेय के प्रसार में व्यापक पद तथा मध्य पद। सरल अनुप्रयोग।
- अनुक्रम तथा श्रेणी** : अनुक्रम तथा श्रेणी, समान्तर श्रेणी, समान्तर माध्य, गुणोत्तर श्रेणी, गुणोत्तर श्रेणी के सामान्य पद, गुणोत्तर श्रेणी के प्रथम n पदों का योग, अनन्त गुणोत्तर श्रेणी और उसके योग, गुणोत्तर माध्य, समान्तर माध्य और गुणोत्तर माध्य के बीच सम्बन्ध, निम्नांकित मुख्य सूत्र—

$$\sum_{k=1}^n K, \sum_{k=1}^n K^2 \quad \text{और} \quad \sum_{k=1}^n K^3$$

इकाई-3 निर्देशांक ज्यामिति

13 अंक

- सरल रेखा** : पिछली कक्षाओं से द्वि-आयामी संकल्पनाओं (2D) का दोहराना। एक रेखा की ढाल तथा दो रेखाओं के बीच का कोण। रेखा के समीकरण के विविध रूप : अक्षों के समान्तर, बिन्दु-ढाल रूप, ढाल

अन्तःखण्ड रूप, दो बिन्दु रूप, अन्तःखण्डरूप तथा लम्बरूप एक रेखा का व्यापक समीकरण। एक बिन्दु की एक रेखा से दूरी, दो समान्तर रेखाओं के बीच की दूरी।

2. **शंकु परिच्छेद** : वृत्त, दीर्घवृत्त, परवलय, अतिपरवलय एक बिन्दु, एक सरल रेखा तथा प्रतिच्छेदी रेखाओं का एक युग्म शंकु परिच्छेद के अपभ्रष्ट रूप में (केवल परिचय) वृत्त का मानक समीकरण। परवलय, दीर्घवृत्त तथा अतिपरवलय के मानक समीकरण तथा उनके सामान्य गुण।
3. **त्रिविमीय ज्यामिति का परिचय** : त्रिविमीय अंतरिक्ष में निर्देशांक तथा निर्देशांक तल, एक बिन्दु के निर्देशांक, दो बिन्दुओं के बीच की दूरी, और खण्ड सूत्र(विभाजन सूत्र)।

इकाई-4 कलन

06 अंक

1. सीमा तथा अवकलज :

अवकलन को दूरी के फलन के परिवर्तन की दर के रूप में परिभाषित करना। सीमा का सहजानुभूत बोध, बहुपदफलनों, परिमेय फलनों, त्रिकोणमितीय फलनों की सततता। अवकलज की परिभाषा तथा फलनों के योग, अन्तर, गुणन तथा भाग द्वारा बने फलनों का अवकलन करना। बहुपद फलनों तथा त्रिकोणमितीय फलनों का अवकलज ज्ञात करना।

इकाई-5 गणितीय विवेचन

03 अंक

गणित में मान्य कथन, संयोजक शब्द/वाक्यांश – यदि और केवल यदि (आवश्यक तथा पर्याप्त) प्रतिबन्ध अन्तर्भाव (impiles es), 'और' 'या' से अन्तर्निहित है (implied by) 'और' 'या' एक ऐसे का अस्तित्व है, की समझ को पक्का करना तथा उनका दैनिक जीवन तथा गणित से लिए उदाहरणों द्वारा तथा इनमें प्रयोग संयोजक शब्दों सहित कथनों की वैधता को सत्यापित करना। विरोध, विलोम तथा प्रतिधनात्मक के बीच अन्तर।

इकाई-6 सांख्यिकी तथा प्रायिकता

12 अंक

1. **सांख्यिकी** : प्रकीर्णन के माप, वर्गीकृत तथा अवर्गीकृत आँकड़ों के लिए माध्य विचलन, प्रसरण तथा मानक विचलन। उन बारम्बारता बंटनों का विश्लेषण जिनका माध्य समान लेकिन प्रसरण अलग-अलग है।
2. **प्रायिकता** : यादृच्छिक परीक्षण, परिणाम, प्रतिदर्श समष्टि (समुच्चय रूप में) घटनाओं का घटित होना, घटित न होना, दवज तथा (and) 'और' 'या' निःशेष घटनाएँ, परस्पर अपवर्जी घटनाएँ। प्रायिकता की अभिगृहीतीय दृष्टिकोण। पिछली कक्षा के प्रायिकता सिद्धान्तों से सम्बन्ध। एक घटना की प्रायिकता। 'not' 'and' & 'or' घटनाओं की प्रायिकता।

कक्षा-12

व्यावसायिक वर्ग

ट्रेड आशुलिपि एवं टंकण चतुर्थ एवं पंचम प्रश्नपत्र तथा ट्रेड टंकण हिन्दी एवं अंग्रेजी के चतुर्थ एवं पंचम प्रश्नपत्र के पाठ्यक्रम में से केवल सैद्धान्तिक प्रश्न ही पूछे जायं। टाइप मशीन का प्रयोग केवल प्रयोगात्मक परीक्षा में ही किया जायेगा।

कक्षा-12

हिन्दी

गद्य

- 1- अज्ञेय रचित "सन्नाटा" के स्थान पर पं०दीनदयाल उपाध्याय के "सिद्धान्त और नीति" से निम्नांकित सम्पादित अंश को सम्मिलित किया गया:-

प्रगति के मानदंड

जन्म लेने वाले प्रत्येक व्यक्ति के भरण-पोषण की, उसके शिक्षण की जिससे वह समाज के एक जिम्मेदार घटक के नाते अपना योगदान करते हुए अपने विकास में समर्थ हो सके, उसके लिए स्वस्थ एवं क्षमता की अवस्था में जीविकोपार्जन की, और यदि किसी भी कारण वह संभव न हो तो भरण-पोषण की तथा उचित अवकाश की व्यवस्था करने की जिम्मेदारी समाज की है। प्रत्येक सभ्य समाज इसका किसी न किसी रूप में निर्वाह करता है। प्रगति के यही मुख्य मानदण्ड हैं। अतः न्यूनतम जीवन-स्तर की गारंटी, शिक्षा, जीविकोपार्जन के लिए रोजगार, सामाजिक सुरक्षा और कल्याण को हमें मूलभूत अधिकार के रूप में स्वीकार करना होगा।

एकात्म मानववाद